●वर्ष : 16 ●अंक : 173 ●मूल्य : 02 रूपया मात्र पृष्ठ : 08 RNI No. DELHIN/2008/23928

दैनिक लोकतंत्र की शान

लोकतंत्र का स्तंभ

दिल्ली से प्रकाशित शुक्रवार 11 अक्टूबर 2024

Mfg & mkt by.. ANGEN PHARMACEUTICALS (OPC) PRIVATE LIMITED

Distributorship ke liye contact Karen .
(9315755133 / ya email Karen)
angenpharmaceuticals@gmail.com

भारत में इस्लामिक स्टेट कायम करने का सपना देखने वाले संगठन पर गृह मंत्रालय का सख्त एक्शन

हिज्ब-उत-तहरीर पर लगा बैन

नूना न्यूज एजेंसी

गृह मंत्रालय ने वैश्विक पैन-इस्लामिक कट्टरपंथी समूह हिज्ब-उत-तहरीर को 'प्रतिबंधित संगठन' घोषित करते हुए कहा कि इसका उद्देश्य जिहाद के माध्यम से लोकतांत्रिक सरकार को उखाड़ फेंककर भारत सहित विश्व स्तर

पर इस्लामिक राज्य और खिलाफत स्थापित करना है। गृह मंत्रालय ने भी HuT को भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था और आंतरिक सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा बताया। ऐसा तब हुआ जब तमिलनाडु हिज्ब-उत-तहरीर मामले के संबंध में कई व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया, जिसमें युवाओं को कट्टरपंथी बनाने और भारत में इस्लामी खिलाफत स्थापित करने के प्रयास शामिल थे। बुधवार को अधिकारियों के अनुसार, राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने एचयूटी संगठन के 'नकीब' या राज्य 'अमीर' फैजुल रहमान को गिरफ्तार किया। गिरफ्तार सदस्य कथित तौर पर संगठन के केंद्रीय मीडिया कार्यालय के आदेश पर गुप्त और एन्क्रिप्टेड संचार प्लेटफार्मों के माध्यम से अपने अनुयायियों के बीच एचयूटी की हिंसक विचारधारा फैला रहे थे। एनआईए के एक बयान में कहा गया, आरोपी ने कई समूहों के बीच हिज्ब-उत-तहरीर की विचारधारा को फैलाने के लिए कई गुप्त बैठकें की थीं और पूरे तमिलनाडु में विभाजनकारी अभियान चलाया था। एनआईए ने छह आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज किया था, जो कथित तौर पर चरमपंथी, कट्टरपंथी और मौलिक संगठन से प्रभावित थे जो इस्लामी खिलाफत स्थापित करने और इसके संस्थापक तकी अल-दीन अल-नभानी द्वारा लिखित संविधान को लागू करने की कोशिश कर रहे थे।

ज्वलंत मुद्दा

सम्पादकीय

तमाम दुष्प्रचार के बावजूद दलितों की पसंदीदा पार्टी कैसे बन गयी भाजपा?

कांग्रेस की ओर से भाजपा पर अक्सर आरक्षण को खत्म करने की साजिश रचने का आरोप लगाया जाता है। इसी आरोप की वजह से लोकसभा चुनावों में भाजपा को बड़ा नुकसान भी हुआ और वह अपने बलबूते स्पष्ट बहुमत हासिल करने से चूक गयी। लेकिन उसके बाद मोदी सरकार ने सबक लिया और एक भी ऐसा अवसर नहीं आने दिया जब दलितों के मन में अपने आरक्षण को लेकर कोई शंका हो पैदा हो। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणियों की वजह से एससी और एसटी वर्ग के मन में आशंकाएं पनपीं तो मोदी सरकार ने साफ कर दिया कि एससी और एसटी वर्ग के आरक्षण पर कोई आंच नहीं आने दी जायेगी। सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी से उपजे विवाद के बीच केंद्रीय मंत्रिमंडल ने स्पष्ट कर दिया कि डॉ. भीम राव आंबेडकर के बनाये संविधान में अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के आरक्षण में ह्यमलाईदार तबकेह्व के लिए कोई प्रावधान नहीं है। देखा जाये तो मोदी सरकार का यह स्पष्टीकरण आरक्षण के मुद्दे को लेकर समाज में भ्रम फैलाने वालों पर करारी चोट कर गया। इसके अलावा, इसी साल अगस्त में एक और अवसर आया जब दलितों के मन में आशंकाएं पनपाने का काम किया गया। दरअसल केंद्रीय सेवाओं में लेटरल एंट्री के मुद्दे को उठाते हुए विपक्ष ने कहा कि यह दलितों और पिछड़ों को आरक्षण से वंचित करने की साजिश है। विपक्ष के इस हमले पर तत्काल प्रतिक्रिया देते हुए प्रधानमंत्री ने लेटरल भर्ती विज्ञापन को रद्द करने के निर्देश दिये। केंद्र सरकार ने स्पष्ट कहा कि सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने के प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए, इस कदम की समीक्षा और इसमें सुधार किया जायेगा। सरकार ने साथ ही देश को यह भी बताया कि लेटरल एंट्री के जरिये नियुक्तियों की शुरूआत कांग्रेस ने ही की थी। यह विषय भी दलितों और पिछड़ों को आश्वस्त कर गया कि मोदी के रहते आरक्षण को कोई खतरा नहीं है। इसके अलावा, लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने आरक्षण के मुद्दे पर ऐसा बयान दे दिया जिससे कि भाजपा को कांग्रेस पर हमला करने का बड़ा मौका मिल गया। दरअसल विदेश दौरे के दौरान राहुल गांधी ने एक सवाल के जवाब में आरक्षण खत्म करने की बात कह दी। उनका यह बयान देखते ही देखते वायरल हो गया। कांग्रेस और राहुल गांधी तमाम सफाई और स्पष्टीकरण देते रहे लेकिन यह मुद्दा तूल पकड़ चुका था।

SYED ZAKI HAIDER
(EDITOR / PUBLISHER CUM MANAGING DIRECTOR OF NAI UMMEED NEWS AGENCY
MOBILE NO. 9911371802
EMAIL SYEDZAKIHAIDER786@GMAIL.COM

आवास विवाद पर आतिशी ने तोड़ी चुप्पी

›› कहा- हम बंगलों में रहने के लिए नहीं आये
›› सड़क पर बैठकर भी सरकार चलाएंगे

नूना न्यूज एजेंसी

दिल्ली। के मुख्यमंत्री आवास को लेकर विवाद जारी है। आवास को लेकर पीडब्ल्यूडी के साथ विवाद के बीच, आप ने गुरुवार को तस्वीरें साझा कीं, जिसमें दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी अपने सामान के भरे डिब्बों से घिरी हुई अपने कालकाजी आवास पर फाइलों पर हस्ताक्षर करती दिख रही हैं। यह दृश्य पार्टी द्वारा दावा किए जाने के एक दिन बाद सामने आया है कि आतिशी को राष्ट्रीय राजधानी में 6, फ्लैगस्टाफ रोड बंगले को जबरन खाली करने के लिए मजबूर किया गया था। इन

सबके बीच आतिशी ने पूरे विवाद को लेकर अपनी चुप्पी तोड़ी है। आतिशी ने आज मीडिया से कहा कि बीजेपी चिंतित है क्योंकि वह हमें चुनाव में नहीं हरा सकती। जब वह सरकार नहीं बना पाती तो ऑपरेशन लोटस शुरू करती है और फिर नेताओं को जेल में डाल देती है। भाजपा पर वार करते हुए उन्होंने कहा कि अब वे सीएम आवास पर कब्जा करने की सोच रहे हैं। आतिशी ने साफ तौर पर कहा कि हम बड़े बंगलों में रहने के लिए राजनीति में नहीं आये हैं। जरूरत पड़ी तो हम सड़क पर बैठकर भी सरकार चलाएंगे, हम दिल्ली की जनता के दिलों में रहते हैं। दरअसल, मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने के बाद अरविंद केजरीवाल ने यह आवास खाली कर दिया था। केजरीवाल ने मुख्यमंत्री आवास 4 अक्टूबर को खाली किया था। आतिशी इस आवास में 7 अक्टूबर को शिफ्ट हुई थीं। लेकिन 8 अक्टूबर को दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष विजेंद्र गुप्ता ने बड़ा आरोप लगा दिया। उन्होंने दावा किया कि लोक निर्माण विभाग द्वारा 6 अक्टूबर को मुख्यमंत्री कार्यालय के विशेष सचिव को पत्र लिखकर चाबी सौंपने का अनुरोध किया गया है। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि इसका मतलब है कि केजरीवाल ने अपना आवास खाली किया ही नहीं था। इसके बाद 9 अक्टूबर का दिन आता है। आतिशी के समान को घर से बाहर निकाल कर इसे पूरी तरीके से सील कर दिया जाता है। ऐसे में सवाल यह है कि क्यों मुख्यमंत्री आतिशी का सामान बाहर करके आवास को सील किया गया? दरअसल, आरोप है कि इस बंगले को विधिवत तरीके से पीडब्ल्यूडी डिपार्टमेंट को हैंडोवर नहीं किया गया। इतना ही नहीं, उससे पहले ही मुख्यमंत्री आतिशी का सामान इस बंगले में पहुंचा दिया गया। आरोप लग रहा है कि केजरीवाल के बंगला खाली करने के बाद यह आतिशी को अभी अलॉट भी नहीं किया गया था। आवास किसको अलॉट करना है, इसका अधिकार पीडब्ल्यूडी के पास होता है।

नम आंखों से दी जा रही रतन टाटा को अंतिम विदाई

एनसीपीए लॉन पहुंच अमित शाह ने दी श्रद्धांजलि

मुंबई। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने मुंबई में रतन टाटा को अंतिम श्रद्धांजलि दी। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और उपमुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस ने मुंबई में रतन टाटा को अंतिम श्रद्धांजलि दी। टाटा समूह के पूर्व अध्यक्ष टाटा, जिन्होंने एक प्रतिष्ठित समूह को भारत के सबसे बड़े और सबसे प्रभावशाली समूह में बदल दिया, ने बुधवार रात मुंबई में अंतिम सांस ली। शिवसेना (यूबीटी) नेता उद्धव ठाकरे के साथ अदतिया ठाकरे, अनिल देसाई और अरविंद सावंत ने मुंबई में रतन टाटा को अंतिम श्रद्धांजलि दी। आज एक कार्यक्रम में अमित शाह ने कहा कि श्री रतन टाटा का कल निधन हो गया। मैं उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। वह न केवल भारत बल्कि विश्व के प्रतिष्ठित उद्योगपति थे। उन्होंने ऐसे समय में टाटा समूह का नेतृत्व संभाला जब टाटा समूह के लिए बदलाव करना महत्वपूर्ण था। उन्होंने टाटा ग्रुप के काम करने के तरीके और कई व्यवसायों को बदल दिया। शाह ने कहा कि रतन टाटा जी के नेतृत्व में बिजनेस ग्रुप ने शिक्षा और कैंसर के इलाज सहित कई अन्य क्षेत्रों में बहुत काम किया। रतन टाटा की विरासत उद्योग जगत में लोगों का मार्गदर्शन करेगी। महान उद्योगपति रतन टाटा को यहां राष्ट्रीय प्रदर्शन कला केंद्र (एनसीपीए) में बृहस्पतिवार कोश्रद्धांजलि देने के लिए एकत्र हुए छात्रों और युवाओं के लिए, वह सिर्फ एक उद्योगपति ही नहीं थे बल्कि मानवीय मूल्यों के एक जीवंत प्रतीक और एक आदर्श व्यक्ति थे जो परोपकार और पशुओं के प्रति अपने प्रेम के लिए भी जाने जाते थे। महाराष्ट्र मंत्रिमंडल ने बृहस्पतिवार को एक प्रस्ताव पारित किया है जिसमें केंद्र सरकार से दिवंगत उद्योगपति रतन टाटा को देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किए जाने का अनुरोध किया गया है। मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की अध्यक्षता में हुई मंत्रिमंडल की बैठक में दिग्गज उद्योगपति को श्रद्धांजलि दी गई।

राहत : लोन महंगे नहीं होंगे ईएमआई भी नहीं बढ़ेगी

आरबीआई ने रेपो रेट 6.5 प्रतिशत पर बरकरार रखी, ब्याज दरों में लगातार 10वीं बार बदलाव नहीं

● नई दिल्ली

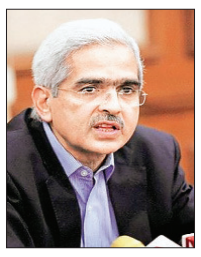

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने लगातार 10वीं बार ब्याज दरों में बदलाव नहीं किया है। आरबीआई ने ब्याज दरों को 6.5 प्रतिशत पर जस का तस रखा है। यानी लोन महंगे नहीं होंगे और आपकी ईएमआई भी नहीं बढ़ेगी। आरबीआई ने आखिरी बार फरवरी 2023 में दरें 0.25 प्रतिशत बढ़ाकर 6.5 प्रतिशत की थीं।

7 अक्टूबर से चल रही मॉनेटरी पॉलिसी कमेटी (एमपीसी) की मीटिंग में लिए गए फैसलों की जानकारी आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास ने आज, यानी बुधवार को दी। ये मीटिंग हर दो महीने में होती है। आरबीआई ने इससे पहले अगस्त में हुई बैठक में ब्याज दरों में बदलाव नहीं किया था। आरबीआई ने कोरोना के दौरान (27 मार्च 2020 से 9 अक्टूबर 2020) दो बार ब्याज दरों में 0.40 प्रतिशत की कटौती की। इसके बाद अगली 10 मीटिंग्स में सेंट्रल बैंक ने 5 बार ब्याज दरों में बढ़ोतरी की, चार बार कोई बदलाव नहीं किया और एक बार अगस्त 2022 में 0.50 प्रतिशत की कटौती की। कोविड से पहले 6 फरवरी 2020 को रेपो रेट 5.15 प्रतिशत पर था। जियोजित फाइनेंशियल सर्विसेज के चीफ इन्वेस्टमेंट स्ट्रैटजिस्ट डॉ. वीके विजय कुमार ने कहा कि भारत में मार्च 2025 तक 0.50 प्रतिशत की कटौती हो सकती है। आरबीआई ने 8 फरवरी 2023 के बाद से ब्याज दरों में कोई बदलाव नहीं किया है। (शेष पेज 5 पर)

महंगाई को 4 प्रतिशत पर लाने का लक्ष्य

महंगाई को लेकर आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास ने कहा कि खुदरा महंगाई के लक्ष्य 4 प्रतिशत पर बने हुए हैं। हालांकि, सितंबर महीने में महंगाई के आंकड़े बढ़े हुए लग सकते हैं। मौजूदा मैक्रो-इकोनॉमिक मापदंड संतुलित हैं। जीडीपी ग्रोथ को लेकर उन्होंने कहा कि कारोबारी साल 2025 के दौरान यह 7.2 प्रतिशत रह सकती है।

हरियाणा में तीनों निर्दलीय विधायकों का भाजपा को समर्थन

सोनीपत,
हरियाणा में बहुमत में आई भाजपा के सरकार बनाने से पहले ही सियासी खेल शुरू हो गया है। यहां चुनाव जीते तीनों निर्दलीय विधायकों ने समर्थन दे दिया है। पहले गन्नौर से देवेंद्र कादियान और बहादुरगढ़ से राजेश जून और फिर हिसार से सावित्री जिंदल इसके

इनमें देश की सबसे अमीर महिला भी शामिल, भाजपा के पास अब 51 एमएलए हुए

लिए दिल्ली पहुंची। जहां उनकी हरियाणा चुनाव प्रभारी धर्मेंद्र प्रधान, सहप्रभारी बिप्लब देब और प्रदेश अध्यक्ष मोहन बड़ौली से मुलाकात हुई। इनके समर्थन के बाद अब प्रदेश में भाजपा के पास सरकार के लिए विधायकों की संख्या 51 हो जाएगी।

भाजपा ने 48 सीटों पर चुनाव जीता है। कादियान और सावित्री जिंदल ने टिकट न मिलने पर भाजपा से बगावत की थी। वहीं राजेश जून ने कांग्रेस से टिकट न मिलने के बाद निर्दलीय चुनाव लड़ा था। सावित्री जिंदल देश की सबसे अमीर महिला हैं।

वन ग्राम निवासियों को मिलेगा वनोपज बेचने का अधिकार

मुख्यमंत्री ने श्योपुर के वीरपुर में संयुक्त वन प्रबंधन समितियों के प्रशिक्षण एवं जागरूकता सम्मेलन को संबोधित किया

वीरपुर में 57.42 करोड़ रुपए के विकास कार्यों का किया लोकार्पण एवं भूमिपूजन हुआ

● भोपाल

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि वनों के विकास के लिए जरूरी कदम उठाए गए हैं। वनों के अंदर जो निवास करते हैं, जो प्रकृति के साथ तालमेल करते हैं, उनकी सभी जरूरतें पूरी करेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में वन क्षेत्र निवासियों का चहुंमुखी विकास किया जा रहा है। वन ग्राम में वनोपज बेचने का अधिकार वन ग्राम निवासियों को दिया जाएगा।

राज्य में पेसा एक्ट का प्रभावी क्रियान्वयन किया जा रहा है। वनों के विकास के लिए राज्य सरकार सजग है। आज 57.20 करोड़ रुपए के विकास कार्यों का लोकार्पण और भूमिपूजन किया गया है। मुख्यमंत्री ने बुधवार को यह बात श्योपुर के वीरपुर में संयुक्त वन प्रबंधन समितियों के प्रशिक्षण और जागरुकता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कही। कार्यक्रम में वनाधिकार पट्टे भी वितरित किए गए।

चंबल नदी पर बनेगा पेंटुल पुल

मुख्यमंत्री ने कहा कि वीरपुर के क्षेत्रीय विकास के लिए कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी जाएगी। वीरपुर में नंदी गांव से गवघाट तक चंबल नदी पर पेंटुल पुल बनाया जाएगा। इससे राजस्थान की करौली माता और सवाई-माधोपुर तक आवागमन की सुविधा मिलेगी। उन्होंने शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए 80 लाख रुपए की लागत से वन समिति सदस्यों के 13 हजार 700 बच्चों को स्कूल बैग वितरित किए। इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीडी शर्मा, वन एवं पर्यावरण मंत्री रामनिवास रावत आदि मौजूद थे।

यूपीआई लाइट वॉलेट की लिमिट 5000 की

पहले यह 2000 थी, आरटीजीएस और एनईएफटी में लुकअप फैसिलिटी भी मिलेगी

● मुंबई

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) ने यूपीआई लाइट की पर ट्रांजेक्शन लिमिट को 500 से बढ़ाकर 1000 कर दिया है। इसके साथ ही आरबीआई ने यूपीआई लाइट वॉलेट की लिमिट को 2000 से बढ़ाकर 5000 कर दिया है। वहीं, फीचर फोन यूजर्स के लिए आरबीआई ने यूपीआई 123 की लिमिट को 5000 से बढ़ाकर 10,000 कर दिया गया है। आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास ने मॉनेटरी पॉलिसी कमेटी (एमपीसी) की मीटिंग में लिए फैसलों की जानकारी देते हुए यह ऐलान किया।

यूपीआई 123 की लिमिट को 5000 से बढ़ाकर 10,000 किया

गवर्नर शक्तिकांत दास ने कहा कि वर्तमान में यूनाइटेड पेमेंट इंटरफेस (यूपीआई) और इमेडिएट पेमेंट सर्विस (आईएमपीएस) में लुकअप फैसिलिटी मिलती है। लुकअप फैसिलिटी के जरिए पेमेंट करते समय रिसीवर का नाम और डिटेल दिख जाती है। इससे गलत व्यक्ति को पेमेंट होने की आशंका खत्म हो जाती है। अब यह फीचर रियल टाइम ग्रॉस सेटेलमेंट सिस्टम (आरटीजीएस) और नेशनल इलेक्ट्रॉनिक फंड ट्रांसफर (एनईएफटी) प्रणाली में भी लाने का प्रस्ताव है। शक्तिकांता दास ने कहा कि अब समय से पहले नॉन बिजनेस लोन चुकाने पर कोई चार्ज या पेनाल्टी नहीं लगेगी। दरअसल, कई लोन की अवधि पूरी होने से पहले अगर आप उसे बंद कराते हैं तो इसके लिए बैंक को जो चार्ज देना पड़ता है, इसे ही लोन फोरक्लोजर चार्ज कहते हैं।

सम्मान प्रोटीन का स्ट्रक्चर समझाने वाला एआई मॉडल बनाया, 190 देशों में हो रहा इस्तेमाल

केमिस्ट्री का नोबेल 2 अमेरिकी व एक ब्रिटिश को

● स्टॉकहोम

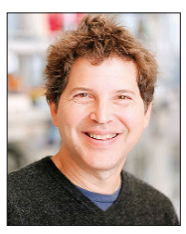

केमिस्ट्री के नोबेल प्राइज 2024 की घोषणा हो गई है। इस साल ये प्राइज 3 वैज्ञानिकों को मिला है। इनमें अमेरिकी वैज्ञानिक डेविड बेकर, जॉन जम्पर और ब्रिटिश वैज्ञानिक डेमिस हसाबिस शामिल हैं। प्राइज को दो हिस्सों में बांटा गया है। पहला हिस्सा डेविड बेकर को मिला है, जिन्होंने नई तरह के प्रोटीन का निर्माण किया।

प्रोटीन डिजाइन एक तकनीक है जिसमें प्रोटीन की संरचना में बदलाव कर नए गुण वाले प्रोटीन तैयार किए जाते हैं। इससे दवा और वैक्सीन बनाने में मदद मिलती है। वहीं, प्राइज का दूसरा हिस्सा डेमिस और जॉन जम्पर को मिला, जिन्होंने एक ऐसा एआई मॉडल बनाया, जिसने कॉम्प्लेक्स प्रोटीन के स्ट्रक्चर को समझने में मदद की। प्रोटीन मनुष्य के शरीर के लिए केमिकल टूल की तरह काम करता है। यह शरीर में होने वाले सभी केमिकल रिएक्शन्स को कंट्रोल करता है जो मानव जीवन का आधार होते हैं। प्रोटीन करीब 20 अलग-अलग अमीनो ऐसिड से बना होता है। 2003 में डेविड बेकर ने इन अमीनो एसिड का इस्तेमाल कर एक नए तरह का प्रोटीन बनाया। इसका इस्तेमाल कई वैक्सीन और दवाइयों में किया जाता है।

भारतीय मूल के वेंकटरमन को मिला था केमिस्ट्री नोबेल प्राइज

भारतीय मूल के सबसे प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों में से एक वेंकटरमन रामकृष्णन को 2009 मॉलिक्युलर बायोलॉजी के क्षेत्र में केमिस्ट्री का नोबेल पुरस्कार मिला था। उन्होंने साल 2000 में एक्स-रे क्रिस्टलोग्राफी नाम की एक विधि का उपयोग करके सैकड़ों हजारों परमाणुओं से बने राइबोसोम की संरचना को मैप किया था। इसके जरिए एंटीबायोटिक दवाइयां बनाने में काफी मदद मिली। किसी भी जीव के शरीर के सभी फंक्शन्स को बड़े और कॉम्प्लेक्स प्रोटीन मॉलिक्यूल्स मैनेज करते हैं। ये सेल के राइबोसोम में बनते हैं। इनकी जेनेटिक इन्फॉर्मेशन को आरएनए के जरिए एमीनो एसिड की चेन्स में ट्रांसलेट किया जाता है। यही फिर प्रोटीन बनाते हैं। इसी थ्योरी से, उन्होंने एक्स-रे क्रिस्टलोग्राफी के जरिए राइबोसोम का स्ट्रक्चर बनाया।

कांग्रेस जीत को हार में बदलना जानती है

शिवसेना (यूबीटी) ने अपने मुखपत्र सामना में महाराष्ट्र में अकेले चुनाव लड़ने की बात कही

● नई दिल्ली

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने जम्मू-कश्मीर और हरियाणा विधानसभा चुनाव के नतीजों पर बुधवार को प्रतिक्रिया दी।

राहुल बोले हरियाणा के नतीजे हैरान करने वाले

उन्होंने एक्स पर पोस्ट में कहा कि हरियाणा विधानसभा चुनाव के नतीजे हैरान करने वाले हैं। राहुल ने लिखा, हम हरियाणा के अप्रत्याशित नतीजे का विश्लेषण कर रहे हैं। कई विधानसभा क्षेत्रों से शिकायतों आ रही हैं। हम चुनाव आयोग को इससे अवगत कराएंगे। हम हक का, सामाजिक और आर्थिक न्याय का, सच्चाई का यह संघर्ष जारी रखेंगे। राहुल ने जम्मू-कश्मीर में इंडिया गठबंधन की जीत पर लोगों का आभार जताया। हरियाणा में भाजपा से हार पर इंडिया ब्लॉक के नेताओं ने कांग्रेस की नीति पर सवाल उठाए। शिवसेना (उद्धव गुट) ने अपने मुखपत्र सामना के संपादकीय में लिखा कि कांग्रेस जीत को हार में बदलना जानती है। टीएमसी नेता साकेत गोखले ने कांग्रेस का नाम लिए बिना कहा कि अहंकार और क्षेत्रीय दलों को हीन दृष्टि से देखना हार का कारण बना। शिवसेना ने सामना में लिखा, हरियाणा की हार से कांग्रेस को सीख लेने की जरूरत है। हरियाणा की हार कांग्रेस के ओवर कॉन्फिडेंस और राज्य के नेताओं के अहंकार का नतीजा है।

नेशनल कांफ्रेंस के उमर अब्दुल्ला बोले- कांग्रेस को गहराई से सोचने की जरूरत

नेशनल कॉन्फ्रेंस के उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला ने कहा कि कांग्रेस को हरियाणा में अपनी हार के कारणों का पता लगाने के लिए गहराई से सोचना होगा। मैंने पहले ही कहा था कि हम इन एग्जिट पोल्स पर भरोसा करके अपना समय बर्बाद कर रहे हैं। किसी ने नहीं सोचा होगा कि एग्जिट पोल इतने गलत होंगे। 30, 60 बन गए और 60, 30 बन गए।

आप के संयोजक केजरीवाल बोले, किसी चुनाव को हल्के में नहीं लेना चाहिए

आम आदमी पार्टी (आप) संयोजक अरविंद केजरीवाल ने मंगलवार को आप के नगर पार्षदों को संबोधित करते हुए कहा था- देखिए, हरियाणा में चुनाव के नतीजे क्या रहते हैं। सबसे बड़ा सबक यही है कि किसी को भी चुनाव में अति आत्मविश्वासी नहीं होना चाहिए। किसी चुनाव को हल्के में नहीं लेना चाहिए। हर चुनाव और हर सीट मुश्किल होती है।

जमात-ए-इस्लामी हिंद ने देश में मुसलमानों के खिलाफ बढ़ती हिंसा और मध्य पूर्व के हालात पर चिंता जताई

जमात-ए-इस्लामी हिंद के एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने जिला गिर सोमनाथ का दौरा किया

›› जमाअत-ए-इस्लामी हिंद ने टाटा संस के पूर्व चेयरमैन रतन नवल टाटा की मृत्यु पर गहरा शोक व्यक्त किया

अब्दुल हफीज

नई दिल्ली। जमात-ए-इस्लामी हिंद के अमीर सैयद सआदतुल्लाह हुसैनी ने जमात के ऑफिस में आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन में जम्मू, कश्मीर और हरियाणा में चुनाव परिणामों, हिंसा और मुसलमानों के पूजा स्थलों पर हो रही कार्रवाई , 'वन नेशन वन इलेक्शन' और मध्य पूर्व की स्थिति के बारे में विस्तार से बात करते हुए कहा कि 'जम्मू और कश्मीर और हरियाणा में बनी नई सरकार को लोगों की वास्तविक समस्याओं, आर्थिक विकास और जम्मू-कश्मीर के राज्य का दर्जा बहाल करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए और इसके लिए काम करना चाहिए' बिना किसी भेदभाव के सबका विकास और समृद्धि के लिए काम करना चहिए। उन्होंने कहा, 'इन दिनों मुसलमानों और उनके पूजा स्थलों के खिलाफ हिंसा और हमलों की घटनाएं तेजी से बढ़ रही हैं. मुस्लिम युवाओं पर झूठे आरोप लगाकर अत्याचार किया जा रहा है और उनके पूजा स्थलों को तोड़ा जा रहा है। हाल ही में गरसोमनाथ जिले में पांच सौ साल पुराने कब्रिस्तान, मस्जिद और दरगाहों को ध्वस्त कर दिया गया। सोमनाथ में ध्वस्त की कारवाई का जमीनी जायजा लेने वाले जमात के उच्च स्तर के वफ्द में शामिल नायब अमीर जमात-ए-इस्लामी हिंद सलीम इंजीनियर और राष्ट्रीय सचिव शफी मदनी भी कॉन्फ्रेंस में मौजूद रहे। इस अवसर पर सलीम इंजीनियर ने पत्रकारों के समक्ष सोमनाथ में अवैध विध्वंस का इतिहास प्रस्तुत किया और बताया कि किस प्रकार लगभग 200 एकड़ के विशाल क्षेत्र में फैली कई दरगाहों, मकबरों, मस्जिदों, ईदगाहों और कब्रिस्तानों को अवैध तरीकों से ध्वस्त कर दिया गया । उन्होंने ऐसी विध्वंस गतिविधियों पर सख्ती से रोक लगाने, ध्वस्त इमारतों और पूरे परिसर की धार्मिक स्थिति को बहाल करने और संबंधित अधिकारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की। जमाअत-ए-इस्लामी हिंद ने टाटा संस के पूर्व चेयरमैन रतन नवल टाटा की मृत्यु पर गहरा शोक व्यक्त किया । जमात ने कहा कि विगत दो-तीन दिनों में, त्रिपुरा से हिंसा की खबरें सामने आई हैं लेकिन मैनस्ट्रीम मीडिया में इसे ज्यादा कवरेज नहीं मिली। कदमतला, धर्मनगर और कलचेरा जैसे क्षेत्रों की हिंसा जिसमें कई मुस्लिम संपत्तियों और धार्मिक स्थलों को निशाना बनाया गया था, उसमें भीड़ हमले, तोड़फोड़ और आगजनी की घटनाएं शामिल थी। जमाअत-ए-इस्लामी हिंद ने स्वामी यति नरसिंह आनंद और रामगिरी महाराज द्वारा पैगंबर मुहम्मद (स.अ.व.) और उनके परिवार के खिलाफ की गई अत्यधिक ईशनिंदा वाली टिप्पणियों की कड़ी निंदा की। जमाअत-ए-इस्लामी हिंद ने केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा एक राष्ट्र, एक चुनाव प्रस्ताव पर पूर्व राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद के नेतृत्व वाली समिति की रिपोर्ट को औपचारिक मंजूरी देने पर गंभीर चिंता व्यक्त की है। जमाअत-ए-इस्लामी हिंद ने मध्य-पूर्व में बिगड़ती स्थिति पर अपनी गंभीर चिंता व्यक्त की है।जमात ने कहा कि इस संघर्ष से इजरायल और ईरान के बीच पूर्ण युद्ध में बदलने की संभावना है। हम सुरक्षा परिषद से आग्रह करते हैं कि वह एक गठबंधन सेना का गठन करे जिसका काम तत्काल युद्ध विराम लागू करना और इजरायल को निष्प्रभावी करना हो, इससे पहले कि वह विश्व को और अधिक नाजुक स्थान पहुंचाए। जमाअत -ए-इस्लामी हिंद भारत से, जिसका इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण हित है, अपील करती है कि वह अपनी चुप्पी तोड़े और उदारवादी अरब देशों के साथ मिलकर काम करे, ताकि तनाव को और बढ़ने से रोका जा सके और क्षेत्रीय शांति एवं स्थिरता का मार्ग प्रशस्त हो सके।

नैशनल स्किल डिवैल्पमैंट कॉपोर्रेशन ने 29 हजार से अधिक युवाओं को किया प्रशिक्षित

कम आय वाले परिवारों के युवाओं को रोजगार के अवसर देने की अनूठी पहल

नई दिल्ली, अक्तूबर : नैशनल स्किल डिवैल्पमैंट कॉपोर्रेशन (एनएसडीसी) द्वारा 2021 में लॉन्च किए गए स्किल इम्पैक्ट बॉण्ड ने 24 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के 18 क्षेत्रों में कम आय वाले परिवारों के पहली बार नौकरी चाहने वाले 29 हजार से अधिक युवकों को सफलतापूर्वक प्रशिक्षित किया है। इनमें से 73 प्रतिशत युवक आज भी कार्यरत हैं। इस पहल का उद्देश्य कौशल और रोजगार के बीच की खाई को पाटकर 50 हजार युवा भारतीयों को तैयार करना है, जिनमें महिलाओं की पहुँच 60 प्रतिशत है। स्किल इम्पैक्ट बॉण्ड की एक प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें महिलाओं को भी बराबर अवसर दिए जाते हैं। प्रशिक्षुओं में कम आय वाली पृष्ठभूमि की 74 प्रतिशत महिलाएं हैं, जिनमें से कई ऐसी हैं जिन्होंने सीमित शिक्षा हासिल की है और जिन्हें कोई पूर्व कार्य अनुभव भी नहीं है। कार्यक्रम ने इन महिलाओं को कार्यबल में सफलतापूर्वक शामिल किया है और इन्हें बनाए रखा है। अपने संबोधन के दौरान, कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय के सचिव, अतुल कुमार तिवारी ने कहा कि कौशल विकास 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को हासिल करने की कुंजी है। स्किल इम्पैक्ट बॉण्ड इसी दिशा में एक अभूतपूर्व पहल है, जिसमें स्थायी परिवर्तन लाने के लिए सार्वजनिक-निजी सहयोग का उपयोग किया जाता है। स्किल इम्पैक्ट बॉण्ड 2.0 के साथ, हमारा लक्ष्य उच्च लक्ष्य निर्धारित करना, कठोर मूल्यांकन मानकों को अपनाना और उद्योग 4.0 टैक्नोलॉजी द्वारा संचालित क्षेत्रों में एक समावेशी, भविष्य के लिए तैयार कार्यबल बनाने पर ध्यान केंद्रित करना है।

लव कुश रामलीला मंच पर 200 फुट हाईट पर हवा में गणेश जी कमल के फूल पर

आकाश मार्ग में 200 फुट उंचाई से उडते हुए हनुमान जी लाये संजीवनी बूटी

नई दिल्ली। लालकिला मैदान में आयोजित ख्याति प्राप्त लव कुश रामलीला कमेटी के अध्यक्ष अर्जुन कुमार ने बताया आज श्री हरदीप सिंह पुरी, पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री, भारत सरकार ने लीला स्थल पर प्रभु श्री राम की लीला का अवलोकन किया तथा प्रभु श्री रामचन्द्र जी का तिलक कर वंदना की और आशीर्वाद लिया, इस अवसर पर सभी राम भक्तों एवं लीला कमेटियों को दशहरा पर्व की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी। लीला के अध्यक्ष अर्जुन कुमार के अनुसार आज गणेश वंदना से लीला का प्रारंभ हुआ, अशोक वाटिका में सीताजी द्वारा हनुमान जी को चूडामणि देकर विदा करना, राम शिविर में हनुमान का आगमन व सीता जी का समाचार देना, रावण दरबार में विभीषण को अपमानित कर निकलना, राम शिविर में विभीषण का स्वागत व राम सेतू निर्माण हेतु शिवलिंग की स्थापना, समुन्द्र तट पर समुन्द्र द्वारा रास्ता न देने पर राम का क्रोध, नल-नील द्वारा सेतू निर्माण, अंगद को शांति दूत बनाकर भेजना, ना मानने पर युद्ध, लक्ष्मण मेघनाद युद्ध व लक्ष्मण मूर्छा, राम विलाप, कालनेमि वध, हनुमान जी द्वारा संजीवनी बूटी लाना तक की लीला का मंचन हुआ। आप नेता बृजेश गोयल ने आज लीला में रावण पुत्र मेघनाद के किरदार को अपनी ओजस्वी आवाज, दमदार अभिनय से ऐसे अनूठे अंदाज मेंप्र किरदार प्रस्तुत किया कि लीलास्थल पर मौजूद रामभक्तों ने जमकर तालिया बजाई वहीं वैघ सुसेन बने अपोलों हॉस्पीटल के सीनियर डा. अशोक शर्मा ने अपने शानदार अभिनय से वैघ सुसेन किरदार को जीवंत कर दिखाया। राजधानी के जाने माने युवा औदार्य गुप्ता ने लव कुश मंच पर समुद्र देव का बेहतरीन अभिनय कर सभी को आश्चर्य चकित कर दिया। बालिवुड के नामी कलाकार कशिका कपूर, अनुज सैनी और प्रवीण दीक्षित के साथ फिल्म आयुष्मति गीता मेट्रिक पास के डायरेक्टर प्रदीप खेरवार आदि ने लीला पश्चात प्रभु श्री राम की चरण वंदना के साथ आरती की । लीला पश्चात कमेटी के महासचिव सुभाष गोयल, चैयरमैन पवन गुप्ता, वरिष्ठ उपाध्यक्ष सत्यभूषण जैन, सौरव गुप्ता, संदीप भूटानी, कोषाध्यक्ष अंकुर गोयल, लीला मंत्री प्रवीण सिंहल आदि सभी पदाधिकारियों ने आये हुए सभी अतिथियों का सम्मान किया और प्रभु श्रीराम की आरती एवं चरण वंदना के साथ लीला सम्पन्न हुई ।

चिकित्सा लागत में वृद्धि व व्यापक स्वास्थ्य कवरेज की आवश्यकता पर जोर

नई दिल्ली, अक्तूबर : भारत की प्रमुख जनरल इंश्योरैंस कंपनियों में से एक, एसबीआई जनरल इंश्योरैंस ने अपनी नई पॉलिसी एसबीआईजी हैल्थ सुपर टॉप-अपह्न लॉन्च करने की घोषणा की है। यह हैल्थ बीमा टॉप-अप योजना, मौजूदा स्वास्थ्य बीमा पॉलिसी के साथ एक किफायती विकल्प के रूप में विकसित की गई है। यह प्रॉडक्ट बीमा चाहने वालों को अपनी पहले से मौजूद स्वास्थ्य बीमा योजना को बढ़ाने की सुविधा प्रदान करता है, चाहे वह कॉर्पोरेट हो या व्यक्तिगत। एसबीआई जनरल इंश्योरेंस के चीफ प्रॉडक्ट और मार्कीटिंग ऑफिसर, सुब्रमण्यम ब्रह्मजोसुला ने बताया कि चिकित्सा उपचारों की बढ़ती लागत और जीवनशैली से संबंधित बीमारियों के बढ़ते प्रचलन के कारण व्यापक स्वास्थ्य कवरेज अब केवल एक विलासिता नहीं बल्कि एक आवश्यकता बन गई है। एसबीआईजी हैल्थ सुपर टॉप-अप पॉलिसी उन ग्राहकों के लिए है जो उचित प्रीमियम दर पर अपनी मौजूदा बीमा योजना को टॉप-अप करना चाहते हैं। यह पॉलिसी व्यक्तियों और परिवारों की विभिन्न आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए तैयार की गई है।

प्रमुख एथलीटों और विशेषज्ञों ने खेल इंफ्रास्ट्रक्चर और तकनीक पर दी अहम राय

आईएमगेम कॉन्क्लेव 2024: खेलों में सकारात्मक बदलाव के लिए मंच बना प्रेरणा स्रोत

भारतीय खेलों की चुनौतियों पर हुआ व्यापक विमर्श

नई दिल्ली, अक्तूबर : आईएमगेम कॉन्क्लेव 2024 में सफलतापूर्वक अग्रणी लोगों, एथलीट्स और उद्योग जगत के विशेषज्ञों ने हिस्सा लिया। दो दिवसीय आयोजन के दौरान भारतीय खेलों के समक्ष आने वाली प्रमुख चुनौतियों पर प्रभावी विमर्श हुआ। कॉन्क्लेव 2024 प्रमुख नेताओं, एथलीटों और उद्योग विशेषज्ञों को सफलतापूर्वक एक साथ लाया, जिसका उद्घाटन खो-खो महासंघ के अध्यक्ष श्री सुधांशु मित्तल ने किया। साथ ही कार्यक्रम में जसपाल राणा, हरमनप्रीत सिंह, रंजन सोढ़ी, उदित शेठ, निखत जरीन, नम्रता पारेख, अपर्णा पोपट और रथींद्र बसु जैसे प्रमुख वक्ताओं ने भारतीय खेलों के विकास और वैश्विक क्षमता पर बहुमूल्य अंतर्दृष्टि साझा की। संस्थापक करण छेत्री और सह-संस्थापकों समित गर्ग, पूनम लाल एवं मनदीप मल्होत्रा के नेतृत्व में आयोजित कॉन्क्लेव के माध्यम से भारतीय खेल व्यवस्था के समक्ष आने वाली सर्वाधिक गंभीर चुनौतियों और अवसरों पर चर्चा की गई। इसमें इन्फ्रास्ट्रक्चर का विकास और एथलीट्स को बढ़ावा देने जैसी चुनौतियां शामिल हैं। टेक्नोलॉजी के बढ़ते प्रभाव और समावेश एवं विविधता की महत्वपूर्ण भूमिका पर भी चर्चा की गई। कार्यक्रम को संबोधित करने वालों में हरमनप्रीत सिंह, रंजन सोढ़ी, उदित सेठ, निखत जरीन, नम्रता पारेख, अपर्णा पोपट और रथिंद्रा बसु जैसे एथलीट्स एवं उद्योग जगत के अग्रणी लोग शामिल रहे।

चुनौतियों पर विचार-विमर्श करते हुए प्रमुख एथलीट्स और उद्योग विशेषज्ञ। (जगजीत सिंह)

वैद्यराज पं. रामनारायण शर्मा का 125वां जन्मदिवस समारोह भव्यता के साथ मनाया गया

झांसी, अक्तूबर : वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन प्राग्लि. के संस्थापक वैद्यराज पं. रामनारायण शर्मा का 125वां जन्मदिवस समारोह प्रतिष्ठान के गुसाईपुरा कार्यालय के सभागार में उत्साह के साथ भव्यता से मनाया गया। इस अवसर पर उनके चित्र पर वैद्यजी के पौत्र अतुल शर्मा सहित सभी आगन्तुकों ने पुष्पांजलि अर्पित की। आज के कार्यक्रम में कंपनी क जॉइंट मैनेजिंग डायरैक्टर अनुराग शर्मा ने बताया कि वैद्य जी ने अपनी शिक्षा के बाद आयुर्वेद के विस्तार में भी कड़ी मेहनत की। वे बैद्यनाथ कंपनी के कारण प्रसिद्ध हैं जो अच्छी गुणवत्ता वाले उत्पादों के निर्माण के लिए काम कर रही है। उन्होंने हमें बताया कि वैद्य जी ने उस समय आयुर्वेदिक दवाए तैयार कीं जब सभी को आयुर्वेद और दवाओं के बारे में जयादा जानकारी नहीं थी। इस अवसरपर वैद्यजी के पौत्र अतुल शमार्जी ने वैद्यराज पं. रामनारायण शर्मा के जीवन के बारे में बताया व उनके द्वारा किए गए योगदान के सम्बन्ध में विस्तार से जानकारी दी। वही उन्होंने कर्मचारियों से उनके बताए गए मार्ग पर चलने का आह्वान किया।

शीश महल में दबे सबूतों और बिना आवंटन आतिशी के जबरन प्रवेश के कारण शीश महल को पीडब्ल्यूडी द्वारा डबल लॉक के साथ सील करना प्रशासनिक कार्रवाई है : देवेन्द्र यादव

नई दिल्ली, अक्तूबर : दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने अरविन्द केजरीवाल के 6 फ्लैग स्टॉफ रोड स्थित शीश महल को प्रशासनिक प्रक्रियाओं के तहत छोड़ने के बाद मुख्यमंत्री आतिशी द्वारा जबरन शीशमहल पर कब्जा करना और आम आदमी पार्टी के नेताओं के बयानों साफ है कि शीश महल में छिपे शराब घोटाले, शीश महल में अवैध निर्माण, पेड़ कटाई, स्वाति मालीवाल और पूर्व मुख्य सचिव से मारपीट जैसे संवेदनशील मामलों के कई राज छिपे है, जिसकी पुष्टि सतर्कता विभाग द्वारा अधिकारियों को नोटिस देकर उनसे जवाब मांगने पर स्पष्ट दिखाई देती है। पीडब्लूडी द्वारा शीशमहल को सील करना प्रशासनिक कार्रवाई है। देवेन्द्र यादव ने कहा कि नियमानुसार अगर 6 फ्लैग स्टॉफ रोड़, सरकारी भवन यदि मुख्यमंत्री आतिशी को ही देना है तो आम आदमी पार्टी के नेता, मंत्री और मुख्यमंत्री सरकारी प्रक्रिया का इंतजार क्यों नही कर सकते थे? क्यों 7 अक्टूबर को बिना आवंटन के आतशी ने जबरन कब्जा करके अपना सामान रखकर अपनी निरंकुशता का परिचय दिया। क्या संवैधानिक पद पर आसीन आतिशी यह करना उचित था। जबकि अरविन्द केजरीवाल, संजय सिंह, आतिशी प्रशासनिक प्रक्रियाओं का इंतजार करना चाहिए था क्योंकि सरकारी बंगला के आवंटन में कुछ प्रशासनिक कार्यवाही होनी जरूरी होती है। देवेन्द्र यादव ने मांग की कि यदि वास्तव में शीश महल में शराब घोटाले के आरोपी केजरीवाल के संबंध में कोई राज छिपे है और स्वाति मालीवाल और पूर्व मुख्य सचिव से मारपीट जैसे संदिग्ध मामलों के सबूत है तो उपराज्यपाल हस्तक्षेप करके सीबीआई द्वारा शीश महल को सील करने की कार्यवाही को आदेश दे सकते है, अब शीश महल के सील होने के बाद अगर कुछ गलत है वह सबके सामने आएगा।

त्यौहारी भावना के साथ क्षेत्रीय रोजगार

नई दिल्ली, अक्तूबर : किसना डायमंड एंड गोल्ड ज्वेलरी ने दिल्ली एनसीआर के वेगास मॉल, द्वारका में अपने 9वें एक्सक्लूसिव शो रूम का भव्य उद्घाटन किया। इसका प्रमुख उद्देश्य स्थानीय संस्कृति को बढ़ावा देना है। इसके अलावा इससे क्षेत्रीय स्तर पर रोजगार के अवसर भी उपलब्ध होंगे। यह किसना का देश भर में 44वां एक्सक्लूसिव शोरूम है। यह स्वरोजगार के क्षेत्र में एक अच्छा उदाहरण है।

नए मोबाइल के लिए पिता ने पैसे नहीं दिए, झगड़े के बाद 20 साल के युवक ने फंदा लगाया

हसबंसपुरा कालोनी में मोबाइल के लिए रुपए न देने पर 20 साल के अभिषेक ने परिवार से नाराज होकर फंदा लगा लिया। पुलिस के अनुसार युवक नया मोबाइल खरीदने के लिए पैसे मांग रहा था, लेकिन उसके पिता ने इन्कार कर दिया। इस बात को लेकर उसका झगड़ा हुआ। गुस्से में वह कमरे में चला गया। जब वह काफी देर तक बाहर नहीं आया तो परिजनों ने दरवाजा खटखटाया। अंदर से कोई जवाब नहीं आया तो खिड़की से झांककर देखा। अभिषेक फंदे पर लटका हुआ था। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और घटनास्थल का जायजा लिया। पुलिस ने शव को नीचे उतरवाया। गांधी नगर थाना प्रभारी महरूफ अली ने बताया कि मृतक के स्वजन ने किसी पर कोई आरोप नहीं लगाया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

भारतीय कॉरपोरेट जगत के सौम्य सम्राट थे रतन टाटा : रमेश

दिल्ली। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने विख्यात उद्योगपति रतन टाटा के निधन पर बृहस्पतिवार को दुख जताया और कहा कि वह भारत के कॉरपोरेट जगत के सौम्य सम्राट थे। दिग्गज उद्योगपति रतन टाटा का बुधवार देर रात मुंबई के एक अस्पताल में निधन हो गया। टाटा समूह के मानद चेयरमैन की आयु 86 वर्ष थी। रमेश ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर पोस्ट किया, चार दशकों तक, रतन टाटा भारत के कॉरपोरेट जगत के सौम्य सम्राट थे, जिन्होंने टाटा समूह को 1991 के बाद के भारत के लिए तैयार किया। यह आसान नहीं था क्योंकि जब वह जेआरडी टाटा के उत्तराधिकारी बने तो वह स्वयं किंवदंतियों से घिरे हुए थे, लेकिन वह अपनी दूरदर्शिता, संकल्प और धैर्य से विजयी हुए। उन्होंने कहा कि उनकी वैश्विक प्रतिष्ठा शानदार थी और वह वास्तव में कारोबार जगत के एक अगुवा से कहीं अधिक थे। पूर्व केन्द्रीय मंत्री रमेश ने कहा, मैं रतन टाटा से पहली बार सितंबर 1985 में मिला था, जब मैं उद्योग मंत्रालय में था और वह टाटा समूह के लिए 20 साल की रणनीतिक योजना पेश करने के लिए एक टीम के साथ आए थे। इसके बाद मैं समय-समय पर उनके संपर्क में रहा। उन्होंने कहा, वह हमेशा भारत के आर्थिक इतिहास में एक बहुत सम्मानित और प्रतिष्ठित नाम बने रहेंगे, खासकर उन मूल्यों के लिए, जिनका उन्होंने उदाहरण पेश किया और समर्थन किया।

दिल्ली की अदालत ने वीवो से जुड़े धन शोधन मामले में सीए को जमानत दी

दिल्ली। की एक अदालत ने चीनी मोबाइल फोन कंपनी वीवो से जुड़े धन शोधन मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा गिरफ्तार एक चार्टर्ड अकाउंटेंट (सीए) को बुधवार को जमानत दे दी।अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश किरण गुप्ता ने राजन मलिक को जमानत दे दी, जिसे अक्टूबर 2023 में गिरफ्तार किया गया था। न्यायाधीश ने मलिक के वकील हेमंत शाह की दलील को स्वीकार कर लिया कि उनके मुवक्किल की हिरासत को बढ़ाने से कोई उद्देश्य पूरा नहीं होगा। ईडी ने चीनी नागरिकों और कई भारतीय कंपनियों से जुड़े एक बड़े धन शोधन रैकेट का भंडाफोड़ करने का दावा किया था। ईडी ने आरोप लगाया था कि भारत में कर चोरी करने के लिए वीवो ने 62,476 करोड़ रुपये अवैध रूप से चीन भेजे थे।

भारतीय प्रदूषण नियंत्रण संघ (आईपीसीए) ने आज प्लास्टिक के लिए जिम्मेदार दृष्टिकोण विकसित करने (डीआरओपी) पहल के तहत गुरुग्राम के भोंडसी में मैटेरियल रिकवरी फैसिलिटी (एमआरएफ) की स्थापना की। एमआरएफ का उद्घाटन पुडुचेरी की पूर्व उपराज्यपाल डॉ. किरण बेदी, आईपीएस (सेवानिवृत्त) ने किया, जो मुख्यातिथि थीं। (सईद अहमद)

दिल्ली की जनता 10 साल की बर्बादी की सजा देने का मन बना चुकी : वीरेन्द्र सचदेवा

आप व कांग्रेस गठबंधन करें या न करें इससे कोई फर्क नहीं पड़ने वाला

नई दिल्ली, अक्तूबर : दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा कि आम आदमी पार्टी एवं कांग्रेस पर आप नेताओं संजय सिंह एवं प्रियंका कक्कड़ की आज की ब्यानबाजी अरविंद केजरीवाल की सोची समझी स्ट्रेटेजी है। हरियाणा की शर्मनाक हार के बाद केजरीवाल जानते हैं उनकी पार्टी कार्यकर्त्ताओं से लेकर मीडिया तक सब उनसे उनकी पार्टी से सवाल पूछना चाहते हैं ऐसे में केजरीवाल ने शर्मनाक हार पर लोगों एवं मीडिया के बीच सम्भावित चर्चा को दबाने के लिए खुद अपने नेताओं से ही गठबंधन पर ब्यानबाजी करवा डाली। वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा कि दिल्ली की जनता अरविंद केजरीवाल को दस साल में दिल्ली की बर्बादी की सजा देने का मन बना चुकी है और अब आप एवं कांग्रेस गठबंधन करें या ना करें इससे कोई फर्क नहीं पड़ने वाला। दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि लोकसभा चुनाव से पहले भी दिल्ली में कांग्रेस और आप ने गठबंधन किया था पर पर दोनों दलों को कोई लाभ पहुंचा। हाल ही में हरियाणा में सम्पन्न चुनाव में भी दिखा की आप का वहां राजनीतिक वजूद शून्य है और इसी तरह दिल्ली में कांग्रेस का कोई राजनीतिक वजूद नहीं। शायद इसीलिए दिल्ली वालों अब केजरीवाल को दिल्ली की सत्ता से बाहर करने का मन बना लिया है।

अलग-अलग घटनाओं में एक महिला एवं एक युवती घायल

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। गुरुवार को क्षेत्र में अलग-अलग दो स्थानों पर मारपीट के मामले में युवती एवं महिला घायल हो गईं वहीं पुलिस ने घायलों को मेडिकल के लिए भेज दिया और पुलिस अग्रिम कार्रवाई में जुटी हुई है। गुरुवार को नगर के मौहल्ला शेखुपुरा निवासी मोहम्मद सफी के दबंग पड़ोसी ने विद्युत मीटर को उखाड़ दिया, पड़ोसी ने इसका कारण पूछा तो दबंग ने पीड़ित के घर में घुसकर अपने अन्य साथियों के साथ जमकर मारपीट की,जिसमें मोहम्मद शफी की पत्नी सहाना घायल हो गई। वहीं दूसरी तरफ कोतवाली क्षेत्र के गांव सिकरौली मिलक निवासी प्रेम की पुत्री लता का आरोप है कि गांव के ही एक युवक द्वारा उनके घर से मोबाइल चोरी कर लिए थे। जिसके बाद पीड़ित की पुत्री ने युवक को अपने घर आने से साफ मना कर दिया। वहीं सुबह होने पर लता खेत पर चारा लेने के लिए जा रही थी। इस दौरान दबंग युवक ने गाली गलौज करते हुए लता के साथ मारपीट शुरू कर दी जिसमें वह घायल हो गई,

तथा घायल किशोरी परिजनों के साथ कोतवाली पहुंच गई और आरोपी युवक के खिलाफ चेहरे देखकर कार्रवाई की मांग की है,मारपीट के दोनों मामलों में पुलिस को तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की। फिलहाल दोनों घायल युवती एवं महिला को पुलिस ने मेडिकल परीक्षण के लिए भेज दिया। वहीं मामले में अपराध निरीक्षक बालेंद्र सिंह का कहना है कि फिलहाल मामले की जांच पड़ताल कराई जा रही है जांच पड़ताल एवं तहरीर के आधार पर मामले में अग्रिम कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

नारी शक्ति संगठन ने नवरात्रि पर बच्चों को वितरित की पाठ्य सामग्री

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। गुरुवार को नगर की समाजसेवी संस्था नारी शक्ति संगठन हसनपुर द्वारा नवरात्रि के पावन पर्व पर नगर के समीप स्थित शाहपुर कला गांव में सिद्ध पीठ मां कालका देवी के मंदिर पर नवरात्रि उत्सव मनाया जिसमें नारी शक्ति संगठन की सभी महिलाएं मौजूद रही, नारी शक्ति संगठन की महिलाओं ने देवी मां के सुंदर-सुंदर भजन गाए एवं डांडिया नृत्य भी किया, साथ ही कार्यक्रम से संबंधित गेम भी खेले गए जिसमें अंजना अग्रवाल, जया सिरोही तथा मनीष अग्रवाल विजेता रही, वही नारी शक्ति संगठन की ओर से दर्जनों बच्चों को पाठ्य सामग्री वितरित की गई, इस मौके पर मुख्य रूप से नारी शक्ति संगठन हसनपुर की अध्यक्षा सीमा अग्रवाल, महामंत्री अंशु अग्रवाल, अमिता अग्रवाल, रितु अग्रवाल, विनीता अग्रवाल, डोली अग्रवाल, पूनम अग्रवाल, उमा अग्रवाल, निर्मला अग्रवाल आदि दर्जनों नारी शक्ति संगठन की महिलाएं मौजूद रही।

राष्ट्रीय गौरक्षा वाहिनी गौसेवा संघ मुस्लिम प्रकोष्ठ के अमरोहा जिले के जिला सचिव बने जुबैर चौधरी

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। गुरुवार को अमरोहा जिले के राष्ट्रीय गौ रक्षा वाहिनी गौ सेवा संघ के द्वारा मुस्लिम प्रकोष्ठ के सचिव पद की घोषणा की गई बताते चले की राष्ट्रीय गौ रक्षा वाहिनी गौ सेवा संघ के विस्तार कार्यक्रम के तहत को संघ के राष्ट्रीय संरक्षक डॉ इंद्रेश कुमार एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष संजीव सिंह सेंगर व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रिंस जैन तथा अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय अध्यक्ष इकबाल त्यागी की संस्तुति पर अमरोहा जिले के हसनपुर तहसील के कस्बा उझारी निवासी युवा समाजसेवी जुबैर चौधरी को अमरोहा जिले के राष्ट्रीय गौ रक्षा वाहिनी गौ सेवा संघ मुस्लिम प्रकोष्ठ का जिला सचिव मनोनीत किया गया है इस संबंध में नव मनोनीत जिला सचिव जुबेर चौधरी ने बताया कि उनको दी गई जिम्मेदारी को वह निष्ठा पूर्वक निभाएंगे तथा गौ सेवा के कार्य को गतिशील करने में अपना पूरा सहयोग करेंगे तथा क्षेत्र में कहीं भी गौ हत्या एवं गो तस्करी को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा उन्होंने कहा कि संगठन के आदेश पर जल्द ही वह अपनी

कमेटी का गठन कर संगठन को अवगत कराएंगे तथा संगठन की उम्मीद पर खरा उतरेंगे, वहीं जिला सचिव मनोनीत होने पर समर्थकों ने उनके आवास पर पहुंचकर उनका फूल माला पहनकर एवं मिठाई खिलाकर स्वागत किया।

नवरात्रि पर आठवें दिन हुई माता महागौरी की पूजा, भारी भीड़ उमड़ी

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। गुरुवार को नवरात्रि के पावन पर्व पर नगर के प्रसिद्ध प्राचीन सिद्ध पीठ मां चामुंडा मंदिर पर नवरात्रि के आठवें दिन मां महागौरी की विधि विधान से पूजा अर्चना की गई। और माता से सुख शांति एवं वैभव की कामना की गई है। गुरुवार को नवरात्रि के आठवें दिन नगर के प्राचीन मां चामुंडा मंदिर पर माता महागौरी की विधि विधान से पूजा अर्चना की गई। और श्रद्धालुओं द्वारा माता महागौरी से घर में सुख शांति धन वैभव समेत अमन चैन की कामना की गई है। बात तो चले की नवरात्रि के पावन पर्व पर नगर के चामुंडा मंदिर सहित आसपास के देहात क्षेत्र के भी मंदिरों में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ रही, वही महिलाओं ने तथा पुरुषों ने मंदिरों के साथ-साथ अपने घर में भी विधि विधान के साथ माता महागौरी की पूजा की, वहीं शिवसेना जिला प्रमुख वेद प्रकाश यादव ने बताया कि सप्तमी एवं अष्टमी एक ही दिन का नवरात्र होने के कारण अष्टमी एवं नवमी एक ही दिन मनाई जाएगी। और विधि विधान से माता रानी की पूजा अर्चना करते हुए कन्याओं को प्रसाद का भोग लगाकर व्रत संपन्न किया जाएगा। उन्होंने कहा कि माता महागौरी की पूजा अर्चना करने से जहां धन वैभव एवं सुख समृद्धि की प्राप्ति होती है। तो वहीं जीवन में कष्टों का निवारण होता है। इस दौरान मौके पर भारी संख्या में भक्तगण मौजूद रहे। जिसमें शिवसेना के जिला अध्यक्ष वेद प्रकाश यादव, गीता यादव, दीपक अग्रवाल, पंडित सोनी शर्मा आदि सहित भारी संख्या में भक्तगण मौजूद रहे।

बंदरों को पकड़वाने को लेकर एसडीएम कार्यालय पर किया प्रदर्शन

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। गुरुवार को नगर बंदरों के आतंक से निजात दिलाने के लिए तथा अपंजीकृत वाहनों को बंद कराने के लिए राष्ट्रीय सेवी संगठन के कार्यकताओं ने एसडीम ऑफिस के बाहर प्रदर्शन किया तथा ज्ञापन सौंपा, गुरुवार को दर्जनों की संख्या में एकत्र होकर राष्ट्रीय सेवी संगठन के कार्यकताओं ने एसडीएम कार्यालय पर पहुंच कर नगर में बंदरों के भारी आतंक से निजात दिलाने के लिए बंदरों को पड़कर अन्य स्थान पर छोड़े जाने की मांग की, इसके संबंध में एक ज्ञापन उप जिला अधिकारी सुनीता कुमारी को दिया, ज्ञापन में मांग करते हुए कहा है कि नगर में बंदरों का आतंक बढ़ गया है, दिन हो या रात किसी भी तरफ से गुजर जाओ बंदर ही बंदर दिखाई पड़ते हैं और बंदरों के कारण आए दिन कोई न कोई घायल होता रहता है, स्कूल जाने वाले बच्चों तथा रोजमर्रा का सामान लेने बाजार जाने वाले लोगों को आए दिन बंदर काट कर घायल कर देते हैं अतः बंदरों को पड़कर अन्य स्थान पर छुड़वाया जाना जनहित में आवश्यक है, संगठन ने संबंधित विभाग को आदेशित कर बंदरों को पकड़वाकर अन्य स्थान पर छुड़वाया जाने की मांग की है जिसको लेकर प्रदर्शन भी किया, वही नगर में अपंजीकृत रूप से चल रहे वाहनों को तथा नाबालिक बच्चों द्वारा चलाई जा रही ई रिक्शाओं को पर रोक लगाने की भी मांग की, उधर संगठन ने नवरात्रि के उपलक्ष में क्षेत्र के डोम खेड़ा गांव स्थित वृद्धा आश्रम में फलों का भी वितरण किया, इस मौके पर मुख्य रूप से अरुण कुमार त्यागी, सुशील भगत जी, मोनू अग्रवाल, के के गुप्ता, हरीराज सिंह एवं राष्ट्रीय सेवी संगठन के राष्ट्रीय संयोजक कृष्ण कुमार शर्मा आदि मौजूद रहे।

केजीबीवी की 76,000 बालिकाओं को गाइड प्रशिक्षण दिलाकर योगी सरकार ने सुरक्षित किया भविष्य

- 746 केजीबीवी की 76,000 बालिकाओं का चमकेगा भविष्य

बेसिक शिक्षा मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) संदीप सिंह का कहना है कि प्रदेश की सभी 746 केजीबीवी में गाइड प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया गया है। इन विद्यालयों में 2,238 गाइड यूनिट्स पंजीकृत की गई, जिनके माध्यम से योगी सरकार ने 76,000 बालिकाओं के गाइड प्रशिक्षण का कार्य पूरा किया है। इस प्रशिक्षण से भविष्य में बालिकाओं को अनेक लाभ मिलेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में उन्हें भारांक का लाभ तो मिलेगा ही, नौकरी मिलने में भी सहूलियतें मिलेंगी।

लखनऊ, 10 अक्टूबर। योगी सरकार ने मिशन शक्ति के तहत बालिकाओं के भविष्य को सुरक्षित करने की दिशा में एक ठोस पहल की है। कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत शैक्षिक रूप से पिछड़े इलाकों से आने वाली अपवंचित वर्ग की बालिकाओं को गाइड प्रशिक्षण दिलाकर उनके भविष्य को सुरक्षित किया गया है। तीन दिवसीय आवासीय गाइड प्रशिक्षण (3 से 10 अक्टूबर) में 76,000 से अधिक बालिकाओं ने भाग लिया। योगी सरकार के इस कदम से प्रशिक्षण ले चुकी बालिकाओं को जहां बीएड, डीएलएड में नंबर का भारांक मिलने की राह आसान हुई है, वहीं सड़क परिवहन एवं रेलवे की स्काउट/गाइडिंग की भर्ती में इन्हें वरीयता मिलने से इनका भविष्य भी चमकने की उम्मीद जगी है।

- त्वरित गति से प्रशिक्षण पूरा करने का रखा गया खयाल

केजीबीवी में पढ़ाई कर रही बालिकाओं के हित को ध्यान में रखते हुए उनके प्रशिक्षण को शीघ्र पूरा कराने का प्रयास किया गया। बेसिक शिक्षा राज्यमंत्री संदीप सिंह के निर्देशन में प्रदेश के प्रत्येक केजीबीवी में तीन गाइड यूनिट्स पंजीकृत की गईं, और प्रत्येक में 32 बालिकाओं को शामिल किया गया। छोटी-छोटी यूनिट्स में बंटी बालिकाओं को आसानी से प्रशिक्षण देकर उन्हें निडर, आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने का पूरा प्रयास किया गया।

- बालिकाओं को यह मिला प्रशिक्षण

प्रशिक्षण कार्यक्रम में बालिकाओं को स्काउटिंग/गाइडिंग के नियम, प्रतिज्ञा, सिद्धांत और प्राथमिक चिकित्सा के बारे में जानकारी दी गई। इन्हें गांठें बांधना, प्राथमिक चिकित्सा बॉक्स का उपयोग और झोली तिकोनी पट्टी से पत्तियां बांधने जैसी तकनीकें भी सिखाई गईं। शिविर के दौरान प्रत्येक रात कैंप फायर का आयोजन किया गया, जहां खुले में भोजन बनाने और विपदाओं के समय जीवन यापन के तरीकों को भी सिखाया गया।

-बालिकाओं के लिए जरूरी है गाइड प्रशिक्षण

यह प्रशिक्षण न केवल छात्राओं के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, और आध्यात्मिक विकास को प्रोत्साहित करेगा, बल्कि भविष्य में उनके लिए कई शैक्षिक और रोजगार के अवसर भी खोलेगा। उदाहरण के लिए, इन बालिकाओं को बीएड और डीएलएड में अंक का भारांक मिलेगा, और सड़क परिवहन एवं रेलवे में होने वाली स्काउट गाइडिंग की भर्तियों में प्राथमिकता दी जाएगी। इस तरह के कार्यक्रमों से न केवल बालिकाओं का आत्मविश्वास बढ़ेगा, बल्कि वे समाज में अपनी पहचान बनाने के लिए भी सशक्त होंगी।

-पहले ही कर ली गई थी तैयारी

केजीबीवी बालिकाओं को प्रशिक्षित करने की तैयारी को जून माह में ही अंतिम रूप दे दिया गया था। 24 से 30 जून के मध्य सात दिवसीय आवासीय शिविर में प्रत्येक मंडल की चयनित शिक्षिकाओं को गाइड कैप्टन के रूप में प्रशिक्षित किया गया था।

महानिशा पूजन कर सीएम योगी ने की लोकमंगल की प्रार्थना

गोरखपुर, 10 अक्टूबर। गोरक्षपीठाधीश्वर एवं मुख्यमंत्री एवं योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार देर शाम शारदीय नवरात्र की महाअष्टमी तिथि के मान में गोरक्षपीठ की परंपरा के अनुसार विधि विधान से महानिशा पूजन व हवन किया। महानिशा पूजन अनुष्ठान से पूर्व उन्होंने वैदिक मंत्रों के बीच जगतजननी मां आदिशक्ति के अष्टम स्वरूप महागौरी माता की पूजा-अर्चना की। शारदीय नवरात्र के पावन पर्व पर गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ ने अष्टमी तिथि के मान में गोरखनाथ मंदिर के शक्तिपीठ में महानिशा पूजा का विशिष्ट अनुष्ठान पूर्ण कर लोकमंगल की प्रार्थना की। गुरुवार पूर्वाह्न देवीपाटन शक्तिपीठ से गोरखपुर पहुंचे मुख्यमंत्री ने गोरखनाथ मंदिर में गुरु गोरखनाथ का दर्शन पूजन करने के बाद अपने गुरुदेव ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ की समाधिस्थल पर जाकर शीश नवाया। देर शाम वह महानिशा पूजा में सम्मिलित हुए। शुक्रवार पूर्वाह्न नवमी तिथि के मान में कन्या पूजन तथा शनिवार को दशमी तिथि पर श्रीनाथ जी के विशिष्ट पूजन और गोरक्षपीठ से निकलने वाले परंपरागत विजयादशमी शोभायात्रा तक सीएम योगी गोरक्षभूमि पर शक्ति की भक्ति में रत रहेंगे। गोरखनाथ मंदिर के शक्तिपीठ में महानिशा पूजा का अनुष्ठान गुरुवार देर शाम गोरक्षपीठाधीश्वर एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में प्रारंभ हुआ। दो घंटे से अधिक चले अनुष्ठान में गोरक्षपीठाधीश्वर ने गौरी गणेश पूजन, वरुण पूजन, पीठ पूजन, यंत्र पूजन, मां दुर्गा का विधिवत पूजन, भगवान राम-लक्ष्मण-सीता का षोडशोपचार पूजन, भगवान कृष्ण एवं गोमाता का पूजन, नवग्रह पूजन, विल्व पूजन,अधिष्ठात्री देवता पूजन, शस्त्र पूजन, द्वादश ज्योर्तिलिंग-अर्धनारीश्वर एवं शिव-शक्ति पूजन, वटुक भैरव, काल भैरव, त्रिशूल पर्वत पूजन किया। साथ ही हवन की वेदी पर ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र और अग्नि देवता का आह्वान कर पूजन किया और शक्तिपीठ में स्थापित वेदी पर उगे जौ के पौधों को काटकर आदिशक्ति मां दुर्गा से लोकमंगल की प्रार्थना की। महानिशा पूजा का अनुष्ठान गोरक्षपीठाधीश्वर द्वारा हवन करके पूर्ण किया गया। समस्त अनुष्ठान दुर्गा सप्तसती के पाठ एवं वैदिक मंत्रों के साथ संपन्न हुआ। अंत में आरती एवं क्षमा याचना के बाद प्रसाद वितरित हुआ। इस अवसर पर मंदिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ, काशी से आए महामंडलेश्वर संतोष दास उर्फ सतुआ बाबा समेत बड़ी संख्या में गोरखनाथ मंदिर के भक्त उपस्थित रहे।

मां सिद्धिदात्री की आराधना कर कन्या पूजन करेंगे सीएम योगी

गोरक्षपीठाधीश्वर एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ गोरखनाथ मंदिर स्थित अपने आवास के शक्तिपीठ में शुक्रवार पूर्वाह्न शारदीय नवरात्र की महानवमी तिथि को देवी दुर्गा के नौवें रूप मां सिद्धिदात्री की पूजा अर्चना करेंगे। उसके बाद कन्या पूजन का अनुष्ठान होगा। इस अवसर पर गोरक्षपीठाधीश्वर कुंवारी कन्याओं के पांव पखारकर श्रद्धा के साथ पूजा अर्चना करेंगे। उन्हें भोजन कराएंगे और दक्षिणा, उपहार देंगे। इस दौरान परंपरा के अनुसार बटुक पूजन भी किया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने 'शक्ति के पर्व' पर की मां की आराधना

बलरामपुर 10 अक्टूबर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार सुबह मां पाटेश्वरी के दर्शन-पूजन किए। दो दिवसीय बलरामपुर दौरे पर पहुंचे मुख्यमंत्री ने बुधवार को समीक्षा बैठक की, फिर मेडिकल कॉलेज व निमार्णाधीन विश्वविद्यालय का निरीक्षण किया था। इसके बाद गोरक्षपीठाधीश्वर व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ देवीपाटन शक्तिपीठ पहुंचे। शारदीय नवरात्रि में गुरुवार की सुबह उन्होंने मां के चरणों में शीश झुकाकर अपनी श्रद्धा निवेदित की। मुख्यमंत्री ने जगतजननी मां भगवती से सुखी-स्वस्थ व समृद्ध उत्तर प्रदेश की कामना की। उन्होंने मंदिर की व्यवस्थाओं का भी जायजा लिया।

›› गाय को खिलाया गुड़ और चारा

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मंदिर प्रांगण स्थित गोशाला भी गए। यहां उन्होंने सभी गायों को गुड़ व चारा खिलाया। सीएम ने नाम लेकर गायों को पुकारा तो वे भी गोरक्षपीठाधीश्वर के पास दौड़ते चली आईं। सीएम ने गो सेवा करते हुए गोशाला की व्यवस्था को भी देखा।

›› मुख्यमंत्री ने बच्चों को दुलारा, पुचकारा और दी चॉकलेट

दर्शन-पूजन के उपरांत मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंदिर परिसर का भी भ्रमण किया। यहां आए दर्शनार्थियों ने मुख्यमंत्री का अभिवादन किया तो मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हाथ हिलाकर सभी का अभिवादन किया। वहीं मंदिर में आये नन्हे-मुन्नो को मुख्यमंत्री ने चॉकलेट भी दिया। उन्होंने बच्चों से पढ़ाई आदि की भी जानकारी ली। मुख्यमंत्री ने बच्चों को मन लगाकर पढ़ने का मंत्र भी दिया। मुख्यमंत्री मंदिर में थारू जनजाति छात्रावास के बच्चों से भी मिले। उनकी शिक्षा, खानपान, रहने आदि के बारे में भी जानकारी प्राप्त की। इस दौरान मंदिर के महंत मिथिलेश नाथ योगी भी मौजूद रहे।

ज्ञान, विज्ञान और तकनीकी भारत के डीएनए में : मुख्यमंत्री

गोरखपुर, 10 अक्टूबर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि ज्ञान, विज्ञान और तकनीकी भारत के डीएनए में है। अपार संभावनाओं से परिपूर्ण हमारे युवाओं की तरफ पूरी दुनिया नई उम्मीद से देख रही है। निश्चित ही आने वाला समय भारत है। युवा संघर्षों से अपनी राह बनाएं, सफलता कदम चूमेगी। सीएम योगी गुरुवार को गोरखपुर में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की तरफ से संचालित महाराणा प्रताप इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमपीआईटी) के प्रथम बैच के नवप्रवेशित विद्यार्थियों के साथ संवाद कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारे देश में ज्ञान, विज्ञान और श्रम की त्रिवेणी अनवरत प्रवाहित है। परंपरा, परिश्रम और प्रगति हमारी प्रवृत्ति का हिस्सा है। यही प्रवृत्ति हमें दुनिया में सबसे विशिष्ट बनाती है। आवश्यकता है खुद को वैश्विक स्तर के अनुरूप खुद को तैयार करने की। हमें अभिभावकों की अपेक्षाओं पर भी खरा उतरना है। इसके लिए छात्र और शिक्षक कदम से कदम मिलाकर चलें। नेशनल-इंटरनेशनल जर्नल्स का नियमित अध्ययन करें और खुद को ई-लाइब्रेरी की तरफ अग्रसर करें। उन्होंने कहा कि हमें ऐसी तकनीकी पर ध्यान देना चाहिए

जो जीवन को सरल और सहज बनाए, समस्याओं का समाधान करे। ऐसी तकनीकी पर फोकस करने की आवश्यकता है जो प्रकृति के साथ समन्वय बनाकर विकास को नई ऊंचाई पर ले जाए।

›› रोजगार का बड़ा हब बन रहा उत्तर प्रदेश

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि आज उत्तर प्रदेश रोजगार का बड़ा हब बन रहा है। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश आज के तकनीकी दौर की महत्वपूर्ण जरूरत सेमी कंडक्टर का हब बनने की दिशा में काफी आगे बढ़ चुका है। इसमें सीधे निवेश के साथ कई गुना चक्रीय निवेश भी हो रहा है। इसके अनुरूप प्रशिक्षित श्रम उपलब्ध कराने के लिए आगे आने की जिम्मेदारी तकनीकी संस्थाओं की है।

›› एमपीआईटी परिसर में बन रहा पूर्वी यूपी का पहला सेंटर ऑफ एक्सीलेंस

सीएम योगी ने कहा कि कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में दुनियाभर में विख्यात सिलिकॉन वैली में भारत का दबदबा है और इसमें उत्तर प्रदेश के युवाओं की बड़ी हिस्सेदारी है। सिलिकॉन वैली, हैदराबाद और बेंगलुरु के बाद उत्तर प्रदेश को भी इस दिशा में तीव्रतम गति से आगे बढ़ना है। इसी लक्ष्य को लेकर पूर्वी उत्तर प्रदेश का पहला स्टेट ऑफ आर्ट सेंटर ऑफ एक्सीलेंस महाराणा प्रताप इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमपीआईटी) में स्थापित हो रहा है। विश्व स्तरीय मानक के अनुरूप यह सेंटर ऑफ एक्सीलेंस पूर्वी उत्तर प्रदेश के पंद्रह अन्य तकनीकी शिक्षण संस्थानों के लिए भी महत्वपूर्ण केंद्र बनेगा। उन्होंने बताया किएमपीआईटी परिसर के अलग-अलग सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में ड्रोन टेक्नोलॉजी एंड थ्री डी प्रिंटिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, स्पेस टेक्नोलॉजी, समेत कई एकीकृत पाठ्यक्रम भी संचालित होंगे। ग्लोबल स्टैंडर्ड के पाठ्यक्रम से जुड़कर विद्यार्थी यहां प्रोफेशनल सर्टिफिकेट कोर्स, माइनर डिग्री कोर्स और एडवांस कोर्स के जरिये खुद को संबंधित उद्योग-सेवा के क्षेत्र के अनुरूप तैयार कर सकेंगे।

›› ग्लोबल डिमांड के अनुरूप तैयार हों पाठ्यक्रम

संवाद कार्यक्रम में सीएम योगी ने फैकल्टी का आह्वान किया कि वे ग्लोबल मार्केट की डिमांड का अध्ययन करें और उसके अनुरूप पाठ्यक्रम तैयार करें। हमारा जोर मॉडर्न एज कोर्सेज पर होना चाहिए। उन्होंने बताया कि टाटा कंसल्टेंसी इस पर खासा काम कर रही है। यदि सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में यदि हम मॉडर्न एज कोर्सेज पर फोकस करेंगे तो यह शत प्रतिशत प्लेसमेंट की गारंटी होगी।

केंद्र सरकार से मिला तोहफा राज्य में विकास व कल्याण की पहल को देगा गति: सीएम योगी

लखनऊ, 10 अक्टूबर: केंद्र सरकार ने गुरुवार को राज्यों को 1,78,173 करोड़ रुपये का कर हस्तांतरण (टैक्स डिवाल्यूशन) दिया है। कर हस्तांतरण में सर्वाधिक राशि (31,962 करोड़) उत्तर प्रदेश को जारी की गई है। यह राशि त्योहारों से पहले राज्यों की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में सहायक होगी। इस पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति आभार जताया है।

सीएम ने जताया आभार

सीएम योगी आदित्यनाथ ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट 'एक्स' पर पोस्ट किया। सीएम योगी ने कर हस्तांतरण के हिस्से के रूप में उत्तर प्रदेश को 31,962 करोड़ रुपये समय पर जारी करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व वित्त मंत्री के प्रति आभार प्रकट किया।

हम सभी मिलकर मजबूत व समृद्ध उत्तर प्रदेश का कर रहे निर्माण

सीएम योगी ने लिखा कि यह अग्रिम किस्त हमारे त्योहारों के मौसम की तैयारियों को काफी बढ़ावा और राज्य भर में विकास व कल्याण की पहल को गति देगी। हम सभी मिलकर मजबूत व समृद्ध उत्तर प्रदेश का निर्माण कर रहे हैं।

हरियाणा

हार और जीत एक सिक्के के दो पहलू, पंचकूला के विकास में नहीं आएगी कोई कमी: ज्ञान चंद गुप्ता

पंचकूला विधानसभा में हजारों परिवार भाजपा के साथ हैं, कार्यकर्ता लोगों के बीच रहकर उनकी समस्याए हल करवाए

पंचकूला, अक्तूबर : हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष रहे भाजपा के वरिष्ठ नेता ज्ञानचंद गुप्ता ने पंचकूला विधानसभा क्षेत्र के मतदाताओं का अपार सहयोग के लिए धन्यवाद किया है। ज्ञानचंद गुप्ता ने कहा कि चुनाव में शहर, गांव और कालोनियों की जनता ने भी मुझे अपना पूर्ण सहयोग दिया। जनता ने भाजपा के पक्ष में प्रदेश

काम किया है, काम करूंगा, विकास कार्यों में नहीं आने दूंगा कमी

भर में बढ़-चढ़कर मतदान करके साबित कर दिया कि विकास के रास्ते को कोई रोक नहीं सकता। भाजपा सरकार ने पिछले 10 वर्ष में विकास के नए आयाम लिखे हैं, जिसकी बदौलत प्रदेश में तीसरी बार भाजपा सरकार बनी है। ज्ञानचंद गुप्ता ने कहा कि पंचकूला विधानसभा क्षेत्र में भी विकास कार्यों में कोई कमी नहीं छोड़ी गई। 5500 करोड़ रुपए के विकास कार्य पंचकूला में हुए, लेकिन हो सकता है कि कहीं कोई कमी रही होगी, जिसके कारण मामूली अंतर से भाजपा पंचकूला की सीट जीतने में सफल नहीं हो पाई। उन्होंने कहा कि अपनी कमियों की समीक्षा की जाएगी और जहां पर कमियां या कोई अन्य कारण रहे, उसके बारे में भी पार्टी हाईकमान को अवगत करवाया जाएगा। ज्ञानचंद गुप्ता ने कहा कि हार और जीत एक सिक्के के दो पहलू हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हजारों परिवार पंचकूला विधानसभा क्षेत्र में भाजपा के साथ हैं और उनके प्यार और सम्मान को भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने कार्यकर्ताओं का आहवान किया कि आम जनता के बीच में रहकर भाजपा की मजबूती के लिए काम करें। ज्ञानचंद गुप्ता ने कहा कि प्रदेश में भाजपा सरकार बनी है और पंचकूला के विकास का पहिया में कभी थमने नहीं दूंगा। इस क्षेत्र में विकास करवाने के लिए प्रदेश सरकार से फंड्स लेकर आएंगे। नगर निगम, हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण, जिला प्रशासन एवं पंचकूला महानगरीय विकास प्राधिकरण के साथ तालमेल बिठाकर विकास कार्य करवाए जाएंगे। पंचकूला विधानसभा क्षेत्र से बड़ी संख्या में पिछले दो दिन से लोगों का ज्ञानचंद गुप्ता को मिलने के लिए घर पर तांता लग रहा है। लोगों ने कहा कि हम भाजपा और ज्ञानचंद गुप्ता के साथ हैं।

भरमौर क्षेत्र में भूकंप के दृष्टिगत सुरक्षित निर्माण कार्यों को अंजाम देना बेहद जरूरी : डा. जनक

भरमौर विधायक डॉ जनक राज कलाकारों के साथ।

आई.पी.आर. के जागरूकता अभियान में भरमौर विधायक बोले

चंबा, अक्तूबर : जिला चंबा में लोगों को सेफ कंस्ट्रक्शन प्रैक्टिसस के प्रति जागरूक करने के लिए सूचना एवं जनसंपर्क विभाग कलाकारों के माध्यम से जागरूक करने में जुट गया है। बुधवार को जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के तत्वावधान में समर्थ-2024 के तहत जनजातीय क्षेत्र भरमौर में गीत-संगीत व नुक्कड़ नाटक के माध्यम से इस जागरूकता अभियान को अंजाम दिया गया। इस कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि इस मौके पर भरमौर-पांगी विधायक डॉ जनकराज मौजूद रहे। उन्होंने कहा कि लोगों को अपने गृह निर्माण के दौरान उन सब बातों को अमलीजामा पहनाया जाना चाहिए जो कि भूकंपरोधी बनाने के लिए बेहद जरुरी है। उन्होंने कहा कि भरमौर की बात की जाए तो यह क्षेत्र भूकंप की दृष्टि से बेहद संवेदनशील है इसलिए यहां होने वाले प्रत्येक निर्माण कार्य में इस बात को विशेष ध्यान रखा जाना जरूरी है। भरमौर विधायक ने कहा कि आपदा एक आकस्मिक दुर्घटना है जिससे मानव, संपत्ति और पर्यावरण को नुक्सान पहुंचता है। उन्होंने बताया कि भूकंप, बाढ़ व सूखा प्राकृतिक आपदाएं हैं। उन्होंने बताया कि आपदा का पूर्वानुमान तो नहीं लगाया जा सकता लेकिन बेहतर आपदा प्रबंधन और आपदा के जोखिम को कम करने के उपायों बारे जागरूकता से आपदा के समय होने वाले नुकसान को काफी हद तक कम किया जा सकता है। इस मौके पर कलाकारों ने नुक्कड़ नाटक के माध्यम से लोगों को बताया कि प्राकृतिक आपदाएं जैसे भारी वर्षा, भूकम्प या बाढ़ से जमीन धसने के समय लोगों को संयम रखकर एक दूसरे की मदद करनी चाहिए और भगदड़ इत्यादि नहीं मचानी चाहिए ताकि कम से कम नुकसान हो सके। उन्होंने कहा कि किसी भी प्रकार की आपदा की स्थिति में टोल फ्री नंबर 1077 , 102 व 108 पर कॉल कर सकते हैं। इस अवसर पर पंचायत समिति सदस्य विक्रम, प्रधान ग्राम पंचायत सचुई संजीव ठाकुर सहित काफी संख्या में क्षेत्र के लोग मौजूद रहे।

सुरक्षा गार्ड के 115 पदों के लिए लगाए भर्ती शिविर

नाहन, अक्तूबर : जिला रोजगार अधिकारी सिरमौर जगदीश कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि मैसर्ज एसआईएस (सुरक्षा एवं खुफिया सेवाएं) भारत लि0, भारत की एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी है। सुरक्षा जवान पद के लिए कम्पनी द्वारा न्यूनतम वेतन 16500 से 21000 प्रतिमाह तथा सुपरवाइजर पद के लिए 18000 से 22000 रुपए प्रतिमाह दिया जाएगा। अभ्यार्थी की आयु 19 से 40 वर्ष के बीच होनी चाहिए तथा शैक्षणिक योग्यता 10वीं, 12वीं और स्नातक तथा लम्बाई 168 सेंटीमीटर या अधिक और वजन 55 से 95 किलो होना आवश्यक है। कम्पनी द्वारा चयनित सुरक्षा जवानों और सुपरवाइजर को प्रदेश के विभिन्न अस्पतालों, बैंकों मेडिकल कॉलेज, मंदिरों तथा औद्योगिक इकाइयों में तैनात किया जाएगा। उन्होंने बताया कि इच्छुक आवेदक इइएमआइएस.एनआईसी.इन पोर्टल पर ऑनलाइन भी आवेदन कर सकते है, इसके लिए उनको केंडिडेट लॉगिन में क्लीक करके अपनी यूसर-आइडी व पासवर्ड बनाना होगा आईडी को एक्टीवेट करने के उपरान्त अभ्यार्थी को कम्पनी द्वारा डाली गई ऑनलाइन रिक्तियों की सूचना प्राप्त होगी तथा ऑनलाइन अप्लाई/आवेदन का विकल्प उपलब्ध होगा। इसके अतिरिक्त आवेदक के ऑनलाइन भर्ती शिविरों का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि मैसर्ज एसआईएस (सुरक्षा एवं खुफिया सेवाएं) भारत लि0, शाहतलाई जिला बिलासपुर के 115 सुरक्षा गार्ड पदों को भरने के लिए सिरमौर जिला के तीन उप रोजगार कार्यालयों में भर्ती-शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि सुरक्षा गार्ड पदों के लिए उप रोजगार कार्यालय सरांहा में 14 अक्तूबर, कमरऊ उप रोजगार कार्यालय में 15 अक्तूबर तथा उप रोजगार कार्यालय संगड़ाह में 16 अक्तूबर को प्रातः 10:00 बजे इन पंजीकरण हेतू पोर्टल पर टयूटोरियल वीडियो भी डाला गया है जिसकों देखकर रोजगार कार्यालय में पंजीकरण ऑनलाइन के माध्यम से स्वयं भी किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि भर्ती शिविर में भाग लेने वाले अभ्यार्थियों को अपने साथ दो पासपोर्ट साईज फोटो व मूल प्रमाण पत्र के साथ अपना बायोडाटा की कॉपी तथा अनुभव प्रमाण पत्र यदि हो तो उसको भी साथ लाना आवश्यक है। जिला रोजगार अधिकारी ने सभी इच्छुक आवेदकों से उपरोक्त उप रोजगार कार्यालयों में आयोजित होने वाले शिविरों में अधिक से अधिक संख्या में पहुंच कर इस मौके का लाभ उठाने का अनुरोध किया है।

नवरात्र के छठे दिन भक्तों ने मां शूलिनी मंदिर में किया कीर्तन

शूलिनी माता मंदिर में भजन कीर्तन करते भक्त।

सोलन, अक्तूबरः सोलन शूलिनी माता मंदिर में दुर्गा संकीर्तन मंडली, नव दुर्गा संकीर्तन मंडली, बाल वैष्णो संकीर्तन मंडली के पूर्व सदस्यो द्वारा लगातार रात्रि नौ बजे के बाद नवरात्रे पढ़े जा रहे है छटे नवरात्रे पर मां दुर्गा के छटे स्वरूप माता कात्यायनी की आराधना व पूजा अर्चना कर आशीर्वाद लिया। रात नौ बजे के बाद बड़ी संख्या में भगत ने शूलिनी माता मंदिर पहुंच माता का गुणगान सुना। माता कात्यायनी की व्याख्या करते हुए भक्त प्रदीप इंग्रेवर ने कहा की आचार्यो के अनुसार महर्षि कत्यायन की घोर तपस्या से खुश होकर मां कात्यायनी ने कात्यायन महर्षि को वरदान दिसा की मै पुत्री रूप मे आपके घर जन्म लुंगी मां कात्यायनी गोरी मां का रूप है, जिस समय कृष्ण भगवान ने कंश का वध्ध किया था उस समय कृष्ण भगवान ने रेत से एक प्रतिमा मां कात्यायनी की बनाई थी जो आज भी वृंदावन मे मंदिर मे स्थापित है मां कात्यायनी पीले धारण करती है उन्होने बताया की कुंवारी कन्या मां कात्यायनी की पूजा अर्चना करे तो उसका विवाह समय से हो जाता है मां की पूजा से रोग, संताप खत्म हो जाता है और जीवन धन धान्य से युक्त हो जाता है। उपस्थित सभी भगतो ने मां कात्यायनी का नवरात्रा पढ़ा और भजन कीर्तन किया हाथ पकड़ ले कन्हैया, मेरा रोम रोम तेरा नाम जपे मां, तेरे दर्शन ने मां आवेंगे मां यातरू, चोला पहनो, गुफा सुहानी बैठी महारानी, मंगलवार तेरा है हर ये संसार तेरा है बालाजी कृपा करना और अन्य भजनो से मां को भोग लगाया गया। इस अवसर पर विशाल ओबेरॉय, दीपक वर्मा, नीरज वर्मा, विवेक ओबरॉय आदि मौजूद थे।

सदस्यता अभियान को लेकर प्रदेश भाजपा प्रभारी श्रीकांत शर्मा ने खंडों में भरा जोश

श्रीकांत शर्मा बोले 2047 का लक्ष्य लेकर चले और अधिक से अधिक लोगों को भाजपा से जोड़ें

प्रदेश भाजपा प्रभारी श्रीकांत शर्मा दून के चंडी में भाजपा कार्यकर्ताओं से बैठक करते हुए।

चंडी (बरोटीवाला) अक्तूबर : भाजपा प्रदेश प्रभारी श्रीकांत बुधवार को दुन हल्के के चार खंडों में पहुंच कर कार्यकर्ताओ में सदस्यता अभियांन को लेकर जोश भरा। इस दौरान उन्होंने आज बद्दी, पट्टा, कुठाड और चंडी खंडों का दौरा किया और कार्यकर्ताओं से हवन किया कि सदस्यता अभियान 2024 को लेकर अधिक से अधिक लोगो को जोड़े और 2047 तक संगठन सत्ता में रहे इस प्रकार आप घर घर जाकर अधिक से अधिक लोगो को जोडें । उन्होंने कार्यकताओं को हरियाणा में तीसरी बार लगातार भाजपा सरकार के बनने की बधाई दी। और कहा यह सगठन की माइक्रो मैनेजमेंट है। जिसके चलते तीसरी बार भाजपा सत्ता में आई। इस अवसर पर भाजपा जिला अध्यक्ष रतन सिंह पाल, पूर्व विधायक परमजीत सिंह, अशोक शर्मा,जिला परिषद के चेयरमैन रमेश ठाकुर,जिला महामंत्री सोलन बलबीर ठाकुर, जिला उपाध्यक्ष अमर संधू,मंडल प्रधान मान सिंह मेहता, विधि चंद राणा, बी.डी.सी. चेयरमैन जमुना ठाकुर,ड़ा.श्रीकांत शर्मा ,डी.आर.चंदेल, रामगोपाल शर्मा,राज कुमार,देवराज चौधरी,खेम चंद ठाकुर, रोशन लाल वशिष्ठ,पवन शर्मा, दिनेश शर्मा,पवन गुप्ता, सुरेंद्र ठाकुर, प्रेम चंद,ललित शर्मा,पूर्ण चंद गुप्ता, खुशदेव ठाकुर, सोनी प्रधान,ममता भारद्वाज, संजय राय, निशांत ठाकुर,नीतीश ठाकुर,दिवान प्रधान, अंजू भंडारी और अन्य बहुत संख्या में कार्यकर्ता मौजूद हुए।

बहुजन समाज पार्टी के संस्थापक काशीं राम की पुन्यतिथि पर कार्यक्रम आयोजित

पुण्य तिथि में भाग लेते स्थानीय लोग

सियूल, अक्टूबर : गांब करियाडा मे 9 अक्तूबर बुधबार का दिन बहुजन समाज पार्टी के संस्थापक कांशीराम की उन्निसवीं पुण्यतिथि के रुप मे मनाया गया

बहुजन समाज पार्टी देहरा ब जसबां प्रागपुर विधानसभा ईकाई के सौजन्य से मनाए गये इस कार्यक्रम मे काशीं राम की जीबनी पर प्रकाश डालते हुए अपने संबोधन में पूर्ब प्रधानाचार्य होशियार सिंह रंगीला ने साहिब कांशीराम जी की जीवनी पर प्रकाश डालते हुए बहुजन समाज पार्टी के आंदोलन को हिमाचल प्रदेश के घर घर व जन जन तक पहुंचाने का आग्रह किया और साहिब कांशीराम के बताए रास्ते पर चल कर देश की सहभागिता करने पर जोर दिया और सरकार से साहिब श्री कांशी राम को भारत रत्न देने की भी मांग की।

इस दौरान कहा कि बाबासाहेब डॉ भीम राव अम्बेडकर के मिशन को पूरे भारत बर्ष में पहुंचाने का काम करते हुए साहिब कांशीराम ने 1981 में दलित शोषित समाज संघर्ष समिति बनाई, बामसेफ को तैयार किया तथा 14 अप्रैल 1984 को बहुजन समाज पार्टी की स्थापना की साहिब कांशीराम को उनकी 19सवीं पुन्य तिथि पर सुलेखा चौधरी, सेवानिवृत्त पोस्टमास्टर विशम्बर भाटिया , रशपाल कौंडल सेवानिवृत्त सूबेदार ,डा.केहर सिंह पीएचडी सूबेदार हरबंस सिंह सेवानिवृत्त कैप्टन लेख राज चौधरी सेवानिवृत्त, होशियार सिंह रंगीला सेवानिवृत प्रधानाचार्य पार्टी के पुराने कर्मठ नेता पूर्व प्रधान लाल चंद सनोटिया आदि पदाधिकारियों ने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

लॉर्ड महावीर नर्सिंग कालेज नालागढ़ की 90 छात्राएं जयपुर के निमस अस्पताल के लिए चयनित

लॉर्ड महावीर नर्सिंग कालेज की जयपुर के निमस के लिये चयनित छात्रांयें प्रबंधन के साथ

छात्राओं के चयन को लेकर साक्षात्कार गत 31 अगस्त को किया गया था

नालागढ़, अक्तूबर : जयपुर के निमस अस्पताल के लिए लॉर्ड महावीर नर्सिंग संस्थान नालागढ़ की 90 छात्राएं चयनित। लॉर्ड महावीर नर्सिंग कालेज में राजस्थान जयपुर के अस्पताल द्वारा आयोजित हुए साक्षात्कार में 90 छात्राओं का चयन हुआ है यह साक्षात्कार गत 31 अगस्त को आयोजित किया गया था जिसे पिछले कल परिणाम घोषित कर दिया गया जिसमें कुल 100 छात्राओं ने भाग लिया। लॉर्ड महावीर नर्सिंग कॉलेज के चेयरमैन डॉ अजीतपाल जैन ने चयनित सभी छात्राओं को बधाई दी उन्होंने कहा कि संस्थान में हर वर्ष देश के नामी बेहतरीन अस्पतालों के कैंपस इंटरव्यू करवाए जाते हैं। उन्होंने कहा जयपुर का निमस अस्पताल मैं 1850 बेड की क्षमता है और अत्याधुनिक अस्पताल है उनके द्वारा हमारे संस्थान लॉर्ड महावीर नर्सिंग कॉलेज में कैंपस इंटरव्यू रखा गया जिसमें 90 छात्राओं का चयन हुआ जिनको प्रतिमाह 20,000 रुपए वेतन और रहने की सुविधा दी जाएगी। संस्थान का अपना 100 बिस्तर का अस्पताल है। जहां पर प्रशिक्षु नर्सों को बेहतरीन डॉक्टर्ज द्वारा ट्रेनिंग दी जाती है। लॉर्ड महावीर नर्सिंग कॉलेज की डायरेक्टर डॉक्टर आशिमा जैन और कॉलेज की प्रिंसिपल डॉक्टर संतोष शर्मा और वाइस प्रिंसिपल एंन चंद्रलेखा ने भी सभी छात्राओं को उनकी इस उपलब्धि पर बधाई दी।

श्रीमद् भागवत में कथा व्यास ने सुनाई श्री कृष्ण-रुकमणि विवाह की कथा

कुनिहार, अक्तूबर : कुनिहार के तालाब मंदिर परिसर में राधे श्याम परिवार संस्था द्वारा आयोजित की जा रही सात दिवसीय श्रीमद् भागवत पुराण कथा ज्ञान यज्ञ के छठे दिन प्रसिद्ध कथा वाचक एवं श्री बांके बिहारी विश्व मंगलम सेवा धाम के प्रमुख संस्थापक श्री हरीजी महाराज ने कृष्ण-रुक्मणि विवाह के प्रसंग सहित कृष्ण की अनेक लीलाओं का व्याख्यान किया। कथा वाचक ने कहा कि श्री कृष्ण बाल्यकाल से ही ग्वालों के साथ गऊए चराना, गोपियों की मटकियां फोड़, गोपियों संग रास लीला करना, मधुर बांसुरी वादन करना, एक उंगली पर गोवर्धन पर्वत उठाना और इंद्र का अभिमान चूर करना जैसी कई अद्भुत लीलाएं की। डी डी कश्यप मीडिया प्रभारी विश्व मंगलम सेवा धाम ने जानकारी देते हुए बताया कि कल वीरवार 10 अक्तूबर को 11 बजे पूणार्हुति होगी और 12 बजे से 2 बजे तक कथा प्रवचन के साथ कथा को विराम दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि इसके बाद आयोजकों द्वारा विशाल भंडारा सभी क्षेत्र वासियों के लिए लगाया जाएगा। इस अवसर पर डॉक्टर नागेश गर्ग, गोदावरी आर्या, कृष्णा पंवर, इंदिरा शांडिल, कुमारी अनिता कश्यप, नीलम गर्ग, लता, इंदु शांडिल, कौशल्या शांडिल, कमला देवी, लछमी रघुवंशी, मीरा कश्यप, पुष्पा देवी, अंजना, सुलेखा, शीला, श्यामा नंद शांडिल, जगदीश पंवर, जगदीश चंदेल आदि मौजूद रहे।

कुनिहार में आयोजित श्रीमद् भागवत कथा का श्रवण करती महिलाएं व अन्य।

डाक विभाग ने पोस्टाथन वॉक रिले और पौधारोपण

डाक विभाग विश्व डाक दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय डाक सप्ताह मनाते हुए।

सोलन, : डाक विभाग द्वारा बुधवार को विश्व डाक दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय डाक सप्ताह के अंतर्गत फिट इंडिया फिट पोस्ट अभियान के तहत पोस्टाथन वॉक रिले का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में डाक अधीक्षक संदीप धमार्णी ने सभी को स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मस्तिष्क रखने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने पोस्टाथन के माध्यम से यह भी संदेश दिया कि दैनिक जीवन में फिटनेस को शामिल करना एक संतुलित और संतुष्टिपूर्ण जीवन के लिए अति आवश्यक है। इसके अतिरिक्त एक पेड़ मां के नाम थीम के तहत सभी प्रमुख डाकघरों में पौधारोपण अभियान भी चलाया गया। इस अवसर पर डाक विभाग की विभिन्न योजनाओं की जानकारी भी दी गई।

रैबीज प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में किप्स स्कूल के छात्रों का शानदार प्रदर्शन

कसौली में आयोजित प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करते किप्स स्कूल के विजेता छात्र।

सोलन, : केंद्रीय अनुसंधान संस्थान (सीआरआई) कसौली द्वारा रैबीज प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें कसौली इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल की वरिष्ठ वर्ग की छात्रा मान्या और गुंताज कौर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि कनिष्ठ वर्ग के छात्र गीतांश गुलाटी और पंशुल गोयल द्वितीय स्थान पर रहे। इस प्रतियोगिता के आयोजकों द्वारा किप्स के इन विद्यार्थियों की बहुत सराहना की गई। इस उपलब्धि पर प्रबंध निदेशक हीरा ठाकुर, प्रधानाचार्य राजेंद्र प्रसाद और उप प्रधानाचार्या पूनम ठाकुर ने छात्रों को उनकी शानदार सफलता के लिए बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं।

कुनिहार की रामलीला में कलाकारों किया सुंदर मंचन

कुनिहार में आयोजित रामलीला में श्री राम, लक्ष्मण और मां सीता के किरदार में कलाकार।

कुनिहार, अक्तूबरः शरद नवरात्रों पर पूरे देश में जगह जगह रामलीला का मंचन हो रहा है। कुनिहार में भी पिछले कई वर्षो से रामलीला जन कल्याण समिति रामलीला का मंचन करवाती आ रही है आजकल भी यह मंचन पहले नवरात्रे से करवाया जा रहा है जिसमे सभी स्थानीय कलाकार इसमें बढ़चढ़ कर भाग लेकर अपनी कलाकारी का सुंदर व आकर्षक मंचन कर रहे हैं। जिसमे दूर दूर से लोग भारी संख्या में प्रतिदिन यहां पहुंचकर रामलीला का आनंद ले रहे हैं। निदेशक रमण शर्मा व संदीप जोशी की अगुवाई में गौरव शर्मा श्री राम, प्रिंस खुराना लक्ष्मण, हन्नी जोशी माता सीता, सौर्य जोशी हनुमान व संजय जोशी रावण का शानदार किरदार निभा रहे हैं तो वहीं भरत सुजल पूरी, शत्रुघ्न, पारस अरोड़ा, राजा जनक अजय जोशी, दशरथ मोनू जोशी और शबरी का किरदार सुमित बड़े सुंदर ढंग से निभा रहे है। समिति अध्यक्ष रितेश जोशी ने बताया कि पंचायत प्रधान जगदीश अत्री, देवेंद्र उपाध्याय, स्टेज सचिव अरुण, आशीष द्वेदी, संदीप जोशी, अरविंद जोशी, मुकेश शर्मा, प्रदीप पूरी, रोहित जोशी व सभी समिति सदस्यों सहित इस आयोजन को सफल बनाने में अपना भरपूर सहयोग कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि 11 अक्तूबर को रामलीला को विराम दिया जाएगा और 12 अक्तूबर को दशहरा मैदान में श्री राम का किरदार निभा रहे गौरव शर्मा द्वारा तीर चलाकर रावण का विशाल पुतला जलाया जाएगा और दशहरा उत्सव बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जाएगा।

टाइम्स हायर एजुकेशन वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2025 में शूलिनी शीर्ष 500 में शामिल

प्रो. पीके खोसला

सोलन, अक्तूबरः पंद्रह वर्षीय शूलिनी यूनिवर्सिटी बुधवार को घोषित टाइम्स हायर एजुकेशन (टीएचई) रैंकिंग में देश के नंबर एक प्राइवेट यूनिवर्सिटी के रूप में सूचीबद्ध होने के साथ-साथ दुनिया के टॉप 500 यूनिवर्सिटीज में उभरा है। शोध-केंद्रित इस यूनिवर्सिटी को पिछले साल 501-600 बैंड की तुलना में 401-500 बैंड में रखा गया है। केवल इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, बैंगलोर को 251-300 बैंड में इससे ऊपर स्थान दिया गया है, जिससे यह देश में दूसरे नंबर पर आ गई है। 401-500 बैंड में रैंक किए गए अन्य इंडियन इंस्टीट्यूट्स अन्ना यूनिवर्सिटी, महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी और सविथा इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल एंड टेक्निकल साइंसेज हैं। केवल सविथा इंस्टीट्यूट ही शूलिनी यूनिवर्सिटी के साथ देश के शीर्ष प्राइवेट यूनिवर्सिटी के रूप में एक ही बैंड में है। इस वर्ष की रैंकिंग में 107 भारतीय यूनिवर्सिटीज शामिल हुए (पिछले वर्ष 91 से ऊपर), शूलिनी 47.42 स्कोर के साथ सबसे आगे रहा और उसने रैंकिंग में भाग लेने वाले आईआईटी को भी पीछे छोड़ दिया। शूलिनी यूनिवर्सिटी की उत्कृष्टता को इंटरनेशनल आउटलुक में इसके ग्लोबल प्रदर्शन द्वारा देश में नंबर दो स्थान (ग्लोबल स्तर पर 416 वें स्थान पर) के साथ उजागर किया गया है।

यूनिवर्सिटी की उल्लेखनीय उपलब्धि की सराहना करते हुए, इसके फाउंडर और चांसलर प्रोफेसर पीके खोसला ने कहा कि यह रैंकिंग विश्वविद्यालय में किए जाने वाले उच्च गुणवत्ता वाले अनुसंधान का प्रमाण है। उन्होंने बताया कि देश में टॉप 500 में ग्लोबल रैंक भी इसे श्रेणी 1 यूनिवर्सिटी के रूप में योग्य बनाती है। प्रो चांसलर विशाल आनंद ने यूनिवर्सिटी की इस उपलब्धि को एक अद्भुत उपलब्धि बताया और प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करने के लिए स्टाफ और शोधकताओं को बधाई दी।

यूनिवर्सिटी द्वारा हासिल की गई उच्च रैंकिंग की सराहना करते हुए, वाइस चांसलर प्रो अतुल खोसला ने कहा कि यह रैंकिंग यूनिवर्सिटी के संकाय और शोधकताओं द्वारा की गई कड़ी मेहनत और समर्पण से हासिल की गई है। उन्होंने कहा कि यूनिवर्सिटी उत्कृष्टता के लिए प्रयास करना जारी रखेगा। नवीनतम रैंकिंग में यूनिवर्सिटी को ग्लोबल इंस्टीट्यूटीनल रैंकिंग के दोनों मानक धारकों द्वारा टॉप 500 ग्लोबल यूनिवर्सिटीज में शामिल किया गया है। दूसरा वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2025 में क्वाक्वेरेली साइमंड्स (क्यूएस) है।केमिस्ट्री, फिजिक्स और एस्ट्रोनॉमी की श्रेणियों में एससीआईएमएजीओ रैंकिंग में शीर्ष पर रहने के अलावा देश में सर्वश्रेष्ठ यूथ प्राइवेट यूनिवर्सिटी के रूप में स्थान पाने के बाद दोहरी मान्यता गौरव के रूप में आई है।

इंस्पायर मानक स्कॉलरशिप योजना के आवेदन को मात्र पांच दिन शेष

नाहन, अक्तूबर : उप निदेशक उच्चतर शिक्षा सिरमौर अजित चौहान ने जानकारी देते हुए बताया कि 2024-25 के लिए इंस्पायर मानक स्कॉलरशिप योजना के लिए आवेदन करने की तिथि को बढ़ाकर 15 अक्तूबर, 2024 कर दिया गया है। उन्होंने बताया कि इंस्पायर मानक स्कॉलरशिप योजना के आवेदन को मात्र पांच दिन शेष रह गए है तथा जिन विद्यार्थियों ने अभी तक इंस्पायर मानक अवार्ड में आवेदन नहीं किया है वे निर्धारित तिथि तक अपना आवेदन कर सकते है। उन्होंने बताया कि शैक्षणिक सत्र 2024-25 के लिए इस योजना के तहत ऑनलाइन आवेदन पहली जुलाई से 15 सितम्बर तक करने के लिए कहा गया था परन्तु आवेदन की धीमी गति को देखते हुए विभाग ने आवेदन की अंतिम तिथि को एक महीने तक बढ़ा दिया है।

उन्होंने बताया कि इस योजना के लिए राजकीय व निजी विद्यालयों के छठी से दसवीं कक्षा के विद्यार्थी पात्र है।

इंस्पायर मानक योजना का उददेश्य विद्यार्थियों में सृजनशीलता एवं रचनात्मक सोच को बढ़ावा देना है, इसमें विद्यार्थियों की और से विज्ञान विषय पर मॉडल तैयार किए जाते है। इस योजना के तहत स्कूल में छठी से दसवीं कक्षा के 10 से 15 वर्ष आयु के विद्यार्थियों को विज्ञान मॉडल बनाने के लिए 10-10 हजार रुपए की आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। इसके लिए पूरे देश से पोर्टल व एप के माध्यम से आवेदन किया जाता है जिसके लिए विद्यार्थी अब 15 अक्तूबर तक आवेदन कर सकते है। उप निदेशक उच्चतर शिक्षा ने सिरमौर जिला से इस योजना के तहत आवेदन कम प्राप्त होने पर जिला में कार्यरत सभी वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला, हाई स्कूल व निजी स्कूलों के प्रधानाचार्यों को निर्देश दिए कि समय रहते सभी स्कूल जल्द से जल्द विद्यार्थियों के आवेदन पोर्टल पर पंजीकृत करें।

नई पीढ़ी प्लास्टिक मुक्त प्रकृति की रक्षा करे, प्रकृति एवं पर्यावरण की रक्षा करेगा सयुक्त रूप से समाजिक संस्था।

(वर्ल्ड न्यूज फीचर नेटवर्क)
बेतिया। शहर के नया टोला मे अधिवकता सह सचिव सत्याग्रह रिसर्च फाउंडेशन डॉ एजाज, डॉ नीरज गुप्ता ब्रांड एंबेसडर स्वच्छ भारत मिशन सह संस्थापक संस्थापक ग्रीन इंडिया रिसर्च परिवार फाउंडेशन, डॉ अमानुल हक संस्थापक सह पत्रकार "मदर ताहिरा चैरिटेबल ट्रस्ट" एवं विभिन्न सामाजिक संगठनों द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सर्वप्रथम डॉ एजाज अहमद अधिवक्ता वरिष्ठ पत्रकार सह संस्थापक मदर ताहिरा चैरिटेबल ट्रस्ट डॉ अमानुल हक द्वारा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, अमर शहीदों एवं स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर पॉलिथीन, सिंगल यूज प्लास्टिक मुक्त प्रकृति, स्वच्छता एवं पर्यावरण संरक्षण का संकल्प दिलाते हुए डॉ एजाज अहमद अधिवक्ता अन्तर्राष्ट्रीय पीस एम्बेसडर सह सचिव सत्याग्रह रिसर्च फाउंडेशन ने कहा कि प्रकृति एवं मानव के बिच बहुत गहरा सम्बन्ध है। मनुष्य के लिए धरती घर का आंगन है और आसमान छत है। सागर-नदिया पानी के मटके है, पेड़-पौधे आहार साधन है, सूर्य-चाँद, तारे दीपक है। वर्तमान समय में कई प्रजातीय के जिव-जंतु एवं वनस्पति विलुप्त हो रहे है।विलुप्त हो रहे जिव-जंतु व वनस्पति रक्षा का संकल्प लेना ही मूल उद्देश्य है, इस अवसर पर डॉ एजाज अहमद ,डॉ अमित कुमार लोहिया ने संयुक्त रूप से कहा कि प्रकृति हमारी सभी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करती है , जल, जंगल और जमीन से ही मनुष्य जीवन है। प्रकृति ने हमे सब कुछ दिया है प्रकृति में चारो ओर पेड़-पौधों की हरियाली है। प्रकृति ने हमको पेड़-पौधे, फल-फूल आदि दिए है हमे प्रकृति को बचाने के लिए प्रकृति को पॉलिथीन एवं प्लास्टिक मुक्त करना होगा तथा पुरे विश्व का ध्यान आकर्षित करना होगा। प्रदुषण को कम करना होगा, प्रकृति को हरी भरी खुशहाल रखना होगा। वन्य प्राणियों का संरक्षण संवर्धन करना होगा, हमे अधिक से अधिक पेड़-पौधों को लगाना होगा। हमे प्रकृति को समझना होगा। दिन-प्रतिदिन बढ़ती जनसँख्या, बढ़ता प्रदुषण, प्रतिवर्ष धरती बढ़ता तापमान नष्ट होता पर्यावरण आज चिंता के विषय बन गए है और हमारी धरती को विनाश की ओर धकेल रहे है। प्रकृति की सुरक्षा करना बेहद जरूरी है, यही कारण है की देश-दुनिया के कई इलाको में सूखा पड़ रहा है। ये सब प्राकृतिक असंतुलन के कारण हो रहा है आज हमे अपने आपको बदलने की जरूरत है, प्रकृति को नहीं। हम सबके जीवन का आधार हमारी प्रकृति को सुरक्षित रखना हम सबके हाथ में है। हम छोटे-छोटे प्रयासों के द्वारा पर्यावरण को संरक्षित करने में सहयोग कर सकते है।

नई पीढ़ी प्लास्टिक मुक्त प्रकृति की रक्षा करे, प्रकृति एवं पर्यावरण की रक्षा करेगा सयुक्त रूप से समाजिक संस्था।

(वर्ल्ड न्यूज फीचर नेटवर्क)
बेतिया। शहर के नया टोला मे अधिवकता सह सचिव सत्याग्रह रिसर्च फाउंडेशन डॉ एजाज, डॉ नीरज गुप्ता ब्रांड एंबेसडर स्वच्छ भारत मिशन सह संस्थापक संस्थापक ग्रीन इंडिया रिसर्च परिवार फाउंडेशन, डॉ अमानुल हक संस्थापक सह पत्रकार "मदर ताहिरा चैरिटेबल ट्रस्ट" एवं विभिन्न सामाजिक संगठनों द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सर्वप्रथम डॉ एजाज अहमद अधिवक्ता वरिष्ठ पत्रकार सह संस्थापक मदर ताहिरा चैरिटेबल ट्रस्ट डॉ अमानुल हक द्वारा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, अमर शहीदों एवं स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर पॉलिथीन, सिंगल यूज प्लास्टिक मुक्त प्रकृति, स्वच्छता एवं पर्यावरण संरक्षण का संकल्प दिलाते हुए डॉ एजाज अहमद अधिवक्ता अन्तर्राष्ट्रीय पीस एम्बेसडर सह सचिव सत्याग्रह रिसर्च फाउंडेशन ने कहा कि प्रकृति एवं मानव के बिच बहुत गहरा सम्बन्ध है। मनुष्य के लिए धरती घर का आंगन है और आसमान छत है। सागर-नदिया पानी के मटके है, पेड़-पौधे आहार साधन है, सूर्य-चाँद, तारे दीपक है। वर्तमान समय में कई प्रजातीय के जिव-जंतु एवं वनस्पति विलुप्त हो रहे है।विलुप्त हो रहे जिव-जंतु व वनस्पति रक्षा का संकल्प लेना ही मूल उद्देश्य है, इस अवसर पर डॉ एजाज अहमद ,डॉ अमित कुमार लोहिया ने संयुक्त रूप से कहा कि प्रकृति हमारी सभी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करती है , जल, जंगल और जमीन से ही मनुष्य जीवन है। प्रकृति ने हमे सब कुछ दिया है प्रकृति में चारो ओर पेड़-पौधों की हरियाली है।प्रकृति ने हमको पेड़-पौधे, फल-फूल आदि दिए है हमे प्रकृति को बचाने के लिए प्रकृति को पॉलिथीन एवं प्लास्टिक मुक्त करना होगा तथा पुरे विश्व का ध्यान आकर्षित करना होगा। प्रदुषण को कम करना होगा, प्रकृति को हरी भरी खुशहाल रखना होगा। वन्य प्राणियों का संरक्षण संवर्धन करना होगा, हमे अधिक से अधिक पेड़-पौधों को लगाना होगा। हमे प्रकृति को समझना होगा। दिन-प्रतिदिन बढ़ती जनसँख्या, बढ़ता प्रदुषण, प्रतिवर्ष धरती बढ़ता तापमान नष्ट होता पर्यावरण आज चिंता के विषय बन गए है और हमारी धरती को विनाश की ओर धकेल रहे है। प्रकृति की सुरक्षा करना बेहद जरूरी है, यही कारण है की देश-दुनिया के कई इलाको में सूखा पड़ रहा है। ये सब प्राकृतिक असंतुलन के कारण हो रहा है आज हमे अपने आपको बदलने की जरूरत है, प्रकृति को नहीं। हम सबके जीवन का आधार हमारी प्रकृति को सुरक्षित रखना हम सबके हाथ में है। हम छोटे-छोटे प्रयासों के द्वारा पर्यावरण को संरक्षित करने में सहयोग कर सकते है।

भितिहरवा से मुजफ्फरपुर तक जाएगी बदलो बिहार न्याय यात्रा।

महिला छात्र- नौजवान,मजदूर- किसान,आदिवासी बदलो बिहार न्याय यात्रा में होगें शामिल।

(वर्ल्ड न्यूज फीचर नेटवर्क)
बेतिया। भितिहरवा गांधी आश्रम से 16 अक्टूबर से शुरू होने वाले बदलो बिहार न्याय पद यात्रा की तैयारी को लेकर भाकपा माले जिला कमिटी की बैठक बन बैरिया में हुई। उक्त अवसर पर पत्रकारों को संबोधित करते हुए भाकपा माले केंद्रीय कमिटी सदस्य व सिकटा विधायक वीरेंद्र प्रसाद गुप्ता ने कहा बिहार में दलितों,गरीब गुरबों पर बढ़े सामंती जुर्म ,अत्याचार बढा है, जमीन सर्वे के नाम पर गरीबों को अपने ही जमीन से बेदखल करने की तैयारी मोदी-नितीश की सरकार कर रहीं हैं, जबरन स्मार्ट मीटर लगा कर गरीबों का खून चूसा जा रहा है, मोदी सरकार अंग्रेजी जुल्म से बढ़कर अडानी का खजाना भरने के लिए जबरदस्ती स्मार्ट मीटर लगा रहीं हैं. माइक्रोफाइनांस कंपनियों द्वारा ग्रामीण महिलाओं को कर्ज में फसा कर परेशान कर रहीं हैं, खेती किसानी मे हो रहे लगातार घाटा आदि के खिलाफ बिहार के पांच जगहों से बदलो बिहार न्याय पद यात्रा निकलेगी। पहली यात्रा नवादा जहां हाल ही मे दलितों को उनके टोले पर हमला कर उनके घरों को जला दिया गया है से निकलेगी जिसका नेतृत्व भाकपा माले के राष्ट्रीय महासचिव दीपंकर भट्टाचार्य, सांसद राजा राम सिंह, विधायक अरुण सिंह, विधायक संदीप सौरभ, विधायक गोपाल रवीदास, व अन्य नेता होगें। दूसरी यात्रा सासाराम से आरा तक होगी. इसका नेतृत्व माले राज्य सचिव का. कुणाल और काराकाट के सांसद का. राजाराम सिंह करेंगे. तीसरी यात्रा जयनगर से विभूतिपुर तक होगी. नेतृत्व भाकपा माले केन्द्रीय कमिटी सदस्य का. धीरेंद्र झा व मंजू प्रकाश करेंगे. भीतहरवा आश्रम से मुजफ्फरपुर तक चैथी यात्रा होगी जिसका नेतृत्व विधायक का. वीरेंद्र प्रसाद गुप्ता करेंगे. गोपालगंज - सीवान से छपरा तक पांचवीं यात्रा होगी जिसका नेतृत्व विधायक का. सत्यदेव राम और अन्य नेतागण करेंगे. भाकपा माले जिला कमिटी सदस्य सुनील कुमार राव ने कहा कि न्याय यात्रा के दौरान जगह जगह पर लोग अपनी समस्याओं से सम्बन्धित आवेदन पत्र यात्रा का नेतृत्व कर रहे विधायक वीरेंद्र प्रसाद गुप्ता से मिलकर देगें। बदलो बिहार न्याय यात्रा की समाप्ति 27 अक्टूबर को पटना में बदलो बिहार जन सम्मेलन के रूप में होगी।

छ बच्चे की माँ और अपनी बीबी को गला काटकर हत्या।

(वर्ल्ड न्यूज फीचर नेटवर्क)
पूर्वी चंपारण। ज़िला स्थित लखौरा थाना क्षेत्र के झिटकहिया गांव में एक सनकी पति ने गुस्से में आकर अपने पत्नी का गला काट कर मौत के घाट उतार दिया। पुलिस कप्तान स्वर्ण प्रभात के निर्देश पर पुलिस ने डीएसपी सदर 2 के नेतृत्व में घटना के बाद त्वरित कार्रवाई करते हुए खून से सने दाब सहित आरोपी पति संतोष सहनी को गिरफ्तार कर लिया। किसी बात पर अनबन होने के बाद उक्त पति ने गुरुवार की सुबह दाब से अपनी पत्नी का गला काटकर हत्या कर दिया। मृतका 35 वर्षीय संजू देवी बताई गई है, जिसे 6 बच्चे हैं। सन्तोष व संजू की शादी 17 साल पहले हुई थी।इस बाबत डीएसपी सदर 2 जितेश पांडेय ने बताया कि सन्तोष को गिरफ्तार कर पूछताछ किया जा रहा है। प्रारम्भिक जानकारी के मुताबिक पत्नी का किसी से बातचीत करने को लेकर वह गुस्सा हो गया , इसी को लेकर बात इतनी बढ़ गई कि उसने संजू देवी को मौत के घाट उतार दिया।बहरहाल पुलिस मामले के सभी बिन्दुओं पर जांच कर रही है जिसका खुलासा भी शीघ्र होगा।

भू-माफियाओं ने किया नाले पर अवैध कब्जा

कोर्ट के आदेश पर प्रशासन ने हटवाया अवैध कब्जा

■ कोंच

नगर पालिका प्रशासन द्वारा हाईकोर्ट के आदेश पर नाले की जगह से अवैध क़ब्ज़ा हटाने की कार्यवाही की गयी।

जानकारी के अनुसार मुहल्ला नया पटेल नगर निवासी मनोज यादव ने 2 माह पूर्व हाई कोर्ट में एक जनहित याचिका दाखिल की थी। याचिका में मनोज ने बताया था कि नगर में जालौन रोड से लेकर ग्रीन गार्डन तक करीब डेढ़ किमी लंबा और 4 मी. चौड़ा स्थित सरकारी नाले को पाट कर भूमाफियाओं ने उसके ऊपर डामरीकरण कर अवैध रूप से उस जगह पर क़ब्ज़ा कर लिया है।

उक्त याचिका पर सुनवायी के बाद हाई कोर्ट के आदेश पर नगर पालिका ईओ पवन किशोर मौर्य, आरआई सुनील कुमार, सफ़ाई निरीक्षक हरीशंकर निरंजन और सदर लेखपाल अखिलेश कुशवाहा ने जेसीबी मशीन की मदद से डामरीकरण उखड़वा दिया। ईओ का कहना है कि बारिश का पानी भरे होने के चलते निर्धारित पूरी जगह पर से अवैध क़ब्ज़ा नहीं हटाया जा सका है। पानी सूखते ही पूरी जगह से अवैध क़ब्ज़ा हटवा कर नाले का निर्माण कार्य कराया जाएगा।

जिलाधिकारी ने विभिन्न सड़क निर्माण की विभिन्न कार्य योजनाओं की प्राथमिकता निर्धारण हेतु जनप्रतिनिधियों के साथ की बैठक

■ उरई

शासन के निर्देश पर जिलाधिकारी द्वारा जनप्रतिनिधियों के साथ विकास भवन की रानी लक्ष्मीबाई सभागार में विभिन्न सड़क निर्माण की विभिन्न कार्य योजनाओं की प्राथमिकता निर्धारण हेतु वित्तीय वर्ष 2024- 25 में शहरों में बाईपास, रिंग रोड, फ्लाईओवर, धर्मात मार्गों के चौड़ीकरण एवं सुद्धर्णीकरण विकास क्षेत्र निर्माण का विवरण जनप्रतिनिधियों से प्राप्त प्रस्ताव का परीक्षण कर कार्योजना तैयार कर शासन को भेजने हेतु लोक निर्माण विभाग को निर्देशित किया।

बैठक में लोक निर्माण विभाग से संबंधित कार्य विशेष रूप से शामिल रहे। बारिश में खराब हुई सड़कों की मरम्मत, नवीनीकरण और नई सड़कों, छोटे पुलों के प्रस्ताव समय से तैयार कर कार्ययोजना बनाए जाने के निर्देश दिए गए, इसी प्रकार धर्मार्थ मार्गो पर 5 लाख से अधिक श्रद्धालुओं आवागमन वाले सड़कों को भी लिया गया। ऐसे मजरे जो ढाई सौ की आबादी से कम है और उनकी कनेक्टिविटी नहीं है ऐसे मजरों को भी चिन्हित कर कार्य योजना में शामिल करने हेतु निर्देशित किया।

जिलाधिकारी ने कहा कि वित्तीय वर्ष 2024- 25 में शहरों में बढ़ती आबादी को दृष्टिगत रखते हुए बाईपास, रिंग रोड, फ्लाईओवर, धर्मार्थ मार्गो के चौड़ीकरण एवं सुदृढ़ीकरण विकास क्षेत्र निर्माण का विवरण जनप्रतिनिधियों से प्राप्त कर शासन को भेजा जाए। जिससे कि हर कार्य समय से पूरा हो सके। जनप्रतिनिधियों ने शहरों में बाईपास, रिंग रोड, फ्लाईओवर, धर्मार्थ मार्गो के चौड़ीकरण एवं सुदृढ़ीकरण, अंतरराज्यीय सीमा पर पढ़ने वाले मार्गो का चौड़ीकरण एवं सुदृढ़ीकरण कार्य को प्राथमिकता से कराए जाने पर जोर दिया। कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय योजना अंतर्गत ग्रामीण मार्गो का नवनिर्माण किया जाएगा। नाबार्ड के अंतर्गत तीन किलोमीटर से कम की सड़कों का चयन किया गया। अधिशाषी अभियंता लोक निर्माण अमित सक्सेना ने कहा कि तहसील एवं ब्लाक मुख्यालय को दो लाइन मार्ग से जोड़ने के लिए पंडित दीनदयाल उपाध्याय योजना अंतर्गत चयन किया जाएगा। राज्य योजना अंतर्गत राज्य मार्गो व आदि योजना अंतर्गत जनपद की समस्त सड़कों का चौड़ीकरण, सुदृढ़ीकरण, विशेष मरम्मत, नई सड़कें बनाई जाएगी।

लोक निर्माण विभाग को निर्देशित किया कि ऐसी सड़कों को चिन्हित करते हुए प्राथमिकता पर 15 दिवस में गड्ढा मुक्त कराया जाए, और जनप्रतिनिधियों को सूची उपलब्ध कराएं। जनप्रतिनिधियों ने अपने-अपने विधानसभा वार प्रस्ताव दिए। जिलाधिकारी ने कहा कि जो सड़कें गड्ढा मुक्त हो जाएं तो उनकी जानकारी संबंधित बीडीओ एवं एसडीएम को पूर्व से ही दे दी जाए ताकि उनका सत्यापन समय से कराया जा सके। सड़क सत्यापन के बाद ही भुगतान की कार्रवाई की जाएगी।

इस अवसर पर सांसद नारायण दास अहिरवार, सदर विधायक गौरीशंकर वर्मा, माधौगढ़ विधायक मूलचंद निरंजन, कालपी विधायक विनोद चतुर्वेदी, जिला पंचायत अध्यक्ष घनश्याम अनुरागी, एमएलसी प्रतिनिधि आरपी निरंजन, जल शक्ति मंत्री प्रतिनिधि अरविंद चौहान आदि मौजूद रहे।

गल्ला व्यापारी समिति के चुनाव में नामांकन पत्र दाखिल

कोषाध्यक्ष व सदस्य छोड़ सभी पदो पर सीधा मुकाबला

कोंच। गल्ला व्यापारी समिति के चुनाव में नामांकन दाखिल किए गए जिसमें कोषाध्यक्ष पद पर निर्विरोध चुनाव हुआ है वाकी सभी पदों पर आमने-सामने की टक्कर दिखाई दे रही है। मुख्य चुनाव अधिकारी विनोद अग्निहोत्री, सहायक चुनाव अधिकारी रामकुमार अग्रवाल रम्मू तथा विनय गोयल की देखरेख में गल्ला मंडी सभागार में नामांकन प्रक्रिया संपन्न हुई जिसमें अध्यक्ष पद पर प्रतीक मिश्रा गोलू व दिनेश चंद्र अग्रवाल, उपाध्यक्ष पद पर जितेंद्र सिंह पटेल व लोकेंद्र कुशवाहा, मंत्री पद पर विजल अग्रवाल रोहन व राहुल तिवारी, सहमंत्री पद पर जयप्रकाश मित्तल व जगदीश प्रसाद तथा ऑडीटर पद पर लोकेंद्र कुशवाहा व बलराम ने नामांकन दाखिल किए हैं। कार्यकारिणी के पंद्रह सदस्यों के लिए केवल दस लोगों सतीश राठौर, हेमलता गिरवासिया, जितेंद्र कुमार पाठक, संजीव निरंजन मिस्टर, सुमित कुशवाहा, दिलीप कुमार अग्रवाल, ज्ञानेंद्र सेठ, विनीत कुमार, लोकेंद्र कुशवाहा, महेंद्र कुमार दीवौलिया ने पर्चे भरे हैं जिसके चलते इनका भी निर्विरोध निर्वाचित होना तय है। मुख्य निर्वाचन अधिकारी विनोद ने बताया है कि 11 अक्टूबर शुक्रवार एवं सुबह 11 से 2 बजे तक नाम वापस लिए जा सकेंगे। यदि आवश्यक हुआ तो 17 अक्टूबर गुरुवार को सुबह 10 से अपरान्ह 2.30 बजे तक मतदान और 3 बजे से मतगणना तत्पश्चात परिणाम घोषित कर दिए जाएंगे। बता दें कि इस चुनाव में 177 मतदाता प्रत्याशियों के भाग्य का फैसला कर सकेंगे। चुनाव की तस्वीर नाम वापसी के बाद ही स्पष्ट हो सकेगी।

भदवा का कम्पोजिट विद्यालय जर्जर अवस्था में, बच्चो की जान को हो सकता खतरा

■ जालौन-उरई

कंपोजिट उच्च प्राथमिक विद्यालय भादवा का भवन जर्जर होने के चलते बच्चों के लिए खतरा बना रहता है। कई बार शिकायत के बाद भी कार्रवाई न होने से अभिभावक चिंतित हैं। गांव के प्रधान व प्रधानाध्यापक ने खंड शिक्षा अधिकारी को शिकायती पत्र देकर जर्जर भवन को तुड़वाने और नया भवन बनाए जाने की मांग की है। ब्लॉक क्षेत्र के भदवा गांव के प्रधान जगत नारायण व कंपोजिट उच्च प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक नरेंद्र पाल, अमित शर्मा, राजकुमारी, नेहा पोरवाल, प्रीति सिंह आदि ने खंड शिक्षा अधिकारी को शिकायती पत्र देकर बताया कि उनके गांव का विद्यालय जर्जर हो चुका है। इसी विद्यालय में बच्चे पढ़ने के लिए आते हैं। लेकिन विद्यालय का भवन जर्जर हो चुका है। बारिश के मौसम में पानी टपकता है और जलभराव हो जाता है। जर्जर भवन जगह जगह से चटका हुआ है। ऐसे में यह भवन कभी भी गिरने का डर बना रहता है। कई बार इस भवन को बनवाने की मांग की जा चुकी है। लेकिन अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है। उन्होंने मांग करते हुए कहा कि इस भवन का निरीक्षण कर इसको ध्वस्त कराया जाए और नए भवन का निर्माण कराया जाए। ताकि बच्चे सुरक्षित रह सकें।

बरोदा कलां तेलू प्रकरण अभी भी हालात सामान्य नहीं

- तेलू खाकर भैंस बीमार कुत्ते की हुई मौत
- कई बीमार करा रहे प्राइवेट अस्पताल में इलाज

■ कोंच

तहसील क्षेत्र के बरोदा कलां गांव के तेलू प्रकरण में अभी भी हालात सामान्य नहीं हुए हैं, तेलू खाकर बीमार पड़े ज्यादातर लोगों का इलाज अभी भी विभिन्न अस्पतालों में चल रहा है। कुछ जो घर वापस आ गए थे उनकी हालत फिर से बिगड़ने पर एंबुलेंस बुला कर उन्हे दोबारा से अस्पताल भेजा गया है। इसके साथ ही एक मरीज ऐसा भी निकल कर सामने आया है जो बीमार होने के बाद अस्पताल ही नहीं गया और घर पर ही दवा खा रहा है। इस प्रकार मरीजों की संख्या बढ़कर अब 76 हो गई है। लोगों के बीमार पड़ने के बाद गांव को सेनेटाइज तो कराया गया है लेकिन स्वास्थ्य विभाग की कोई टीम वहां कैंप नहीं कर रही है, एक महिला सिपाही व एक होमगार्ड जरूर ड्यूटी कर रहे हैं।तेलू भोज खाकर बच्चे बूढ़े मिलाकर 75 लोग बीमार पड़ गए थे जिनका विभिन्न अस्पतालों में अभी भी इलाज चल रहा है। हालांकि अस्पताल प्रशासन कुछ मरीजों के स्वास्थ्य होकर घर जाने का दावा कर रहा है लेकिन जब गांव पहुंचकर हकीकत जानने की कोशिश की तो ग्रामीणों ने बताया कि सरकारी अस्पतालों से छुट्टी मिलने के बाद लोग निजी अस्पतालों में भर्ती होकर अपना इलाज करा रहे हैं। गांव वालों के मुताबिक 6 लोग शांति देवी (65), बलराम (69), रामवती (62), अवनी (3), रामकुमार (36), सोनम (12) निवासी खुटैला घर वापस लौटे हैं जिनमें से तीन बलराम, रामवती व राजेंद्र की फिर से तबीयत बिगड़ गई और एंबुलेंस बुला कर उन्हें वापस अस्पताल भेजा गया है। इसके अलावा 8 लोग कस्बे के प्राइवेट नर्सिंग होम में भर्ती हुए हैं। 76 लोग बीमार हो चुके हैं जिनमें से आठ मरीजों के परिजनों ने उन्हें सीएचसी कोंच से हटाकर कस्बे के प्राइवेट नर्सिंग होम में भर्ती कराया है। नरेश, सागर, पूजा, साहिल, सुमन, कैलाशी, सोहिल, शोभा रानी आदि मरीजों के परिजनों ने बताया कि स्वास्थ्य में लाभ न मिलने के कारण प्राइवेट नर्सिंग होम में सिफ्ट किया गया है।

डीएम- एसपी ने किया दशहरा मेला ग्राउंड का निरीक्षण

■ कोंच

जिलाधिकारी राजेश कुमार पांडे एवं पुलिस अधीक्षक डॉ. दुर्गेश कुमार ने कोंच आकर मूर्ति विसर्जन स्थल धनु तालाब एवं दशहरा ग्राउंड जहां राम-रावण और लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध का दृश्यांकन (मेला)होना है, धनुताल मैदान का निरीक्षण कर अधीनस्थों को जरूरी दिशा-निर्देश दिए।

उन्होंने कहा, सभी व्यवस्थाएं दुरुस्त कर लें और रामलीला व दुर्गा जागरण मंचों के कार्यकर्ताओं से संवाद बना कर रखें ताकि उनका यथोचित सहयोग प्रशासन को मिल सके। इस मौके पर उपजिलाधिकारी ज्योति सिंह, तहसीलदार वीरेंद्र प्रसाद गुप्ता, क्षेत्राधिकारी अर्चना सिंह, प्रभारी निरीक्षक अरुण कुमार राय आदि मौजूद थे।

बहुजन समाज के प्रेणता कांशीराम का परिनिर्वाण मनाया गया

■ जालौन-उरई

जन अधिकार पार्टी द्वारा बहुजन समाज के प्रेणता कांशीराम का का परिनिर्वाण मनाया गया। इस मौके पर मंडल सचिव बृजमोहन कुशवाहा एड. के आवास पर आयोजित गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें लोगों ने चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें याद किया तथा अपने विचार रखे।

कार्यक्रम का शुभारंभ पदाधिकारियों ने उन्हें पुष्पांजलि देकर याद कर किया गया। मंडल सचिव ब्रजमोहन कुशवाहा ने कहा कि बहुजन समाज के चेतना के प्रतीक कांशीराम जी के जीवन संघर्ष को हमेशा याद रखना चाहिए तथा उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। आज के दिन उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि उनके आदर्शों पर चलने का संकल्प लेकर दी जा सकती है। उन्होंने कहा कि वर्तमान में कांशीराम जी के सिद्धांतो को जन अधिकार पार्टी के संस्थापक पूर्व मंत्री बाबू सिंह कुशवाहा सांसद जौनपुर एवं राष्ट्रीय अध्यक्षा शिवकन्या जन अधिकार पार्टी के माध्यम से पूरा करने को संकल्पित है। इसलिए हम सबको जन अधिकार पार्टी में सभी वर्गो को जोड़कर मजबूत करने की जरूरत है।जिला सलाहकार अनुरोध सिंह ने कांशीराम जी जीवन परिचय में अपने अनुभव साझा किए।

गोष्ठी में जिला महासचिव मोहन सिंह कुशवाहा,जिला उपाध्यक्ष कृष्ण पाल सिंह खितौली, विधानसभा अध्यक्ष सत्यनारायण कुशवाहा ने भी विचार व्यक्त किए। इस मौके पर चंद्रभान कुशवाहा नगर अध्यक्ष,लल्लूराम जाटव,रामलखन रजक,राम सनेही कुशवाहा,मुहर सिंह कुशवाहा बाबू जी सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

बुधवार को भारतीय ओलंपिक संघ की अध्यक्ष पी टी उषा ने नई दिल्ली में उत्तराखंड में होने वाले 38वें राष्ट्रीय खेल-2025 पर चर्चा के लिए उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से मुलाकात की।

विस चुनाव परिणाम धर्मनिरपेक्ष ताकतों के लिये सबक: माकपा

● नई दिल्ली, वार्ता

मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी ने जम्मू- कश्मीर तथा हरियाणा के विधानसभा चुनाव परिणामों को धर्मनिरपेक्ष ताकतों के लिये एक सबक बताते हुये कहा है कि इनमें भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के खिलाफ संघर्ष जारी रखने की आवश्यकता का संदेश है।

माकपा पोलित ब्यूरो की ओर से बुधवार को जारी एक विज्ञप्ति में कहा गया है कि जम्मू- कश्मीर का चुनाव परिणाम 'लोकतांत्रिक आकांक्षाओं को कुचलने की साजिशों' का मुंहतोड़ जवाब है। पार्टी की विज्ञप्ति में हरियाणा के मामले में हार के लिये जिम्मेदार कारकों पर कांग्रेस को आत्मनिरीक्षण करने की नसीहत दी गयी है। माकपा ने कहा कि जम्मू- कश्मीर में नेशनल कॉन्फ्रेंस तथा उसके सहयोगियों ने केंद्र सरकार के छह वर्षों के शासन के बाद पहली निर्वाचित सरकार बनाने के लिये स्पष्ट बहुमत प्राप्त किया। पार्टी ने कहा कि जम्मू-कश्मीर में लोगों का स्पष्ट जनादेश भाजपा की केंद्र सरकार द्वारा अनुच्छेद 370 को निरस्त करने, राज्य को दो केंद्र शासित प्रदेशों में विभाजित करके राज्य का दर्जा समाप्त करने तथा निर्वाचन क्षेत्रों के 'जोड़-तोड़' वाले परिसीमन के माध्यम से लोगों की लोकतांत्रिक आकांक्षाओं को 'कुचलने की साजिशों' का मुंहतोड़ जवाब है। माकपा ने कहा कि हरियाणा में भाजपा ने कांग्रेस के साथ कांटे की टक्कर में बहुमत हासिल की। भाजपा ने कांग्रेस से 0.6 प्रतिशत वोट के मामूली अंतर से जीत दर्ज की। पार्टी ने कहा है कि इस जीत लिये जातीय जोड़-तोड़ और सांप्रदायिकता की राजनीति की गयी। पार्टी ने यह भी कहा है कि कांग्रेस को हरियाणा के परिणाम के अन्य कारकों के बारे में आत्मनिरीक्षण करना होगा।

बुधवार को पटना में दुर्गा पूजा महोत्सव के दौरान पूजा करते राजद विधायक तेज प्रताप।

सार संक्षेप

बचपन की तस्वीरें शेयर कर भावुक हुई कंगना रनोत

नई दिल्ली: फिल्म इमरजेंसी को लेकर सुर्खियों में बनी हुईं कंगना रनोत ने हाल ही में अपनी बचपन की कुछ तस्वीरें शेयर की हैं, जिनमें वो पोज करती नजर आई हैं। बचपन की खास झलक दिखाते हुए कंगना ने बताया है कि उन्होंने थोड़े-थोड़े पैसे जोड़कर बचपन में एक कैमरा लिया था और वो मौका मिलते ही अपनी तस्वीरें क्लिक करवाने लगती थीं। कंगना ने अपनी एक तस्वीर के साथ लिखा है, 'जब भी मैं पुरानी तस्वीरें देखती हूं, मैं अपनी हंसी नहीं रोक पाती हूं। मैं बहुत फनी बच्ची थी। मैंने अपनी सेविंग्स से एक छोटा सा कैमरा खरीदा था और मैं हमेशा अपनी तस्वीरें क्लिक करवाती रहती थी। जब भी पापा हमें बाहर लेकर जाते थे, तब भले ही वो एक मिनट के लिए कार रोकें, लेकिन मैं तुरंत कार से उतरकर पोज देने लगती थी।'

कंडाघाट में पलटी उत्तराखंड परिवहन की बस, 35 यात्री घायल

सोलन: हिमाचल प्रदेश के कंडाघाट में उत्तराखंड परिवहन की एक बस ब्रेक फेल होने की वजह से अनियंत्रित होकर पलट गई जिसमें 35 लोग घायल हो गये। बताया जा रहा है कि बस शिमला से टनकपुर जा रही थी और सवारियों से खचाखच भरी हुई थी। इस बस में करीब 60 यात्री सवार थे। हादसे में करीब 35 यात्रियों को हल्की चोटें आई हैं जिनमें से तीन गंभीर रूप से घायलों में से एक को शिमला और दो अन्य गंभीर घायलों को सोलन के क्षेत्रीय अस्पताल में इलाज के लिए रेफर किया गया है। स्थानीय पुलिस और जनता ने मौके पर पहुंचकर घायलों को कंडाघाट सरकारी अस्पताल पहुंचाया। इस हादसे के बाद एनएच-5 पर दुर्घटनाओं की बढ़ती संख्या पर फिर से सवाल खड़े हो गए हैं। पिछले नौ महीनों में यहां 140 सड़क दुर्घटनाएं हो चुकी हैं, जिनमें 14 लोगों की मौत हो गई है और 250 से ज्यादा लोग घायल हो चुके हैं। ऐसा कोई दिन नहीं जाता जब परमाणु से लेकर कैथलीघाट के बीच दुर्घटना की खबर सामने न आए। बस में सवार एक यात्री ने बताया कि हादसे के वक्त बस की गति तेज थी और अचानक ब्रेक फेल होने से बस अनियंत्रित होकर पलट गई। फिलहाल प्रशासन दुर्घटना के कारणों की जांच कर रहा है।

मेरे स्टार प्रचारक मेरे कार्यकर्ता हैं : अनिल विज

अंबाला: हरियाणा के पूर्व गृह मंत्री अनिल विज ने बुधवार को कहा कि उन्हें स्टार प्रचारक की जरूरत नहीं है और उनके स्टार प्रचारक उनके कार्यकर्ता हैं। हरियाणा विधानसभा चुनाव में अंबाला छावनी सीट से कड़े मुकाबले में चुनाव जीते अनिल विज ने कहा कि उन्होंने आठ चुनाव लड़े हैं और उनमें से सात चुनाव जीते हैं। एक चुनाव में पूर्व उप प्रधानमंत्री लाल कृष्ण आडवाणी प्रचार के लिये आये थे, उसके अलावा उन्होंने कभी किसी स्टार प्रचारक को नहीं बुलाया क्योंकि उनके स्टार प्रचारक उनके कार्यकर्ता हैं।

गाजा में हुए इजराइली हमले में 45 लोगों की मौत, शरणार्थी शिविर बना नया निशाना

इजराइली। सेना ने प्रभावित गाजा पट्टी में नए हमले किए। इस हमले में पिछले 24 घंटों में 45 लोग मारे गए। इजराइल ने क्षेत्र के उत्तरी भाग में जबालिया शरणार्थी शिविर पर हमला किया था। इजरायली सेना ने कहा कि हमले का उद्देश्य हमास लड़ाकों को जबालिया से आगे हमले करने से रोकना और उन्हें फिर से संगठित होने से रोकना है। इजराइल द्वारा लोगों को जबालिया और आसपास के इलाकों से हटने का आदेश देने के बावजूद, फिलिस्तीनी और संयुक्त राष्ट्र के अधिकारियों ने कहा कि गाजा पट्टी में भागने के लिए कोई सुरक्षित जगह नहीं है। फिलिस्तीनी नागरिक आपातकालीन सेवा ने कहा कि उसे अपुष्ट रिपोर्ट मिली है कि जबालिया और उत्तरी गाजा के अन्य इलाकों में दर्जनों फिलिस्तीनी मारे गए होंगे, लेकिन इजरायली बमबारी के कारण वह उन तक पहुंचने में असमर्थ है। शव प्राप्त करने वाले अल-अहली अस्पताल के अनुसार, बुधवार तड़के हवाई हमले में दो महिलाओं और दो बच्चों सहित कम से कम नौ लोग मारे गए। फिलिस्तीनी नागरिक आपातकालीन सेवा ने कहा कि उसे अपुष्ट रिपोर्ट मिली है कि जबालिया और उत्तरी गाजा के अन्य इलाकों में दर्जनों फिलिस्तीनी मारे गए होंगे, लेकिन इजरायली बमबारी के कारण वह उन तक पहुंचने में असमर्थ है। इजराइल ने युद्ध के शुरूआती हफ्तों में गाजा शहर सहित उत्तरी गाजा को बड़े पैमाने पर खाली करने का आदेश दिया था, लेकिन माना जाता है कि सैकड़ों हजारों लोग वहीं रह गए थे। इजराइल ने इस महीने की शुरूआत में उन निदेशों को दोहराया, जिसमें लोगों को तट के साथ एक विस्तारित मानवीय क्षेत्र में दक्षिण की ओर भाग जाने के लिए कहा गया था, जहां पहले से ही हजारों की संख्या में अवैध तम्बू शिविरों में ठूंस कर रखा गया है।

राष्ट्रपति बाइडन ने इजराइल के प्रधानमंत्री नेतन्याहू से फोन पर बात की

अमेरिका। के राष्ट्रपति जो बाइडन ने बुधवार को इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने फोन पर बातचीत की। यह बातचीत ऐसे समय में हुई है, जब इजराइल ने हाल में लेबनान में जमीनी सैन्य कार्रवाई शुरू की और ईरान के बैलेस्टिक मिसाइल हमले की जवाबी कार्रवाई पर विचार कर रहा है। नेतन्याहू के कार्यालय ने पुष्टि की है कि प्रधानमंत्री ने हाल ही में अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से भी बात की थी। प्रधानमंत्री कार्यालय के मुताबिक, ट्रंप ने पिछले सप्ताह नेतन्याहू को फोन किया और इजराइल द्वारा हिजबुल्ला के खिलाफ

चलाए गए दृढ़ अभियानों के लिए उन्हें बधाई दी। रिपब्लिकन उम्मीदवार ट्रंप डेमोक्रेटिक पार्टी की उम्मीदवार कमला हैरिस के खिलाफ राष्ट्रपति पद की दौड़ में हैं।

ईरान पर हमले का डर, इजरायल संग भयंकर युद्ध की आशंकाओं के बीच कहां पहुंची भारत की नौसेना

ईरान। ने इजरायल पर मिसाइल हमला किया था। इजरायल के आसमान में गूंजने वाले मिसाइलों के शोर ने पूरी दुनिया को हिला कर रख दिया। ईरान ने इस हमले को अपना पहला बदला बताया। इस हमले के बाद पूरे मीडिल ईस्ट में तनाव चरम पर है। कहा जा रहा है कि यहां के हालात कभी भी बिगड़ सकते हैं। ऐसे में कई देश कई तरह की तैयारियां कर रहे हैं। एक तस्वीर सामने आई है जिसे भारत की तैयारी के तौर पर देखा जा रहा है। एक तरफ भारत के कुछ शिप ईरान पहुंचे हुए हैं। वहीं दूसरी तरफ भारत के कुछ शिप ओमान में भी हैं। यानी की मीडिल ईस्ट में भारत इस वक्त काफी एक्टिव है। खासकर भारत की नौसेना औक कोस्ट गार्ड और इसकी बड़ी वजह भी है। इजरायली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने कहा कि ईरान ने ये मिसाइल दागकर बहुत बड़ी गलती की है। ईरान को इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी। यानी इजरायल की तरफ से ईरान को जवाब दिया जाएगा। इजरायल के हमले के बाद कैसी स्थिति परिस्थिति होगी ये कोई नहीं जानता। यही वजह है कि सारे देश अपनी अलग अलग तरह की तैयारियां कर रहे हैं। हालांकि इस तरह की तैयारी को लेकर कोई तरह का बयान सामने नहीं आया है। लेकिन जानकारी के मुताबिक भारतीय नेवल शिप और इंडियन कोस्ट गार्ड शिप वीरा पहले ट्रेनिंग स्काड्रन के लिए भारतीय नेवी की तरफ से लॉन्ग रेंज ट्रेनिंग डिप्लॉयमेंट के लिए मस्कट ओमान पहुंचे। यहां उनका स्वागत किया गया और एक तरह से ये दोनों देशों के बीच मजबूत संबंधों को सुरक्षा व्यवस्था को लेकर सशक्तता के साथ दशार्ता है। मैरिटाइम डेमोन में ओमान के साथ भारत के मजबूत रिश्तों में भी ये अहम किरदार निभाएगा। भारतीय नौसेना बंदरगाह पर बातचीत, संयुक्त अभ्यास और प्रशिक्षण आदान-प्रदान सहित विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से ओमान की रॉयल नेवी के साथ जुड़ेगी।

पूर्व विधायक धनेश्वर माझी का निधन

भुवनेश्वर : ओडिशा में आदिवासी नेता एवं पांच बार के विधायक और पूर्व राज्यसभा सदस्य धनेश्वर माझी का बुधवार को कालाहांडी जिले के केसिगा स्थित एक अस्पताल में उपचार के दौरान निधन हो गया। वह 83 वर्ष के थे। पारिवारिक सूत्रों ने बताया कि केसिगा अस्पताल में इलाज के दौरान उन्होंने अंतिम सांस ली। कालाहांडी जिले के केसिगा और नारला विधानसभा क्षेत्रों से पांच बार विधायक रहे माझी 1971, 1974, 2000, 2004 और 2014 में ओडिशा विधानसभा के लिए चुने गए। वह 1978 से 1984 तक जनता पार्टी के सदस्य के रूप में राज्यसभा के सदस्य रहे। अपने लम्बे राजनीतिक जीवन के दौरान श्री माझी जनता पार्टी, स्वतंत्र पार्टी, बीजू जनता दल और भारतीय जनता पार्टी से जुड़े रहे।

बांग्लादेश के पांच मछुआरों का अपहरण

ढाका : बंगलादेश के दक्षिणी शहर टेकनाफ के निकट नाफ नदी में मछली पकड़ते समय म्यांमार की अराकान सेना के संदिग्ध सदस्यों ने पांच मछुआरों का अपहरण कर लिया है। स्थानीय अखबार 'ढाका ट्रिब्यून' ने बुधवार को बताया कि यह घटना कॉक्स बाजार जिले के नयापारा इलाके में सोमवार अपराह्न तब हुई, जब मछुआरे नाफ नदी में मछली पकड़ने गये। रिपोर्ट के मुताबिक अभी तक मछुआरों को वापस नहीं किया गया है। टेकनाफ में बीजीबी के कमांडर लेफ्टिनेंट कर्नल मोहिउद्दीन अहमद ने पुष्टि की कि बीजीबी मछुआरों की वापसी सुनिश्चित करने के लिए म्यांमार के अधिकारियों के साथ बातचीत कर रहा है। सुब्रंग यूनियन परिषद के सदस्य अब्दुस सलाम ने कहा कि इस क्षेत्र के पांच मछुआरों को म्यांमार के नागरिकों ने पकड़ लिया।

बांग्लादेश के पूर्व सांसद माणिक गिरफ्तार

ढाका : बंगलादेश के पूर्व सांसद मोहिबुर रहमान माणिक को रैपिड एक्शन बटालियन (आरएबी) ने जुलाई-अगस्त में देश में हुए कोटा विरोधी छात्र आंदोलन में शामिल लोगों पर हमला करने के आरोप में गिरफ्तार किया है। इस आंदोलन ने पूरे देश को हिलाकर रख दिया था। स्थानीय अखबार 'ढाका ट्रिब्यून' ने बुधवार को बताया कि अवामी लीग के नेता माणिक को मंगलवार शाम ढाका के वसुंधरा आवासीय इलाके से गिरफ्तार किया गया। आरएबी के कानूनी एवं मीडिया विग के सहायक निदेशक एएनएम इमरान खान ने इस बात की पुष्टि की। पूर्व सांसद मोहिबुर रहमान माणिक माणिक पर भेदभाव विरोधी छात्र आंदोलन पर कथित रूप से हमला करने के लिए सुनामगंज सदर थाने में एक शिकायत दर्ज है।

बुधवार को पटना में दुर्गा पूजा सामुदायिक पंडाल में सेल्फी लेते श्रद्धालु।

लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई है : विनेश फोगाट

कहा- हमें अभी और मजबूत होकर संघर्ष जारी रखना होगा

● चंडीगढ़,

हरियाणा विधानसभा चुनाव से राजनीतिक मैदान में उतरीं और जुलाना से कड़े मुकाबले में जीतीं पहलवान विनेश फोगाट ने बुधवार को जुलाना की जनता का आभार व्यक्त करते हुये कहा कि लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई है।

उन्होंने सोशल मीडिया 'एक्स' पर लिखा है कि हमें अभी और मजबूत होकर संघर्ष जारी रखना होगा, जब तक कि हम जैसे आम लोगों को न्याय मिलना शुरू नहीं होता। हरियाणा के हर नागरिक से मेरी

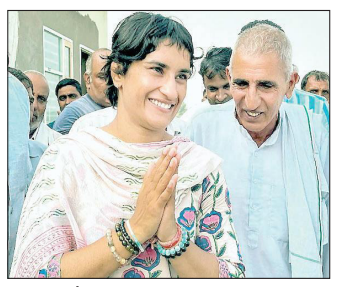

अपील है कि हम इस कठिन रास्ते पर एकजुट रहें, अपने हक और न्याय के लिए आवाज़ उठाते रहें। यह सिर्फ एक शुरुआत है, हमें अपनी ताकत और संकल्प को बनाये रखना है ताकि हर आम आदमी को उसका अधिकार और न्याय मिल सके। उन्होंने जीत के लिये जुलाना वासियों, के साथ प्रदेश और देश के कोने-कोने से मेरी जीत की प्रार्थना करने वाले सभी लोगों का धन्यवाद किया है।

उन्होंने लिखा है कि इस न्याय के दंगल में जीत हासिल करवाने के लिए जुलाना हल्के की समस्त 36 बिरादरी का बहुत-बहुत आभार, जिन्होंने अपने साथ और विश्वास से मुझे ताकत दी। यह मेरी नहीं, आप सभी की जीत है। मैं आपको आश्वस्त करती हूँ कि आप सभी के लिए, जुलाना की प्रगति के लिये मैं निरंतर प्रयास करती रहूंगी। आप सभी के द्वारा प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से दिए गए अथक परिश्रम, समर्पण और साथ के लिए मैं सदैव आभारी रहूंगी। महिला पहलवानों के यौन उत्पीड़न के खिलाफ पहलवानों के आंदोलन का चेहरा बनी विनेश फोगाट पेरिस ओलिंपिक्स में वज़न मामूली ज्यादा होने की वजह से चूक गयीं थी।

पुत्र भव्य की हार से भावुक हुए कुलदीप बिश्नोई

● हिसार,

हरियाणा में हिसार जिले की आदमपुर विधानसभा सीट से पहली बार पूर्व मुख्यमंत्री भजनलाल के परिवार के किसी सदस्य की हार के बाद कुलदीप बिश्नोई समर्थकों को संबोधित करते हुये बुधवार को भावुक हो गये और रो पड़े।

बिश्नोई को रोते देखकर समर्थकों ने चौधरी भजनलाल अमर रहें के नारे लगाये। पुत्र भव्य बिश्नोई ने पिता को को सांत्वना दी। आदमपुर सीट पर पहली बार 1967 में चौधरी भजनलाल जीते थे। तब से लेकर अब तक इस सीट पर भजनलाल परिवार के सदस्य ही जीतते आये हैं। इस चुनाव में भजनलाल के पूर्व सहयोगी रामजी लाल के

भतीजे और पूर्व आईएएस अधिकारी चंद्र प्रकाश ने कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में इस अभेद किले को भेद दिया और कड़े मुकाबले में भाजपा के टिकट पर लड़े विधायक भव्य को 1768 वोटों से पराजित कर दिया दिया। बिश्नोई के कांग्रेस से अलग होने के बाद 2022 के उपचुनाव में भव्य ने भाजपा प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ा और जीता था।

आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली हमारी धरोहर: मुर्मू

राष्ट्रपति ने किया अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान का दौरा

● नई दिल्ली,

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने बुधवार को राष्ट्रीय राजधानी में अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान का दौरा किया और संस्थान के सातवें स्थापना दिवस समारोह में भाग लिया।

इस अवसर पर दिल्ली के उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना, केंद्रीय आयुष मंत्री प्रतापराव जाधव, आयुष सचिव वैद्य राजेश कोटेचा और संस्थान निदेशक प्रोफेसर (डॉ.) तनुजा नेसारी सहित आयुष मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। समारोह के बाद राष्ट्रपति ने आयुष औषधि केंद्र कार्यक्रम का शुभारंभ और शाश्वत आयुष प्रदर्शनी का अनावरण किया। आयुष औषधि केंद्र का उद्देश्य सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण आयुर्वेदिक दवाइयाँ सुलभ कराना और आयुर्वेद के माध्यम से स्वास्थ्य सेवा प्रदान करना है। संस्थान ने हाल के वर्षों में देशभर में सात नए स्वास्थ्य और कल्याण केंद्र स्थापित किए हैं और 44 विशेष क्लीनिकों के माध्यम से 27 लाख से अधिक मरीजों का इलाज किया है। कुल 73 राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। राष्ट्रपति ने कहा कि आयुर्वेद विश्व की सबसे प्राचीन समग्र चिकित्सा प्रणालियों में से एक है। यह मन, शरीर और आत्मा के बीच सामंजस्य स्थापित करने पर जोर देता है। आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली हमारी धरोहर है ।

नाराज किसानों ने किया रोड-जाम, दिया धरना

फतेहाबाद: हरियाणा में फतेहाबाद जिला के टोहाना में धान की खरीदी नहीं होने से नाराज किसानों ने बुधवार को रोड जाम कर धरना दिया।

किसानों ने टोहाना के रतिया रोड पर एडिशनल अनाज मंडी के बाहर सड़क पर धरना दिया। जिस कारण यातायात बाधित हो गया। किसानों ने बताया कि बार-बार तारीख पर तारीख दी जा रही है, लेकिन धान की खरीद नहीं की जा रही। अगर किसान कम रेट में दान देने को तैयार है, तो तुरंत ढेरी को उठा लिया जाता है। किसानों ने रोष प्रकट करते हुए बताया कि 23 तारीख से धान की खरीद शुरू हुई थी। उसके बाद बारदाना न होने की बात कह कर खरीद नहीं की गई। फिर 27 तारीख का आश्वासन दिया गया, लेकिन 27 तारीख को भी खरीद नहीं हुई।

संपादकीय

गठबंधन में दरार

हरियाणा विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को मिली हार के बाद इंडिया गठबंधन में दरार पड़ती दिख रही है। सहयोगी पार्टियों ने तेवर दिखाने शुरू कर दिए हैं। आम आदमी पार्टी ने आगामी दिल्ली विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के साथ गठबंधन से इनकार कर दिया है। हरियाणा चुनाव में सीट बंटवारे के दौरान कांग्रेस की ओर से नजरअंदाज किए जाने के बाद यह फैसला लिया है। आप और कांग्रेस का हरियाणा में गठबंधन हो जाता तो तस्वीर दूसरी हो सकती थी। आप इंडिया गंठबंधन का हिस्सा है इसलिए आप को हरियाणा में कुछ सीटें तो देनी ही चाहिए थी। यही गठबंधन धर्म भी होता। उधर, यूपी में समाजवादी पार्टी ने भी 10 सीटों पर होने वाले उपचुनाव में कांग्रेस से सलाह किए बगैर छह उम्मीदवारों की घोषणा कर दी है। कहा जाता है कि सपा कांग्रेस दो सीटें देना चाहती है, जबकि कांग्रेस पांच सीटों पर दावा ठोक रही है। सवाल है कि क्या यूपी में भी सपा और कांग्रेस का गठबंधन खटाई में पड़ गया है? आगामी महीनों में महाराष्ट्र, झारखंड और दिल्ली में चुनाव होने हैं। क्या महाराष्ट्र में भी महाविकास अघाड़ी में दरारा पैदा हो सकती हे। इसमें कोई शक नहीं कि कांग्रेस भाजपा से सीधा मुकाबला करने में सक्षम नहीं है। यह मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में दिख चुका है। अब हरियाणा में उसकी अप्रत्याशित हार ने कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के मनोबल पर असर डाला है। लोकसभा चुनाव में कांग्रेस की सफलता के बाद लगा था कि कांग्रेस मजबूत हो रही है, लेकिन हरियाणा की हार ने उसे फिर कमजोर कर दिया है। हरियाणा में कोई नहीं कह रहा था कि कांग्रेस हार रही है। हरियाणा लूज करने के बाद कांग्रेस गठबंधन के सहयोगियों से मोल-भाव करने की हैसियत में नहीं रहेगी। यह दिल्ली में दिख गया और उत्तर प्रदेश में भी। महाराष्ट्र में क्या होगा, यह आने वाले दिनों में पता चल जाएगा। कांग्रेस के नेता चुनाव आयोग पर निशाना साध रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट जाने की बात हो रही है, लेकिन कुछ होगा, ऐसा संभव नहीं दिखता। अब कांग्रेस को आत्ममंथन की जरूरत है कि क्यों राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, पंजाब, उत्तराखंड की तरह हरियाणा की जीती बाजी भी उसने गंवा दी। कार्यकर्ता तो उत्साहित थे कि राहुल-प्रियंका ने यहां पूरा जोर लगा दिया था। लेकिन कांग्रेस के क्षत्रपों की महत्वाकांक्षा ने सब कुछ खत्म कर दिया। कांग्रेस को बूढ़े हो चले हुड्डाओं और कमलनाथों से निजात पानी होगी। नया नेतृत्व तैयार करना होगा।

हरियाणा में हारने के बाद कांग्रेस गठबंधन के सहयोगियों से मोल-भाव करने की हैसियत में नहीं रहेगी। यह दिल्ली में दिख गया और उत्तर प्रदेश में भी नजर आ रहा है।

पाठकवाणी

आप से गठबंधन न करने का नतीजा

राहुल गांधी ने हरियाणा चुनाव के नतीजे पर कहा है कि नतीजें हैरान करने वाले हैं। वाकई में सभी राजनीतिज्ञों, पत्रकारों व विश्लेषकों को हरियाणा के चुनाव परिणामों ने हैरान कर दिया है। हालांकि राहुल गांधी तथा उनकी बहन प्रियंका गांधी करें भी तो क्या करें! वे अपनी तरफ से कांग्रेस में प्राण वायु फूंकने की पुरजोर दमखम के साथ कोशिश कर रहे हैं। लेकिन साथ में चाहे राष्ट्रीय स्तर पर या क्षेत्रीय स्तर पर जो भी कद्दावर नेता या पदाधिकारी है, उन्हें भी तो पार्टी हित में निःस्वार्थ भाव से काम करना चाहिए। जब सभी कुर्सी के मोह में आकर अलग - अलग-अपनी डफली, अपना राग अलापेंगे तो भला पार्टी कैसे मजबूत होगी! हरियाणा चुनाव में कांग्रेस जीती नहीं उसके पहले ही मुंह फुलाकर कोप भवन में खबरें सुर्खियां बटोर रही थीं कि 'गांव बसा नहीं की, लुटेरे तैयार बैठे हैं।' जब राहुल गांधी जोर देकर कह रहे थे कि जैसे भी हो वैसे आम आदमी पार्टी से गठबंधन कर लो ताकि इंडिया गठबंधन का धर्म भी पालन हो जाएगा और खामियाजा भुगतना नहीं पड़ेगा। चुनावी विश्लेषक बता रहे हैं कि अगर आप से गठबंधन होता तो हाल फिलहाल के परिणाम के अनुसार पांच सीटों में कांग्रेस की जीतने की संभावना होती। सभी कांग्रेसियों को गिरेबान में झांकने की जरूरत है। उन्हें सिर्फ अपना स्वार्थ दिखता है।

-हेमा हरि उपाध्याय 'अक्षत', उज्जैन, मध्यप्रदेश

कुछ खास

चुनाव हमारे पक्ष में होने के बावजूद परिणाम ना आने से हम भी व्यथित हैं। लेकिन याद रखिएगा, हमारा वजूद एक हार या एक जीत से तय नहीं हो सकता। हमारी लड़ाई उन ताकतों से है, जिनको साम दाम दंड भेद हर तरह के हथकंडे अपनाने से कोई परहेज नहीं है।

-सुप्रिया श्रीनेत, कांग्रेस प्रवक्ता

आज का ट्वीट

''सरकार चुनाव में भी अपने हिसाब से खेल खेलती है। ऐसे में निष्पक्षता की उम्मीद करना बेकार है। इस सरकार में निष्पक्ष चुनाव छोड़िए, निष्पक्ष पर्चा भरना भी संभव नहीं...''

-शिवपाल सिंह यादव

साइबरवर्ल्ड

हरियाणा ने चौंकाया

हरियाणा और जम्मू-कश्मीर दोनों राज्यों में क्या भाजपा सत्ता हासिल कर पाएगी या कांग्रेस उसे मात दे देगी, ये सवाल लंबे वक्त से सत्ता के गलियारों में तैर रहा था। दोनों ही राज्यों में भाजपा की प्रतिष्ठा दांव पर लगी थी, क्योंकि हरियाणा में पिछले 10 बरसों से भाजपा का शासन रहा और वहीं जम्मू-कश्मीर में पूरे दस साल बाद चुनाव करवाए गए। इस बीच 5 अगस्त 2019 को जब भाजपा ने अचानक यह ऐलान किया कि जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 और धारा 35 ए वापस लिया जा रहा है और इसके साथ ही उसे दो हिस्सों में बांटकर जम्मू-कश्मीर और लद्दाख को दो केंद्र शासित प्रदेशों में तब्दील किया जा रहा है, तब पूरा देश स्तब्ध रह गया था। इसे जम्मू-कश्मीर के लोगों के साथ आजादी के बाद किए गए वादे को तोड़ने की तरह देखा गया। लेकिन भाजपा ने राष्ट्रवाद की आड़ में यह वादाखिलाफी की और दावा किया कि उसके इस फैसले में जनता की भी मर्जी है। हालांकि अब जो नतीजे सामने आए हैं, उनसे पता चलता है कि न जम्मू, न कश्मीर की जनता को भाजपा का फैसला मंजूर था। नतीजों को देखकर यह कहा जा सकता है कि इस बार कांग्रेस भाजपा पर भारी पड़ गई। हालांकि दो राज्यों में एक में जीत और एक में हार का विश्लेषण तो यही होता है कि मुकाबला बराबरी पर छूटा है। जम्मू-कश्मीर में कांग्रेस और नेशनल कांफ्रेंस के गठबंधन को जीत मिली तो भाजपा को हरियाणा में तीसरी बार सत्ता में आने का मौका मिला है। हरियाणा में भी शुरुआती रुझान कांग्रेस के पक्ष में ही थे और कांग्रेस अब भी यही मान रही है कि ईवीएम के जरिये कोई खेल हुआ है, जिस वजह से जीती हुई बाजी हाथ से निकल गई है। कांग्रेस का कहना है कि जिन ईवीएम में 99 प्रतिशत चार्जिंग थी, उनमें बीजेपी को जीत मिली, और जिनमें 70 प्रतिशत चार्जिंग थी यानी जो मशीनें सामान्य तरीके से चल रही थीं, उनमें कांग्रेस जीती। कांग्रेस ने हरियाणा में हुई इस संभावित गड़बड़ी की शिकायत बाकायदा चुनाव आयोग से भी की है। अब देखना होगा कि चुनाव आयोग आगे इस पर कोई संज्ञान लेकर कार्रवाई करता है या सब कुछ ठीक है, का रटा रटाया जवाब देता है।

-**पलाश सुरजन** की फेसबुक वॉल से

नजरिया

हरियाणा ने जातिवादी राजनीति को नकारा

प्रियंका सौरभ

जात-पात की राजनीति चुनाव में जीत की गारंटी नहीं, चुनाव में राजनीतिक दलों ने जातीय समीकरणों को ध्यान में रखते हुए ही उम्मीदवार उतारे थे, मगर जाट और गैर जाट का फैक्टर ज्यादा काम नहीं कर पाया और मतदाताओं ने दूसरी जातियों के प्रत्याशियों को चुनकर विधान सभा भेजा।

2019 की तरह हरियाणा में एग्जिट पोल फिर फेल। साल 2019 के हरियाणा चुनावों में एग्जिट पोल ने अनुमान लगाया था कि भाजपा को 61 सीटें मिलेंगी जबकि कुछ एग्जिट पोल में 75-80 सीटों जीतने का भी अनुमान लगाया गया था। हालांकि नतीजे बिल्कुल अलग आए। एग्जिट पोल्स के अनुमान में हरियाणा में कांग्रेस को भारी जीत बताई गई। हालांकि यह सारे अनुमान मंगलवार को धराशायी हो गए। हरियाणा में भाजपा बड़ी पार्टी बनकर उभरी। पूरे हरियाणा में मंगलवार को पहले एक घंटे जलेबी बिकी और बाद में पूरा दिन पकौड़े बिके। दुकानदार के मजे ही मजे। 'हरियाणा में' जबकि कांग्रेस के 90 में से 60 सीटें जीतने का दावा धराशायी हो गया। हरियाणा में भाजपा 90 में से 47 से ज्यादा सीटों पर बढ़त के साथ बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। हालांकि एग्जिट पोल के सभी अनुमान मंगलवार को विधानसभा चुनाव 2024 के रिजल्ट आने के बाद धराशायी हो गए। हम सभी एग्जिट पोल्स ने, जिन्होंने मतदान के बाद हरियाणा में कांग्रेस को बहुमत मिलना बताया था। आठ में से एक भी एग्जिट पोल की भविष्यवाणी सच साबित नहीं हुई है। सभी एग्जिट पोल्स में भाजपा पार्टी को 20 से 30 सीटें मिलने का अनुमान लगाया गया था, जबकि कांग्रेस को पूर्ण बहुमत दिया गया था। इस साल के लोकसभा चुनाव में अधिकांश एग्जिट पोल ने भाजपा के नेतृत्व वाले सत्तारूढ़ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) की बंपर जीत की भविष्यवाणी की थी। साथ ही अनुमान लगाया था कि भाजपा अकेले अपने दम पर बहुमत के आंकड़े से कहीं ज्यादा सीटें जीतेगी जिसमें एनडीए को 361 से 401 सीटें मिलने का अनुमान लगाया गया था। हालांकि, एग्जिट पोल के परिणाम गलत साबित हुए। एनडीए को 293 सीटें मिलीं और भाजपा के खाते में 240 सीटें आईं।

आज से बीस दिन पहले मैंने अनुमान लगाया था कि हरियाणा में बीजेपी 47 से ज्यादा सीट्स लेगी और ये बिलकुल सच साबित हो रहा है। कारण बीजेपी ने हर वर्ग के लिए अपना शत प्रतिशत दिया। जनता को वो सब मिला जो जनता चाहती थी। कुछ कमियाँ थीं जो सैनी साहब ने आकर पूरी कर दीं। मुझे लगता है कि ये कमियाँ थोड़ा और पहले पूरी की होतीं तो बीजेपी और ज्यादा सीटों के साथ आती। खैर, विपक्ष भी जरूरी होता है लोकतंत्र में ताकि सत्ता की आंखें खुली रहें, वो धृतराष्ट्र न बन जाएँ। कांग्रेस ने दो दिन खूब खुशियाँ मनाई, किसने रोका था, मना भी लेनी चाहिए। लेकिन अतिआत्मविश्वास बहुत घातक होता है, जो कांग्रेस के सर चढ़कर बोला दो दिन। इनको क्या पता था कि बिस्मार्क को पटकनी देगी बीजेपी। शाह की चाल बड़ी शांत है, मगर विजेता जैसी है। कौटिल्य भी हरियाणा के परिणाम देखकर सोच रहे होंगे कि मैं क्या पढ़ना भूल गया। एग्जिट पोल ने जैसी हवा छोड़ी थी, वह बिलकुल उल्टा हुआ है। इसका मतलब मीडिया और उसकी एजेंसियाँ जनता के हित में काम क्यों नहीं कर रही या इनको केवल अपनी टीआरपी और विज्ञापनों से मतलब है। ये एक तरह से धंधा है, इनको ये सब अफवाह फैलाने का पैसा मिलता होगा। एग्जिट पोल वालों कभी तो सही पोल दिखाओ,कांग्रेस वालों को डर था कि लोकसभा वाले एग्जिट पोल की तरह ये भी झूठ ना हो और झूठा साबित हो गया। खुले आम सट्टा चल रहा है, क्या ये कानून सही है? अगर नहीं, तो एजेंसियां इनके खिलाफ कार्रवाई क्यों नहीं करतीं?

जात-पात की राजनीति अब चुनाव में जीत की गारंटी नहीं, चुनाव में राजनीतिक दलों ने जातीय समीकरणों को ध्यान में रखते हुए ही उम्मीदवार उतारे थे, मगर जाट और गैर जाट का फैक्टर ज्यादा काम नहीं कर पाया और मतदाताओं ने अच्छी छवि वाले दूसरी जातियों के प्रत्याशियों को भी चुनकर विधान सभा भेजा। मोदी लहर पर सवार भाजपा ने इसका पूरा लाभ उठाते हुए न केवल चुनाव में 48सीटें जीती, बल्कि विधानसभा चुनाव में भी सबसे ज्यादा सीटें हासिल करते हुए प्रदेश में सरकार बनाई है। लोकतंत्र में सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों का जिंदा रहना जरूरी है। ताकि सामाजिक मुद्दों पर सामाजिक न्याय सभी को मिल सके। साथ ही क्षेत्र के इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट में तीव्रता आ सके। राजनीति सामाजिक बदलाव के आयामों पर होनी चाहिए। जैसे नौकरी, व्यवसाय, रूरल इंफ्रास्ट्रक्चर, महंगाई, संवैधानिक संस्थाओं की रक्षा, इन सब पर कौन सी राजनीतिक पार्टी खरी उतरती है, ये भविष्य के गर्भ में चुनाव से सिद्ध होती है। चौधर के तो लात मार दी भाइयो हरियाणा की जनता नै.. 36 बिरादरी की सरकार बनेगी, हरियाणा ने सिद्ध कर दिया है कि अभी भी वहां की मिट्टी में कुरुक्षेत्र की भावना शेष है। हरियाणा की जनता की समझ की बदौलत भाजपा तीसरी बार आ चुकी है। हरियाणा के जनादेश ने देश को एक बड़ा संकेत दिया है, उसकी तरफ भी देश भर के लोगों को ध्यान देना चाहिए। हरियाणा में क्षेत्रीय पार्टियां पूरी तरह साफ हो गई हैं। हरियाणा ने फिलहाल क्षेत्रवाद और जातिवाद को नकार दिया है। जातिवाद को नकारने वालों को हृदय से प्रणाम।

'इंडिया' में कमजोर होगी कांग्रेस

शाहीन सबा

अधिकतर क्षेत्रीय दल मानते हैं कि वे कितना भी एकजुट हो जाएं, कांग्रेस ने अपनी स्थिति नहीं सुधारी तो लड़ाई का मतलब नहीं। उनका तर्क है कि 2019 आम चुनाव में लगभग 225 लोकसभा सीटों पर कांग्रेस-भाजपा का सीधा मुकाबला हुआ जिनमें 200 से अधिक सीटें भाजपा ने जीतीं। 2024 में भी भाजपा ने अधिकतर सीटें कांग्रेस के साथ सीधे मुकाबले में जीतीं।

किसी भी चुनाव में यदि दो दल एक दूसरे के सामने उतरते है तो यह निश्चित है कि एक की हार होगी तभी दूसरे दल की जीत होगी। यह बात सर्वविदित है। यही सब कुछ हुआ हरियाणा विधानसभा चुनाव में। चुनाव में भाजपा व इंडिया गठबंधन के घटक दल कांग्रेस का सीधा मुकाबला था। इसमें भाजपा की जीत हुई और कांग्रेस की हार। अब किसे तो हारना ही था। पर कांग्रेस की इस हार के साथ ही गठबंधन में जो उसका बार्गिन पॉवर था वो कम पड़ता दिख रहा है। उत्तरप्रदेश में अब राहुल गांधी अपनी तेजी से उड़ती पतंग देख अपने सहयोगियों पर ही दबाव बनाने की कोशिश करने लगे थे। बताया जाता है कि असल में उत्तरप्रदेश में 10 सीटों पर विधानसभा उपचुनाव होना है। इसके लिए कांग्रेस 50-50 सीट शेयरिंग फॉर्मूला चाहती है यानी 5-5 सीटों पर दोनों दल लड़ें लेकिन अखिलेश यादव कांग्रेस को 2 से ज्यादा सीटें देने को तैयार ही नहीं हैं। माना जा रहा है कि अखिलेश यादव, राहुल गांधी से हरियाणा और जम्मू कश्मीर का बदला लेने की तैयारी कर रहे हैं।

समाजवादी पार्टी अपनी पार्टी का विस्तार करना चाहती है। इसी कोशिश में अखिलेश यादव ने हरियाणा और जम्मू कश्मीर में राहुल गांधी से सीट की मांग की थी। लेकिन राहुल गांधी ने समाजवादी पार्टी हरियाणा और जम्मू कश्मीर में एक भी सीट नहीं दी। जिसके बाद मजबूरी में अखिलेश यादव ने जम्मू कश्मीर में अपने दम पर उम्मीदवार उतारे। राहुल गांधी से मिला ये धोखा अखिलेश शायद ही भूले होंगे और हरियाणा में इस मार के बाद हो सकता है कि उत्तरप्रदेश के उपचुनाव में कांग्रेस को यही सबक सिखाना चाहते हैं। वहीं भाजपा अखिलेश और राहुल की कथित दोस्ती पर कटाक्ष कर रही है। वैसे कांग्रेस ने भी अखिलेश यादव पर दबाव बनाने की रणनीति भी तैयार कर ली है।

उत्तरप्रदेश में कांग्रेस ने उन सभी 10 सीटों पर प्रभारी और पर्यवेक्षकों की तैनाती कर दी है, जहां-जहां उपचुनाव होने वाले हैं। कांग्रेस ने 10 सीटों के लिए प्रत्याशियों के आवेदन मंगाने भी शुरू कर दिए हैं। इसके जरिए कांग्रेस ने अखिलेश तक ये संदेश पहुंचाने की कोशिश की है कि वो 10 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारने की तैयारी में है। लोकसभा चुनाव में अखिलेश ने कांग्रेस को 17 सीटें दी थीं, जिसमें कांग्रेस 6 पर जीती थी। इसके बाद कहीं न कहीं अखिलेश यादव के कारण ही यूपी में अस्तित्व खोने की कगार पर खड़ी कांग्रेस पार्टी को संजीवनी मिली थी। अब विधानसभा उपचुनाव में भी कांग्रेस, अखिलेश यादव से उसी दरियादिली की उम्मीद जता रही है। साथ ही साथ उन्हें अकेले उपचुनाव लड़ने का तेवर भी दिखने लगी है। अब लगता है उसके यह तेवर नरम पड़ जाएंगे।

इस चुनाव परिणाम के बाद इंडिया गठबंधन का अन्य राज्यों में यह सवाल दूसरे जोर पकड़ रहा है। इसका तुरंत असर महाराष्ट्र और झारखंड विधानसभा चुनाव के अलावा उपचुनाव पर भी दिख सकता है। इस परिणाम ने सहयोगी दलों के इस अपरोक्ष आरोप को सही साबित किया कि अब भी कांग्रेस को भाजपा से मुकाबले के लिए क्षेत्रीय दलों के सहयोग की जरूरत है। साथ ही जब भी कांग्रेस अकेले भाजपा के सामने आती है वह कमजोर साबित हो जाती है। हरियाणा में चुनाव कांग्रेस हार गईस जहां वहां अकेले दम मैदान में थी। जम्मू-कश्मीर में जब नेशनल कॉन्फ्रेंस ने गठबंधन को लीड किया तो गठबंधन को जीत मिली।

गौरतलब है कि 2014 से यह ट्रेंड लगातार जारी है, लेकिन 2023 दिसंबर में इस पर गंभीर बहस हुई थी। कांग्रेस ने अति आत्मविश्वास में मध्य प्रदेश में किसी भी सहयोगी दलों को न सिर्फ सीट देने से इनकार किया बल्कि पार्टी के सीएम उम्मीदवार कमलनाथ ने समाजवादी प्रमुख अखिलेश यादव के लिए उन्हें छोटा नेता बताते हुए टिप्पणी भी की थी। ऐसा तब हुआ था जब सभी विपक्षी दलों ने भाजपा से मुकाबले के लिए इंडिया गठबंधन बनाया गया था। उसी तरह छत्तीसगढ़ में भूपेश बघेल ने अपने ही सहयोगी दलों पर प्रतिकूल टिप्पणी की। नतीजा आया तब दोनों राज्य कांग्रेस हार गई। इसके बाद कांग्रेस ने अचानक डैमेज कंट्रोल करने की पहल भी की थी पर बाद में वाही ढ़ाक के तीन पात।

फिर आम चुनाव में जद्दोजहद के बाद अंततः कांग्रेस गठबंधन करने में सफल रही। अगर आंकड़ों की बात की जाए तो आम चुनाव में भले कांग्रेस ने अपेक्षा से बेहतर प्रदर्शन किया लेकिन उसे उन्हीं राज्यों में अधिक सफलता मिली जहां उसके साथ दूसरे क्षेत्रीय दलों का मजबूत साथ था। मसलन, उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी तो महाराष्ट्र में शरद पवार और उद्धव ठाकरे का साथ। परिणाम के तुरंत बाद जब हरियाणा चुनाव की बारी आई तो कांग्रेस अकेले लड़ी और आप या समाजवादी पार्टी को एक भी सीट नहीं दी। हालांकि, उनके साथ सीटों पर चर्चा हुई थी। इस पर क्षेत्रीय दल के एक सीनियर नेता ने कहा कि अगर कांग्रेस वास्तविकता को नहीं समझेगी तो पार्टी को हाल में मिली यह बढ़त गंवानी पड़ सकती है।

अधिकतर क्षेत्रीय दल अभी मानते हैं कि वे कितना भी एकजुट हो जाएं, अगर कांग्रेस ने अपनी स्थिति नहीं सुधारी तो इस लड़ाई का मतलब नहीं। इसके पीछे उनका तर्क है कि 2019 आम चुनाव में लगभग 225 लोकसभा सीटों पर कांग्रेस-भाजपा का सीधा मुकाबला हुआ जिनमें 200 से अधिक सीटें भाजपा ने जीतीं। 2024 आम चुनाव में भी भाजपा ने अधिकतर सीटें कांग्रेस के साथ सीधे मुकाबले में जीतीं। विधानसभा चुनाव में भी हाल के वर्षों में बहुत कम ऐसे चुनाव हुए हैं जहां कांग्रेस ने भाजपा से सत्ता छीनी हो। ऐसा पिछले दिनों हिमाचल प्रदेश में हुआ था, लेकिन हारी हुई राज्यों की लिस्ट लंबी है। मंगलवार को आए परिणाम के बाद अब क्षेत्रीय दलों का दबाव कांग्रेस पर बढ़ेगा इसमे कोई शक नहीं है। गठबंधन में शामिल कई दल बीते दिनों आरोप लगा चुके हैं कि कांग्रेस इसमें मनमानी कर रही है और उनके स्पेस को स्वीकार नहीं कर रही है।

मंगलवार को इंडिया गठबंधन के अपने सहयोगी दलों से महाराष्ट्र, झारखंड और दिल्ली में अगले दौर के विधानसभा चुनाव से पहले अपनी चुनावी रणनीति पर पुनर्विचार करने के लिए कुछ सलाह मिली। आम आदमी पार्टी संयोजक अरविंद केजरीवाल ने मंगलवार को कहा कि चुनाव परिणामों का सबसे बड़ा सबक यह है कि चुनाव में कभी भी अति आत्मविश्वासी नहीं होना चाहिए। हर चुनाव और हर सीट मुश्किल होती है। हरियाणा में सीट बंटवारे को लेकर मतभेद के कारण आप कांग्रेस के साथ चुनाव पूर्व गठबंधन करने में विफल रही थी। उसका नतीजा यह है। यदि समाजवादी व आप पार्टी भी साथ होती और उसके वोट भी कांग्रेस के साथ जुड़ते तो परिणाम अलग होते।

बता दें कि हरियाणा में सीट बंटवारे को लेकर मतभेद के कारण आम आदमी पार्टी, कांग्रेस के साथ चुनाव से पहले गठबंधन करने में विफल रही थी। हालांकि शिवसेना (यूबीटी) नेता प्रियंका चतुर्वेदी ने कहा कि हरियाणा चुनाव के नतीजों का महाराष्ट्र में कोई असर नहीं पड़ेगा, जहां अगले महीने चुनाव होने की संभावना है।

अमृतवाणी

ममता का सागर

एक सौदागर राजा के महल में दो गायों को लेकर आया झ्र दोनों ही स्वस्थ, सुंदर व दिखने में लगभग एक जैसी थीं। सौदागर ने राजा से कहा, महाराज ये गायें मां-बेटी हैं परन्तु मुझे यह नहीं पता कि मां कौन है व बेटी कौन, क्योंकि दोनों में खास अंतर नहीं है। मैंने अनेक जगह पर लोगों से यह पूछा किंतु कोई भी इन दोनों में मां-बेटी की पहचान नहीं कर पाया बाद में मुझे किसी ने यह कहा कि आपका बुजुर्ग मंत्री बेहद कुशाग्र बुद्धि का है और यहां पर मुझे अवश्य मेरे प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा...इसलिए मैं यहां पर चला आया। कृपया मेरी समस्या का समाधान किया जाए। यह सुनकर सभी दरबारी मंत्री की ओर देखने लगे मंत्री अपने स्थान से उठकर गायों की तरफ गया। उसने दोनों का बारीकी से निरीक्षण किया किंतु वह भी नहीं पहचान पाया कि वास्तव में कौन मां है और कौन बेटी? अब मंत्री बड़ी दुविधा में फंस गया, उसने सौदागर से एक दिन की मोहलत मांगी। घर आने पर वह बेहद परेशान रहा। उसकी पत्नी इस बात को समझ गई। उसने जब मंत्री से परेशानी का कारण पूछा तो उसने सौदागर की बात बता दी। यह सुनकर पत्नी बोली अरे! बस इतनी सी बात है? यह तो मैं भी बता सकती हूं। अगले दिन मंत्री अपनी पत्नी को वहां ले गया जहां गायें बंधी थीं। मंत्री की पत्नी ने दोनों गायों के आगे अच्छा भोजन रखा। कुछ ही देर बाद उसने मां व बेटी में अंतर बता दिया। लोग चकित रह गए। मंत्री की पत्नी बोली, पहली गाय जल्दी झ्र जल्दी खाने के बाद दूसरी गाय के भोजन में मुंह मारने लगी और दूसरी वाली ने पहली वाली के लिए अपना भोजन छोड़ दिया, ऐसा केवल एक मां ही कर सकती है। यानि दूसरी वाली मां है। मां ही बच्चे के लिए भूखी रह सकती है झ्र माँ में ही त्याग, करुणा, वात्सल्य, ममत्व के गुण विद्यमान होते है।

तीखी नजर

स्वच्छता पखवाड़ा और कूड़े के ढेर

पुष्पेंद्र दीक्षित

हमारा भारत उत्सवधर्मी देश है। यहां रोज कोई न कोई उत्सव मनाया जाता है। राष्ट्र से लेकर सामाजिक और सामाजिक से लेकर धार्मिक सभी तरह के उत्सव पूरे जोश और खरोश से बनाए जाते हैं। इसको मनाने में हमारा कोई भी मुकाबला नहीं है। हमारे यहां दिवसों को भी लेकर एक असीम उत्साह नजर आता है। दिवसों के लेकर ऐसा उत्साह है कि हम दिवस ही नहीं मनाते हैं, बल्कि पखवाड़ा या सप्ताह मनाते हैं। जैसे हिंदी सप्ताह या स्वच्छता पखवाड़ा आदि आदि। शासन व प्रशासन स्तर से वृहद स्तर पर कार्यक्रमों का संचालन किया जाता है। उनकी भी क्या गलती, हुकूमत से जो आदेश आ गया उसको पूरा करना उनका पहला धर्म है। हुकूमत से फरमान आया कि गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी स्वच्छता पखवाड़ा धूमधाम से मनाया जाएगा। जिस माध्यम से प्रचार किया जा सकता था, उस माध्यम से स्वच्छता पखवाड़े का प्रचार किया गया। यह भी निर्धारित किया गया कि अमुक तारीख से अमुक तारीख तक स्वच्छता पखवाड़ा मनाया जाएगा। शहर में स्वच्छता पखवाड़ा मनाने की सारी तैयारियां मुकम्मल कर ली गईं। आखिर वह दिन भी आ गया जब पखवाड़े का उद्घाटन हुआ। खासी भीड़ थी। चाय नाश्ते का बेहतरीन इंतजाम था। बस मंत्री जी के भाषण के बाद स्वच्छता अभियान शुरू होने वाला था। मंत्रीजी ने करीब पौन घंटे का भाषण दिया और उसमें एक ही बात बार-बार कह रहे थे कि हमें अपने शहर, गली-मोहल्ले को एक दम स्वच्छ बनाना है। चंकि मंत्री जी राजनीति के पुराने चावल थे, तो विपक्षियों को भी कोसना जरूरी था तो वह परम्परा भी निभायी गई। मंत्री जी ने कहा, पुरानी सरकारों ने सफाई को लेकर कोई भी कार्य नहीं किया। सफाई क्या वे किसी भी कार्य में पूरी तरह से असफल रहे। ये अलग बात है मंत्री जी उसी पुरानी सरकार में नगर विकास व सफाई मंत्री थे। भाषण की लंबी गप्प के बाद मंत्रीजी हाथों में सफेद दस्ताने पहनकर झाड़ू पकड़ के सफाई करने लगे। चूंकि रोड पहले से ही साफ थी तो उनके चमचों ने पहले सड़क पर कूड़ा फैलाया। उसके बाद मंत्री जी ने उस कूड़े को अपने चमचों के साथ झाड़ू लगाकर किनारे लगाया। फोटो खींची गई साफ चमकीली रोड की।

इस रस्मी सफाई सम्मेलन के बाद नाश्ता शुरू हुआ। पार्टी के समर्थक और मंत्री के चमचे नाश्ते पर मरभुक्कों की तरह टूट पड़े। 15 मिनट में ही सारा नाश्ता साफ था। नाश्ता कर सब चले गए। पीछे बची रह गई कागज की प्लेटें, चाय के खाली गिलास। यही कार्यक्रम शहर के अलग-अलग स्थानों पर पूरे पखवाड़े तक चलता रहा। क्योंकि मंत्रीजी का रोज-रोज आना संभव नहीं था, इसलिए इस दौरान सत्ताधारी पार्टी के मंडल-कमंडल अध्यक्ष अपने पौढ़ युवा नेताओं के साथ स्वच्छता पखवाड़ा मनाते रहे। पखवाड़ा समाप्त होने के बाद शहर के बाहर के कूड़े का एक नया ढेर दिखाई देने लगा, जो पखवाड़े के दौरान की गई पार्टी की जूठी पत्तलों का था। जूठी पत्तलों के कूड़े का ढेर स्वच्छता अभियान को मुंह चिढ़ा रहा था।

सार संक्षेप

भारत के खिलाफ पहले टेस्ट नहीं खेलेंगे चोटिल केन विलियमसन

नई दिल्ली : न्यूजीलैंड के चोटिल बल्लेबाज केन विलियमसन भारत के खिलाफ बेंगलुरु में होने वाले पहले टेस्ट में नहीं खेलेंगे। भारत और न्यूजीलैंड के बीच तीन मैचों की टेस्ट सीरीज की शुरुआत 16 अक्टूबर से बेंगलुरु में होगी। श्रीलंका के खिलाफ 0-2 से मिली हार के बाद टिम साउदी ने कप्तानी हटने के बाद टीम की कमान टॉम लेथम हाथों है और न्यूजीलैंड ने चोटिल विलियमसन की जगह टीम में मार्क चैपमैन को शामिल किया गया है। श्रीलंका दौरे पर विलियमसन की जांघ में चोट लगी थी जो अब तक पूरी तरह ठीक नहीं हो पाई है। न्यूजीलैंड के चयनकर्ता सैम वेल्स कहा कि हमें जो सलाह दी गई है उसके हिसाब से केन को आराम करने की जरुरत है। चोट के साथ उन्हें टीम रखना जोखिम भरा हो सकता है। हमें पूरा भरोसा है कि केन चोट से जल्दी ही ठीक हो जाएंगे और श्रृंखला में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। लेकिन हमें इस बात का दुख है कि वह पहले टेस्ट में हमारे साथ नहीं होंगे।

इंटरनेशनल मास्टर्स लीग 2024 में भारत के कप्तान होंगे सचिन तेंदुलकर

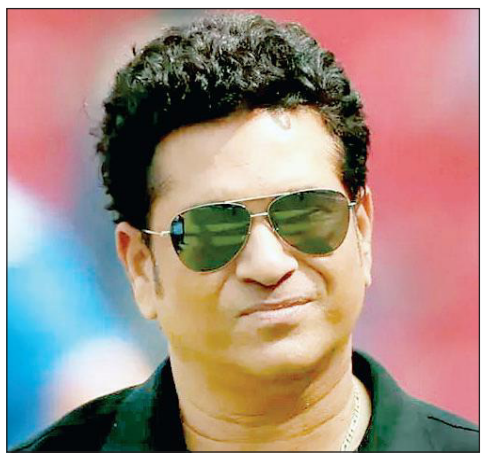

नई दिल्ली : सचिन तेंदुलकर 17 नवंबर से आठ दिसंबर तक चलने वाली इंटरनेशनल मास्टर्स लीग 2024 में भारतीय क्रिकेट टीम की कप्तानी करेंगे। पहली बार आयोजित हो रहे इस क्रिकेट लीग में भारत, वेस्टइंडीज, श्रीलंका, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड और दक्षिण अफ्रीका सहित छह टीमें हिस्सा ले रही हैं। टी-20 प्रारुप में होने वाली इस लीग के मुकाबले नवी मुंबई, लखनऊ और रायपुर में खेले जाएंगे। इस लीग में क्रिकेट के दिग्गज खिलाड़ी ब्रायन लारा, कुमार संगाकारा, शेन वॉटसन, इयोन मोर्गन और अपने समय के सर्वश्रेष्ठ क्षेत्ररक्षक जोंटी रोड्स अपनी-अपनी टीमों के कप्तानी करते नजर आएंगे। सचिन तेंदुलकर और सुनील गावस्कर के प्रयासों के बाद इंटरनेशनल मास्टर्स लीग को शुरू करने का विचार किया गया। इस टूर्नामेंट में 18 मुकाबले खेले जाएंगे जिसमें 90 से अधिक क्रिकेट से संन्यास ले चुके खिलाड़ी शामिल होंगे।

श्रीलंका क्रिकेट चयन समिति के अध्यक्ष थरंगा के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी

कोलंबो : श्रीलंका क्रिकेट चयन समिति के अध्यक्ष उपुल थरंगा के खिलाफ आठ अक्टूबर को अदालत में पेश नहीं होने के कारण गिरफ्तारी वारंट जारी किया गया है। मीडिया रिपोर्ट्स में यह जानकारी दी गई है। रिपोर्ट के अनुसार मटाले उच्च न्यायालय द्वारा जारी वारंट मैच फिक्सिंग मामले से जुड़ा है। जिसमें कैंडी में आयोजित लीजेंड्स लीग टूर्नामेंट शामिल है। रिपोर्ट में बताया गया कि थरंगा वर्तमान में अमेरिका में हैं जहां वह एक फ्रेंचाइजी क्रिकेट टूर्नामेंट में भाग ले रहे हैं।

पावर फाइनेंस कॉरपोरेशन बना भारत-जर्मनी हॉकी सीरीज का शीर्षक प्रायोजक

नई दिल्ली : जर्मनी के खिलाफ 23 अक्टूबर से शुरु होने वाली दो मैचों की द्विपक्षीय सीरीज के लिए हॉकी इंडिया ने पावर फाइनेंस कॉरपोरेशन (पीएफसी) को शीर्षक प्रायोजक घोषित किया है। लगभग एक दशक के अंतराल के बाद नई दिल्ली के मेजर ध्यानचंद नेशनल स्टेडियम में भारत और जर्मनी के बीच 23 और 24 अक्टूबर को मुकाबले खेले जाएंगे। इस स्टेडियम पर आखिरी बार अंतरराष्ट्रीय मैच जनवरी 2014 को हीरो हॉकी वर्ल्ड लीग फाइनल के तौर पर खेला गया था। पीएफसी भारत बनाम जर्मनी द्विपक्षीय हॉकी सीरीज 2024 में दर्शकों के लिए प्रवेश निःशुल्क होगा। प्रशंसकों को अपने टिकट सुरक्षित करने की अनुमति देने के लिए एक मुफ्त डिजिटल टिकटिंग प्रणाली शुरू की जाएगी। वर्चुअल टिकट प्राप्त करने के लिए प्रशंसकों को बस आधिकारिक टिकटिंग लिंक पर जाना होगा और अपना विवरण दर्ज करना होगा। हॉकी इंडिया के अध्यक्ष डॉ. दिलीप टिर्की ने कहा कि हम बहुप्रतीक्षित पीएफसी भारत बनाम जर्मनी द्विपक्षीय हॉकी सीरीज 2024 के लिए टाइटल प्रायोजक के रूप में पावर फाइनेंस कॉरपोरेशन (पीएफसी) का स्वागत करते हुए प्रसन्न हैं। एक दशक के बाद नई दिल्ली में यह सीरीज खेली जा रही है। यह न केवल शहर के लिए बल्कि हॉकी इंडिया के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। भारत और जर्मनी के बीच 2013 के बाद से खेले गए 19 मैचों में से भारत ने आठ जीते हैं, जबकि मौजूदा विश्व चैंपियंस और पेरिस 2024 के रजत पदक विजेता के पक्ष में सात मुकाबले गए हैं। विश्व हॉकी में दो दिग्गज आखिरी बार पेरिस 2024 ओलंपिक सेमीफाइनल में एक-दूसरे से भिड़े थे, जहां जर्मनी 3-2 से विजयी हुआ था।

दक्षिण अफ्रीका ने स्कॉटलैंड को 80 रनों से हराया

महिला टी-20 विश्वकप

दुबई, वार्ता : मैरीजान कप्प (43), तेजमिन ब्रिट्स (43) और लॉरा वुलफार्ट (40) रनों की शानदार पारियों के बाद गेंदबाजों के बेहतरीन प्रदर्शन के दम पर दक्षिण अफ्रीका ने हुए बुधवार को महिला टी-20 विश्वकप के 11वें मुकाबले में स्कॉटलैंड को 80 रनों से हरा दिया।

दक्षिण अफ्रीका ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया। दोनों सलामी बल्लेबाजों पहले विकेट के लिए 64 रन जोड़कर टीम को अच्छी शुरुआत दी। कप्तान लॉरा वुलफार्ट ने 27 गेंदों में पांच चौकों एवं एक छक्के की मदद से (40) रन बनाए जबकि तेजमिन ब्रिट्स ने 35 गेंदों का सामना कर पांच चौकों एवं एक छक्के की मदद से (43) रनों का योगदान दिया। वुलफार्ट को फ्रेजर ने बेल के हाथों कैच आउट कराया जबकि ब्रिट्स को बेल ने ब्राइस के हाथों कैच आउट कराया। इसके बाद मैरीजान कप्प ने 24 गेंदों में धुंआधार बल्लेबाजी करते हुए (43) रन बना दिए। काप ने इस दौरान छह चौके लगाए। काप को ब्राइस ने कार्टर के हाथों कैच आउट कराया। सुने लूस ने मैच के अंतिम क्षणों में 13 गेंदों का सामना करते हुए दो चौकों की मदद से (नाबाद 18) रन बनाए। उनके साथ अनरी डर्कसन एक रन बनाकर नाबाद रही। स्कॉटलैंड की ओर से स्लेटर, ब्राइस, बेल, फ्रेजर एवं कार्टर ने एक-एक विकेट लिया। इसके जवाब में बल्लेबाजी करने मैदान पर उतरी स्कॉटलैंड टीम शुरु से ही दबाव में रही। अभी टीम का स्कोर 14 रन पहुंचा था कि खाका ने सलामी बल्लेबाज सस्किया हॉली (06) को ब्रिटस के हाथों कैच आउट कराकर स्कॉटलैंड को पहला झटका दे दिया। दो रन बाद ही ट्राइऑन ने सेरा ब्राइस (05) को अपनी ही गेंद पर खुद ने कैच लेकर वापस पैवेलियन भेज दिया। स्कॉटलैंड की ओर से केवल दो बल्लेबाज लिस्टर (12), फ्रेजर (14) दहाई संख्या में पहुंच सके। दक्षिण अफ्रीकी गेंदबाजों ने शानदार गेंदबाजी का मुजाहिरा करते हुए स्कॉटलैंड की पूरी टीम 17.5 ओवर में 86 पर समेट कर 80 रनों से मुकाबला जीत लिया।

ईशान किशन के नेतृत्व में झारखंड की रणजी ट्रॉफी टीम घोषित

रांची, वार्ता : झारखंड राज्य क्रिकेट संघ (जेएससीए) ने 2024-25 के लिए रणजी टीम की घोषणा कर दी। टीम की कमान अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटर ईशान किशन को सौंपी गई है। इससे पहले बुची बाबू टूर्नामेंट में भी ईशान की कप्तानी में टीम खेल चुकी है । उल्लेखनीय है कि रणजी ट्रॉफी के 2024-25 सत्र में झारखंड एलिट ग्रुप डी में असम, रेलवे, चंडीगढ़, छत्तीसगढ़, सौराष्ट्र, दिल्ली और तमिलनाडु के साथ है। प्रतियोगिता की शुरुआत 11 अक्टूबर से हो रही है और झारखंड का पहला मुकाबला असम के साथ है। ईशान किशन (कप्तान), विराट,कुशाग्र, सिद्दीकी, आर्यमन, शरणदीप, कुमार, अनुकूल रॉय, उत्कर्ष, सुप्रियो, सौरभ, विकास, विवेकानन्द और रौनक कुमार।

भारत ने जीती टी-20 सीरीज

दूसरे टी-20 में बांग्लादेश को 86 रन से हराया

नीतीश रेड्डी ने 74 रन बनाए, दो विकेट भी लिए, भारत को सीरीज में अजेय बढ़त

नई दिल्ली, वार्ता : भारत ने नई दिल्ली में बांग्लादेश को 86 रन से दूसरा टी-20 हरा दिया। अरुण जेटली स्टेडियम में बांग्लादेश ने टॉस जीतकर गेंदबाजी चुनी। भारत ने 9 विकेट खोकर 221 रन बनाए। जवाब में बांग्लादेश 20 ओवर में 9 विकेट खोकर 135 रन ही बना सका। परवेज हसन इमोन ने 16, मेहदी हसन मिराज ने 16, लिटन दास ने 14 और नजमुल हुसैन शांतो ने 11 रन बनाए। बाकी बैटर्स 10 रन से ज्यादा का आंकड़ा भी नहीं छू सके। भारत से नीतीश रेड्डी और वरुण चक्रवर्ती ने 2-2 विकेट लिए। जबकि मयंक यादव, रियान पराग, वॉशिंगटन सुंदर, अर्शदीप सिंह और अभिषेक शर्मा को 1-1 विकेट मिला। भारत से नीतीश रेड्डी ने 34 गेंद पर 74 रन बनाए, उन्होंने फिर गेंदबाजी से 2 विकेट भी लिए। रेड्डी को ही प्लेयर ऑफ द मैच का अवॉर्ड मिला। वरुण चक्रवर्ती ने भी 2 विकेट लिए। बांग्लादेश से महमूदुल्लाह ने सबसे ज्यादा 41 रन बनाए। दूसरा मुकाबला जीतकर भारत ने 3 टी-20 की सीरीज में 3-0 की अजेय बढ़त बना ली। तीसरा मुकाबला 12 अक्टूबर को हैदराबाद में खेला जाएगा।

जो रुट के नाबाद शतक से इंग्लैंड ने मैच पर बनाई पकड़

● मुल्तान, वार्ता

इंग्लैंड ने तीन विकेट पर बनाए 492 रन, अभी भी 64 रन पीछे

जो रुट के (नाबाद 176) रन, हैरी ब्रूक के (नाबाद 141) की शतकीय तथा जैक क्रॉली (78) तथा बेन डकेट (84) के अर्द्धशतकों की बदौलत इंग्लैंड ने बुधवार को पाकिस्तान के खिलाफ पहले टेस्ट के तीसरे दिन खेल समाप्त होने तक तीन विकेट पर 492 रन बनाकर मैच पर मजबूत पकड़ बना ली है।

यहां इंग्लैंड ने कल के एक विकेट पर 96 के स्कोर से आगे खेलना शुरु किया। 25वें ओवर में शाहीन शाह अफरीदी ने शतक की ओर बढ़ रहे जैक क्रॉली को आमेर जमाल के हाथों कैच आउट कराकर पवेलियन भेज दिया। इसके बाद बल्लेबाजी करने आए बेन डकेट ने जो रूट के साथ संभलकर खेलते हुए तेजी के साथ रन बटोरे। भोजनकाल तक दोनों बल्लेबाजों के बीच तीसरे विकेट के लिये 119 रनों की साझेदारी करते हुए इंग्लैंड ने 45 ओवरों में दो विकेट पर 226 रन बना लिए थे। भोजनकाल के बाद शुरु हुए खेल में जमाल ने डकेट को (84) पर पगबाधा आउट कर इंग्लैंड को तीसरा झटका दिया। इसके बाद रुट और ब्रूक ने संभलकर खेलते हुए खेल को आगे बढ़ाया और पाकिस्तानी गेंदबाजों को खेल समाप्ति तक कोई मौका नहीं दिया। दोनों खिलाड़ियों ने अपने-अपने शतक पूरे किए। खेल समाप्ति के समय रुट (नाबाद 176) और ब्रूक (नाबाद 141) पर खेल रहे थे। हालांकि इंग्लैंड अभी पाकिस्तान के पहली पारी में बनाए गए 556 के स्कोर से 64 से पीछे है। पाकिस्तान की ओर से नसीम शाह, शाहीन शाह और आमेर जमाल ने एक-एक विकेट लिया।

प्लेऑफ में जगह बनाने के इरादे से मैदान पर उतरेगी इंडिया कैपिटल्स

● श्रीनगर,

लीजेंड्स लीग क्रिकेट (एलएलसी) के तीसरे संस्करण में इंडिया कैपिटल्स गुरुवार को मणिपाल टाइगर्स के खिलाफ मुकाबले में जीत दर्ज कर प्लेऑफ में अपनी जगह पक्की करने और दूसरे स्थान पर पहुंचने की कोशिश करेगी। अपने पिछले मैच में आखिरी गेंद पर रोमांचक जीत हासिल करने के बाद, कैपिटल्स का लक्ष्य के ग्रुप स्टेज को शानदार तरीके से खत्म करना है। छह अंकों के साथ और गुजरात ग्रेट्स पर ताजा जीत के बाद, कैपिटल्स वर्तमान में अंकतालिका में तीसरे स्थान पर है। वहीं, मणिपाल टाइगर्स सात अंकों के साथ दूसरे स्थान पर है। इस उच्च-दांव वाले मुकाबले में जीत कैपिटल्स को न केवल प्लेऑफ में जगह दिलाएगी बल्कि शीर्ष-दो स्थान को सुरक्षित करने के लिए उनकी दावेदारी को भी मजबूत करेगी। इंडिया कैपिटल्स इस मैच में गुजरात ग्रेट्स पर हौसला बढ़ाने वाली जीत के साथ उतरेगी, जहां कप्तान इयान बेल ने 49 गेंदों पर नाबाद 41 रनों की सूझ-बूझ भरी पारी खेलकर टीम को 4 विकेट से जीत दिलाई थी। टीम की गेंदबाजी, जिसमें इकबाल अब्दुल्ला और धवल कुलकर्णी ने प्रमुख भूमिका निभाई है, पूरे सीजन में उनकी ताकत रही है। खासकर इकबाल अब्दुल्ला ने नियमित रूप से महत्वपूर्ण मौकों पर विकेट लिए हैं और बेहतरीन फॉर्म में हैं। बैटिंग के मोर्चे पर, कैपिटल्स ने चमकदार प्रदर्शन किया है, जिसमें भरत चिपली, बेन डंक और कॉलिन डी ग्रैंडहोम ने अहम मौकों पर योगदान दिया है। हालांकि, मणिपाल टाइगर्स के मजबूत गेंदबाजी आक्रमण का सामना करने के लिए शीर्ष क्रम को दबाव में प्रदर्शन करना होगा। इंडिया कैपिटल्स के कप्तान इयान बेल ने कहा कि हमें पता है कि यह हमारे लिए एक महत्वपूर्ण मैच है। पिछले मैच में हमने जबरदस्त धैर्य दिखाया था, और अब हमारे पास शीर्ष-दो में जगह बनाने का मौका है, जिससे हमें प्लेऑफ में एक मजबूत बढ़त मिलेगी। टीम पूरी तरह से एकजुट है और हम जानते हैं कि इस मुकाबले में क्या दांव पर लगा है। हम अपना सर्वश्रेष्ठ देंगे और लीग स्टेज को सकारात्मक तरीके से समाप्त करेंगे। दूसरी ओर, मणिपाल टाइगर्स के कप्तान हरभजन सिहं हैं, इस सीजन में लगातार प्रदर्शन कर रहे हैं और वर्तमान में अंकतालिका में दूसरे स्थान पर हैं। गुजरात ग्रेट्स के खिलाफ अपने पिछले मैच में ऑलराउंडर थिसारा परेरा ने बल्ले और गेंद दोनों से शानदार प्रदर्शन किया था।

भारत अंडर-19 ने जीती टेस्ट सीरीज

ऑस्ट्रेलिया को पारी और 120 रन से हराकर दो 2-0 से जीती सीरीज

चेन्नई, वार्ता : अनमोलजीत सिंह (नौ विकेट) और मोहम्मद एनान (सात विकेट) की घातक गेंदबाजी की बदौलत भारत की अंडर-19 टीम ने चार दिवसीय दूसरे टेस्ट मैच में बुधवार को ऑस्ट्रेलिया को पहली पारी में 277 पर समेटने के बाद उसे दूसरी पारी में 95 रन पर ढेर कर मुकाबला पारी और 120 से जीत लिया है। इसी के भारत ने दो टेस्ट मैचों की श्रृंखला 2-0 से जीत ली है।

मैंच में शानदार गेंदबाजी नौ विकेट लेने वाले अनमोलजीत सिंह को प्लेयर ऑफ द मैच से नवाजा गया। भारत की घातक गेंदबाजी का आलम यह था कि बुधवार को दिन ऑस्ट्रेलिया के रिकॉर्ड 17 विकेट गिरे। ऑस्ट्रेलिया ने मंगलवार के तीन विकेट पर 142 रन से आगे खेलना शुरु किया। ऑस्ट्रेलिया का चौथा विकेट पर 208 के स्कोर पर ली यंग (66) के रूप में गिरा। यंग को अनमोलजीत ने बोल्ड आउट किया। इसके बाद क्रिश्चियन होवे (4) पर रनआउट हो गये। ऐडन ओ'कॉनर (18) को समर्थ नागराज ने अपना शिकार बनाया। इस दौरान कप्तान ऑलिवर पिक ने अपना शतक पूरा किया । ऑलिवर को अनमोलजीत ने बोल्ड आउट किया। ऑलिवर ने 199 गेंदो में 16 चौके और एक छक्का लगाते हुए (117) रन बनाए। ओली पैटरसन (12), एल रानाल्डो (2), विश्व रामकुमार (4) रन बनाकर आउट हुये। ऑस्ट्रेलिया की पूरी टीम पहली पारी 80.2 ओवर में 277 रन पर सिमट गई। भारत की ओर से अनमोलजीत सिंह और मोहम्मद एनान ने चार-चार विकेट लिए। समर्थ नागराज ने एक बल्लेबाज को आउट किया। पहली पारी में 215 रनों पिछड़ने के बाद भारत ने ऑस्ट्रेलिया को फ्लोऑन खेलने के लिए मजबूर किया।

आर्कटिक ओपन में हारी पीवी सिंधु

सिधु को मिशेल ली से 16-21, 10-21 से हराया, मालविका प्री क्वार्टर फाइनल में पहुंची

● वांता (फिनलैंड), वार्ता

मालविका ने चीनी ताइपे की सुंग शुओ युन को 21-19, 24-22 से हराया

भारतीय बैडमिंटन स्टार पीवी सिंधु आर्कटिक ओपन 2024 के शुरुआती दौर में कनाडा की मिशेल ली से हाकर बाहर हो गईं हैं। वहीं उनकी हमवतन मालविका बंसोड़ ने शानदार खेल का मुजाहिरा करते हुए प्री-क्वार्टर फाइनल में जगह बना ली हैं।

बीडब्ल्यूएफ सुपर 500 बैडमिंटन टूर्नामेंट के महिला एकल के बुधवार को 37 मिनट तक चले मुकाबले में सिंधु को कनाडा की मिशेल ली से 16-21, 10-21 से हार का सामना करना पड़ा। पेरिस 2024 ओलंपिक के बाद पीवी सिंधु का यह पहला टूर्नामेंट था। सिंधु ने पहले गेम में शुरुआती बढ़त हासिल की। लेकिन इसके बाद वह लय बनाने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ा। वहीं, मिशेल ने शानदार शॉट्स के साथ अंक अर्जित किए और पहला गेम 21-16 से जीत लिया। इसके बाद दूसरे गेम में मिशेल ने लगातार अंक अर्जित करते हुए 21-10 से आसान जीत दर्ज की। वहीं महिला एकल के एक अन्य मैच में मालविका बंसोड़ ने चीनी ताइपे की सुंग शुओ युन को 21-19, 24-22 हराकर राउंड ऑफ 16 में जगह बनाई। प्री-क्वार्टर में मालविका का सामना थाईलैंड की रत्चानोक इंतानोन से होगा। इसके अलावा आकर्षी कश्यप ने 45 मिनट तक चले मुकाबले में जर्मनी की यवोन ली को सीधे गेम में 21-19, 21-14 से मात देकर दूसरे राउंड में जगह बनाई। पुरुष एकल के क्वालीफायर मुकाबले में किरण जॉर्ज फ्रांस के लुकास क्लेयरबाउट को 21-16, 13-21, 21-19 से हराकर पुरुष एकल के मुख्य ड्रॉ में प्रवेश किया।

डीपीएल में वाटिका की धमाकेदार जीत

नई दिल्ली : डीएसए प्रीमियर लीग में बुधवार को पहली लीग की विजेता वाटिका एफसी ने पिछड़ने के बाद फ्रेंड्स यूनाइटेड को छकाते हुए 2-1 की रोमांचक जीत दर्ज की। यहां अम्बेडकर स्टेडियम में खेले गये इस मैच में विजेता वाटिका एफसी के लिए कुशाग्र कक्कड़ और अभिषेक बाक्सला ने दमदार गोल जमाए। वहीं दिन के पहले मुकाबले में सीआईएसएफ ने सुदेवा एफसी को गोल शून्य बराबरी पर रोक कर अंक बांटे। वाटिका और फ्रेंड्स यूनाइटेड के बीच खेला गया दूसरा मैच पहले हाफ तक ऊंचाइयों को नहीं छू पाया। हालांकि फ्रेंड्स यूनाइटेड ने 12 वें मिनट में कप्तान अजय सिह के गोल से बढ़त बना ली लेकिन इसके बाद वह सब हुआ जिसकी कल्पना नहीं थी। लगातार दो मैच हारने वाली वाटिका ने तेवर बदले और अनुभवी खिलाड़ियों से सजी फ्रेंड्स यूनाइटेड को दौड़ा दौड़ा कर थकाने की रणनीति अपनाई, जोकि कारगर रही। एक ओर अजय, महिप अधिकारी, अंकित और अक्षय हुरिया बार बार मौके गंवाते रहे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सैयद ज़की हैदर के लिए इरानीयन आर्ट प्रिंटर्स 1534 कासिमजान स्ट्रीट दरियागंज नई दिल्ली 11006 से मुद्रित कराकर, 2684 गली काले खां कूचा चलान दरियागंज नई दिल्ली 02 से प्रकाशित किया।
संपादक : सैयद ज़की हैदर- हैड ऑफिस :- एफ19/4 सेकेंड फ्लोर नफीश रोड जामिया नगर दिल्ली- 110025., सम्पर्क सूत्र :- 9911371802, 9810383593
जितेन्द्र कुमार बिस्वाल ब्यूरो चीफ उड़ीसा/ गोविंद कनोडिया/ पटना/ सैय्यद यूसुफ अली नक़वी-पॉलिटिकल एडिटर। ई-मेलः- dailyloktantra@gmail.com

किसी भी प्रकार के विवाद हेतु निपटारे के लिए केवल दिल्ली न्यायालय ही मान्य होगी।
नोट- किसी भी समाचार/आलेख पर दावा प्रति दावा/आपत्ति समाचार प्रकाशन के 15 दिनों के अन्तराल तक ही मान्य होगा। समाचार पत्र में प्रकाशित आलेख से संपादक/प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

क्षेत्रीय कार्यालय अनवार मंजिल नया टोला गंज नंबर 01 बेतिया/ बिहार/ पिन नंबर 84 5438/>> संवाददाता, सना खान/(डॉ. अमानुल हक) स्थानीय संपादक/बिहार)